जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

बीकानेर

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

फोनः- 2200660 फैक्स : 0151-2527371 वर्षः 46 संख्याः 260 प्रभात बीकानेर, रविवार 13 अप्रैल, 2025 डाक प.स.बीकानेर/045/2020-22 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रू.

पहली बार सुप्रीम कोर्ट ने राष्ट्रपति की सीमा निर्धारित की

राष्ट्रपति को तीन महीने में निर्णय लेना होगा कि राज्य सरकारों द्वारा भेजे गये विधेयक को स्वीकार करें या अस्वीकार

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अप्रेल। सर्वोच्च न्यायालय ने एक अभूतपूर्व कदम उठाते हुए, पहली बार यह निर्धारित कर दिया है कि राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति के पास विचारार्थ भेजे गये विधेयकों पर, राष्ट्रपति को तीन महीने में निर्णय ले लेना चाहिये। इस अवधि की गणना विधेयक की प्राप्ति की तिथि से की जायेगी।

शीर्ष अदालत ने संविधान में प्रतिपादित देश के संघीय ढ़ाँचे के सिद्धांत को परिभाषित किये जाने को रेखांकित किया तथा कहा, "हम गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित समय सीमा पर अमल करना उचित समझते हैं। --- तथा यह तय करते हैं कि राज्यपाल द्वारा राष्ट्रपति के विचारार्थ आरक्षित रखे गये विधेयकों पर तीन महीने की अवधि में निर्णय ले लें। इस अवधि की गणना, इन विधेयकों की प्राप्ति की तिथि से की जायेगी।"

अदालत ने कहा, "इस अवधि से अधिक समय लगने की स्थिति में, समुचित कारण संबंधित राज्य को बताने होंगे। राज्यों के लिये भी यह जरूरी होगा कि वे उन प्रश्नों के उत्तर देकर, इस कार्य में पूरा सहयोग करें, जो प्रश्न केन्द्र सरकार द्वारा उठाये गये हैं तथा राज्य, केन्द्र सरकार के सुझावों पर शीघ्र ही विचार करें।"

- अगर, तीन माह में यह निर्णय नहीं होता है तो राज्य सरकार को यह अधिकार होगा कि इस मामले पर न्यायालय का दरवाजा खटखटाये और न्यायालय से समाधान मांगे।
- ये तीन महीने उस दिन से शुरु होंगे, जिस दिन राष्ट्रपति को, राज्य सरकार से विधेयक अधिकृत रुप से प्राप्त होगा।
- सुप्रीम कोर्ट ने इस निर्णय में, राज्यपाल को भी प्रतिबंधित किया है कि जब विधानसभा से पारित विधेयक उनके पास आता है, उस दिन से तीन महीने में राज्यपाल को विधेयक के बारे में निर्णय लेना होगा।
- अगर, दूसरी बार विधानसभा विधेयक को पारित करके राज्यपाल को भेजे तो राज्यपाल के पास यह विकल्प नहीं होगा कि वे विधेयक को राष्ट्रपति को भेजने में विलम्ब करें।
- सुप्रीम कोर्ट ने रजिस्ट्रार को हिदायत दी कि उनके इस निर्णय की प्रतिलिपि सभी हाई कोर्ट को व राज्यपालों के प्रमुख सचिवों को भेजें।

अदालत ने साफ-साफ शब्दों में कहा, "जहाँ राज्यपाल किसी विधेयक को, राष्ट्रपति के विचारार्थ, अपने पास आरक्षित रूप से रख लेते हैं तथा राष्ट्रपति इसके बदले में अपनी सम्मति एवं सहमति रोक लेते हैं, तो राज्य के राज्यपाल इस प्रकार की कार्यवाही को अदालत की जानकारी में लाने के लिये स्वतंत्र होंगे।

अदालत ने कहा, "जो विधेयक राज्यपाल के पास जरूरत से ज्यादा समय तक लम्बित हों, तथा राज्यपाल ने राष्ट्रपति के विचारार्थ विधेयकों को आरक्षित रखने में नेकनीयती के स्पष्ट अभाव से काम लिया हो, जैसा कि इस अदालत के इस निर्णय की घोषणा की तुरन्त बाद पंजाब में हुआ, तो इन विधेयकों पर राज्यपाल की सम्मति उसी तिथि को आ जानी चाहिये, जिस दिन वे विधेयक पुनर्विचार के बाद, उनके सामने प्रस्तुत किये गये हों।" अदालत ने राज्यपाल के पद के दुरुपयोग पर जबरदस्त नाराज़गी व्यक्त की।

बैंच ने अपने निर्णय में कहा, "संविधान के अनुच्छेद 200 के तहत, राज्यपाल द्वारा अपना कार्य सम्पन्न करने के लिये कोई समय सीमा निर्धारित नहीं की गई है। कोई निर्धारित समय सीमा न होने के बावजूद, अनुच्छेद 200 का ऐसा अर्थ नहीं निकाला जा सकता, जो

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अदालती आदेश के बाद भी बकाया का भुगतान क्यों नहीं हुआ?

जयपुर, 12 अप्रैल। राजस्थान हाईकोर्ट ने अदालती आदेश की पालना नहीं करने पर नाराजगी जताते हुए शिक्षा सचिव को 21 अप्रैल को व्यक्तिगत रूप से पेश होकर जवाब देने को कहा है। अदालत ने शिक्षा सचिव से पूछा है कि अदालती आदेश के बावजूद याचिकाकर्ता का बकाया भुगतान क्यों नहीं किया गया।

अदालत ने स्पष्ट किया है कि यदि अदालती आदेश की पालना हो जाती है तो शिक्षा सचिव को हाजिर होने की जरूरत नहीं है। जस्टिस नरेन्द्र सिंह की एकलपीठ ने यह आदेश कृष्ण अवतार गुप्ता की ओर से दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए दिए।

- हाई कोर्ट ने शिक्षा सचिव को 21 अप्रेल को व्यक्तिगत रूप से पेश होने के निर्देश दिये।

याचिका में अधिवक्ता त्रिभुवन नारायण सिंह और अधिवक्ता जितेन्द्र कुमार मीणा ने अदालत को बताया कि याचिकाकर्ता शिक्षा विभाग में कार्यरत था। विभाग की ओर से पूर्व में उसका तबादला किया गया था, जिसे अदालत ने स्टे कर दिया था। वहीं इस अवधि का विभाग ने उसका अक्टूबर, 2019 से मई, 2021 का वेतन परिलाभ भुगतान नहीं किया था। इस पर उसने राजस्थान सिविल सेवा अपीलीय अधिकरण में अपील दायर कर चुनौती दी थी। अधिकरण में विभाग की ओर से कहा गया था कि अपीलार्थी को इस अवधि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

वोट बैंक पर आधारित राजनीति अब भारी पड़ रही है ममता बनर्जी को

वक्फ संशोधन विधेयक के विरोध में बंगाल के सीमांत जिलों में, विशेषकर मुर्शिदाबाद व मालदा में भारी दंगे, तीन व्यक्ति मारे गये

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अप्रेल। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी अब अपने पिछले ग्यारह वर्षों की राजनीति का कड़वा फल भुगत रही हैं यह राजनीति, जिसमें उन्होंने राज्य के कुछ समुदायों को तुष्ट करने और उनके वोट पाने के लिए लगातार रियायतें दीं।

अगर यह राजनीतिक रणनीति पहले काम आई थी, तो अब यह ज़हरीले फल भी दे रही है। आज हुई हिंसा में तीन लोगों की मौत हो चुकी है और जिले में दंगाई भीड़ उग्र रूप से तांडव कर रही है।

आशंका जताई जा रही है कि बाँग्लादेश की सीमा से लगे इन जिलों में बाँग्लादेश के जेहादी संगठनों की सक्रिय भागीदारी है, जो माहौल बिगाड़ने की कोशिश कर रहे हैं। इन घटनाओं ने मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, जो गृह मंत्री भी हैं, तथा सम्पूर्ण पुलिस विभाग की विफलता को उजागर कर दिया है। कलकत्ता हाई कोर्ट के एक जज ने राज्य में बिगड़ते हालात को देखते हुए केन्द्रीय बलों की तत्काल तैनाती की अपील की है, जिसके लिए राज्य के

- कोलकाता हाई कोर्ट ने तुरन्त केन्द्रीय रक्षा बल तैनात करने की बात कही, दंगाइयों पर नियंत्रण करने के लिये।
- पुलिस वाहन जलाये गये तथा पुलिसकर्मियों पर खुलकर आक्रमण हुए।
- लगातार अल्पसंख्यक वोट को पुचकार कर रखने की नीति से दंगाई बेफिक्र हुए। भारत व बाँग्लादेश के बीच सीमा पर तारबंदी के कई प्रयास हुए, पर, तृणमूल कांग्रेस के बाहुबलियों ने ऐसे सभी प्रयास विफल कर दिये और अब सीमा पार से बाँग्लादेश के जिहादी तत्व भी दंगा फैलाने में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।
- वक्फ संशोधन विधेयक का देश में कई स्थानों पर विरोध हो रहा है, पर, इतनी हिंसा, तोड़-फोड़, आगजनी व पुलिस पर आक्रमण की घटनाएं और कहीं नहीं हुईं।
- पर, अभी भी बंगाल की सरकार कोई न कोई बहाना बनाकर सख्त कार्यवाही से बच रही है।
- पर, अब कहीं पुलिस में ही विद्रोह शुरु न हो जाए?

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

ई.डी. ने सोनिया गांधी व राहुल गांधी को नोटिस दिया

ई.डी. के नोटिस का मन्तव्य है, नैशनल हैरल्ड को, जिसकी कीमत 661 करोड़ रूपए आंकी गई, को अधिगृहित करना

-श्रीनन्द झा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अप्रेल। एन्फोर्समेन्ट डायरैक्टोरेट (ईडी) ने 661 करोड़ रु. की कीमत की उन सम्पत्तियों का कब्जा लेने के लिए नोटिस जारी कर दिये हैं, जो ईडी ने कांग्रेस-नियंत्रित "एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड (एजेएल) के खिलाफ मनी लॉन्डरिंग के केस में अटैच कर ली थीं। इस केस में पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी और लोकसभा के नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी बतौर आरोपी नामज़द हैं। ईडी ने ये अचल सम्पत्तियाँ नवम्बर 2023 में अटैच की थीं।

ईडी का केस एजेएल तथा इसकी होल्डिंग कम्पनी "यंग इंडियन" के विरुद्ध है। समाचार पत्र "नैशनल हैरल्ड" की प्रकाशक एजेएल है तथा इसकी मालिक "यंग इंडियन प्राइवेट लिमिटेड है। सोनिया गांधी तथा राहुल गांधी यंग इंडियन के प्रमुख शेयर होल्डर हैं। इन दोनों में से प्रत्येक के पास इसके 38 प्रतिशत शेयर हैं।

ईडी ने आरोप लगाये हैं कि यंग इंडियन तथा एजेएल का उपयोग, 18 करोड़ रु. की कीमत के फर्जी दान, 38 करोड़ रु. की कीमत का फर्जी अग्रिम किराये तथा 29 करोड़ रु. के फर्जी विज्ञापनों के रुप में, अपराध की आगे की प्रक्रिया के क्रियान्वयन के लिये किया जाता था।

यह केस मूलरुप से भाजपा नेता सुब्रमण्यम स्वामी ने दायर किया था, जिन्होंने सोनिया गांधी तथा राहुल गांधी पर उनके द्वारा "आपराधिक दुरुपयोग (क्रिमिनल निसएप्रोप्रिएशन)" किये जाने का आरोप लगाया था। यह केस दर्ज होने से पहले, यंग इंडियन ने 2010

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- ई.डी. का कहना है, एसोसिएटेड जर्नल्स लिमिटेड, जो कि नैशनल हैरल्ड प्रकाशन का मालिक है, में सोनिया गांधी व राहुल गांधी के 38-38 प्रतिशत शेयर हैं।
- ई.डी. ने नवम्बर 2023 में एसोसिएटेड जर्नल्स की सम्पत्ति अटैच की थी, मनी लॉण्डरिंग" के मामले में।
- ई.डी. ने यह नोटिस नई दिल्ली के हैरल्ड हाउस, नैशनल हैरल्ड के मुम्बई के बांद्रा एरिया में स्थित ऑफिस व एसोसिएटेड जर्नल्स की लखनऊ में विश्वेश्वर नाथ रोड पर स्थित बिल्डिंग पर चस्पा किये हैं।

कश्मीर में भूकंप के हल्के झटके

श्रीनगर, 12 अप्रैल। कश्मीर के विभिन्न हिस्सों में शनिवार को भूकंप के हल्के झटके महसूस किये गए।

राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केंद्र के अनुसार, आज अपराह्न करीब एक बजे पड़ोसी देश पाकिस्तान में भूकंप के मध्यम दर्जे झटके महसूस किये गये है। भूकंप की तीव्रता रिक्टर पैमाने पर 5.8 आंकी गयी और जो जमीनी सतह से 10 किलोमीटर गहराई में स्थित था। भूकंप का केंद्र रावलपिंडी से 60 किलोमीटर उत्तर-पश्चिम में 33.70 डिग्री उत्तरी अक्षांश और 74.46 पूर्वी देशांतर पर स्थित था। इसके झटके कश्मीर के कुछ हिस्सों में भी महसूस किए गए।

- राष्ट्रीय भूकंप विज्ञान केन्द्र के अनुसार, भूकंप के झटके पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर में महसूस किए गए।

अधिकारियों ने बताया कि कश्मीर के कई हिस्सों में भी भूकंप महसूस किया गया। भूकंप के झटके महसूस करते ही लोग घरों से बाहर निकल आये, हालांकि कहीं से भी किसी प्रकार के नुकसान या जानमाल की हानि की अभी कोई खबर नहीं है।

'भाजपा व अन्नाद्रमुक गठबंधन "कॉमन मिनिमम प्रोग्राम" के आधार पर काम करेगा'

स्टालिन ने अमित शाह के इस वक्तव्य पर व्यंग कसते हुए कहा, "क्या केन्द्र सरकार की हिन्दी थोपने की नीति, डीलिमिटेशन की राजनीति व वक्फ संशोधन इस "कॉमन मिनिमम प्रोग्राम" का हिस्सा होंगे?"

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 12 अप्रेल। तमिलनाडु के मुख्यमंत्री और द्रमुक के अध्यक्ष एम.के. स्टालिन ने बिना समय गंवाए हमला बोल दिया उनके हमले का केन्द्र था अन्नाद्रमुक -भाजपा गठबंधन, जो 2026 के विधानसभा चुनावों के लिए किया गया है। उन्होंने इसे एक "एन एलायंस ऑफ डिफीट" (पराजय का गठबंधन) कहकर खारिज कर दिया।

स्टालिन ने कहा इन दोनों दलों ने ऐसे गठबंधन को जिंदा करने का प्रयास किया है जिसका कोई वैचारिक आधार नहीं है इसी के साथ उन्होंने अपने विशिष्ट मुद्दों को लेकर केन्द्र सरकार पर हमला बोला। ये मुद्दे हैं नीट, द्विभाषा फॉर्मूला, परिसीमन और तमिलनाडु के साथ सौतेला व्यवहार, तमिलनाडु को उसके हक का पैसा भी नहीं दिया जा रहा है।

ये मुद्दे ऐसे हैं जिन पर अन्नाद्रमुक भी स्टालिन के साथ है। इन महत्वपूर्ण मुद्दों पर भाजपा व अन्नाद्रमुक में मतभेद हैं। अन्नाद्रमुक के लिए यह स्पष्ट करना मुश्किल हो सकता है कि वह ऐसी पार्टी के साथ क्यों है जो तमिलनाडु पर हिंदी थोपने की कोशिश में लगी है इसी वजह से परिसीमन और द्विभाषा मुद्दा उठा है। केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने हिंदी मुद्दे पर द्रमुक पर हमला किया और पूछा कि तमिल भाषा को आगे बढ़ाने के लिए उन्होंने क्या किया है।

एक बात पक्की है कि अन्नाद्रमुक और भाजपा के गठबंधन के बाद तमिलनाडु का चुनाव रोचक हो गया है। जहाँ तक स्टालिन की बात है उनकी "अटैक लाइन" एकदम स्पष्ट है। स्टालिन ने कहा, शाह ने गठबंधन की तो पुष्टि कर दी, पर यह नहीं बताया कि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

- अन्नाद्रमुक ने इस व्यंग का जवाब देते हुए कहा, "डी.एम.के. का भ्रष्टाचार व प्रजातंत्र के नाम पर परिवारवाद" उनके गठबंधन का "कॉमन मिनिमम प्रोग्राम" होगा।
- डी.एम.के. ने पलटवार करते हुए कहा, "अन्नाद्रमुक के मुँह से भ्रष्टाचार की बात अजीब लगती है, क्योंकि उनकी मु.मंत्री जयललिता को दो बार मु.मंत्री पद छोड़ना पड़ा था, भ्रष्टाचार के कारण और वे चार साल जेल में रही थीं।"

विचार बिन्दु

हमारी आनंदपूर्ण बदकारियाँ ही हमारी उत्पीड़क चाबुक बन जाती हैं। –शेक्सपियर

ज्ञान, समझ, युक्ति

ज्ञान, समझ और युक्ति जीवन के सभी पहलुओं से जुड़े तीन महत्वपूर्ण स्तम्भ हैं। ज्ञान वस्तुत: आंकड़ों से आंकड़ों या आंकड़ों से सूचना या सूचना से सूचना के संयोग का ऐसा संग्रह है जिसका सन्देश स्पष्ट होता है। ज्ञान के कम से कम तीन प्रकार हैं: शोध आधारित-ज्ञान, अनुभवजन्य-ज्ञान और पारंपरिक ज्ञान। कार्य-संपादन में इन तीनों का महत्वपूर्ण योगदान है। अच्छा नेतृत्व नवीन ज्ञान को जीवन भर सीखता रहता है। आधुनिक वैज्ञानिक सन्दर्भ में ज्ञान के उत्पादन के चार तरीके हैं: थ्योरी, ऑब्जरवेशन, एक्सपेरिमेंट और मॉडलिंग। यहाँ युक्ति, जिसकी बात हम आगे करेंगे, को मॉडलिंग के समकक्ष माना जाता है क्योंकि पूर्व में उपलब्ध आंकड़ों के आधार पर मैथमेटिकल-मॉडलिंग के द्वारा भविष्य की स्थिति का ज्ञान किया जाता है।

ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है। नवाचार और रचनात्मकता में ज्ञान एक महत्वपूर्ण कारक है।प्रभावी संचार के लिए ज्ञान भी आवश्यक है। जिन लोगों को किसी विषय की गहरी समझ होती है, वे आसानी से दूसरों को समझा सकते हैं, अपने विचार साझा कर सकते हैं, और समस्याओं के हल करा सकते हैं। पर ज्ञान से आगे की यात्रा और भी महत्वपूर्ण है। किसी कार्य को सम्पादित करते समय ज्ञान का उपयोग करने से अनुभव प्राप्त होता है। जीवन के विविध क्षेत्रों में विविध प्रकार के अनुभव प्राप्त होते रहते हैं, जिससे ज्ञान से आगे हमारी समझ या विजडम बढ़ती रहती है।विजडम को भारतीय दर्शन में बुद्धिमत्ता, मनीषा,मतिमानता, प्रज्ञा, प्रज्ञता, बुद्धिमानी,ज्ञान, ज्ञान-परिपूर्णता, ज्ञानज्ञता-कर्मज्ञता, समझ आदि कहा जाता है। प्राचीन दृष्टिकोण के साथ हीपिछले पाँच दशकों के दौरान साइंसऑफ़विजडम पर अनुसंधान में भी भारी बढ़ोत्तरी हुई है। विजडम को परिभाषित करने के अनेक प्रयत्न हुये हैं किन्तु अभी तक सर्वमान्य परिभाषा का निर्धारण नहीं हो पाया है।विजडम व्यक्तित्व की सामाजिक-मनोवैज्ञानिक विशेषता मात्र नहीं है बल्कि यह एक न्यूरोबायोलॉजिकल विशेषता है जो समाजोन्मुखी व्यवहार, भावनात्मक-नियमन और आध्यात्मिकता जैसे विशिष्ट घटकों से मिलकर बनती है। इस बात को आगे और भी स्पष्ट करेंगे।

हाल ही में लोगों में विजडम के घटकों को बढ़ाने के लिये व्यक्तिगत हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन मेटा-एनालिसिस द्वारा किया गया। इस अध्ययन में ऐसे क्लिनिकलट्रायल्स को समाविष्ट किया गया जो विजडम बढ़ाने के लिये अभी तक क्रियान्वित किये गये थे। इसमें 7096 व्यक्तियों से जुड़े 57अध्ययनों के आंकड़े समाहित किये गये थे। विजडम के सभी घटकों से संबंधित आंकड़े तो नहीं मिल पाये किन्तु समाजोन्मुखी-व्यवहार (प्रोसोशलबेहवियर) से संबंधित 29, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरेगुलेशन) से संबंधित 13 और आध्यात्मिकता (स्पिरिचुअलिटी) से संबंधित 15 अध्ययन शामिल किये गये थे। मेटा-एनालिसिस के परिणाम बताते हैं कि आध्यात्मिकता,भावनात्मक-नियमन और समाजोन्मुखी व्यवहार को बढ़ाने के लिये किये गये हस्तक्षेप व्यक्तिगत और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देते हैं (देखें, ई.ई. ली इत्यादि, जामा साइकेइट्री, 77(9):925-935, 2020)।

शोधकर्ताओं को मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित करने हेतुविजडम बढ़ाने के उपायों पर ऐसे अध्ययन नहीं मिले जो विजडम के सभी घटकों की समठाता को एकीकृत रूप से समाहित करते हुयेकिये गये हों। इस मेटा-एनालिसिस में सम्मिलित समीक्षा के अनुसार विजडम को मापने के लिये कई दृष्टिकोण उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिये विजडम को दो रूपों में देखा जा सकता है-पहला उपयोगी अंतर सैद्धांतिक बुद्धिमत्ता (थ्योरेटिकलविजडम या जीवन के यथार्थ की समझ; प्रकृति और मानव के रिश्तों की समझ आदि) और दूसरी व्यावहारिक बुद्धिमत्ता (प्रैक्टिकलविजडम / फ्रोनेसिस, सही कारणों के लिये, सही समय पर सही निर्णय लेने की क्षमता) सम्मिलित है। इन दोनों प्रकारों में सम्मिलित घटकों को मापने की विधियां और क्षमता वैज्ञानिक विकसित कर चुके हैं। परन्तु सैद्धांतिक ज्ञान (गहन समझ) की तुलना में व्यावहारिक ज्ञान (व्यावहारिक समझ) को प्रश्नावली के माध्यम से अधिक सुगमता से मापा जा सकता है। इस मेटा-एनालिसिस में व्यावहारिक समझ के सम्बन्ध में समाजोन्मुखी व्यवहार और भावनात्मक विनियमन को लिया गया और सैद्धांतिक समझ के संबंध में आध्यात्मिकता को शामिल किया गया। बुद्धिमत्ता के अन्य घटकों से जुड़े इंटरवेंशन वाले अध्ययनों की कमी के कारण निर्णय लेने की क्षमता, अनिश्चितता से निपटने की क्षमता, और सहिष्णुता जैसे घटक अध्ययन में शामिल नहीं किये जा सके। फिर भी जिन तीन घटकों को शामिल कर यह अध्ययन किया गया वह नया रास्ता दिखाने वाला है क्योंकि अध्ययन में सम्मिलित तीनों घटक अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। विजडम जैसे विषय यदि एम्पिरिकलरिसर्च की सीमाओं से परे ना भी हों तो भी काफी चुनौतीपूर्ण हैं।

प्रज्ञा के संबंध में यह बताना भी उपयोगी है कि आध्यामिकता इसका एक महत्वपूर्ण घटक है (देखें, डी.वी. जेस्ते इत्यादि, जर्नलऑफ़साइकियाट्रिकरिसर्च, 132:174-181, 2021)। आध्यामिकता और धार्मिकता में अंतर समझना जरूरी है। आध्यात्म हमें प्रकृति के समीप ले जाता है। आध्यामिकता व्यक्ति को व्यक्ति के समीप ले जाती है। आध्यामिकता प्राकृतिक तंत्रों के समीप भी ले जाती है। आध्यात्म वस्तुत: आत्मावलोकन और आत्म-समीक्षा के अवसर प्रदान करता है। आत्म-समीक्षा में यह भी शामिल है कि प्रकृति के साथ हमारे क्या संबंध हैं और हमें प्रकृति को बेहतर करने में हमारा क्या योगदान है। धार्मिकता एक अलग विषय है। धर्म की त्रुटिपूर्ण किन्तु बड़ी लोकप्रिय व्याख्या लोगों के बीच में मिलती है। ध्यान दीजिये, आध्यामिकता में किसी एक धर्म के प्रति निष्ठा महत्वपूर्ण नहीं है। आध्यात्मिकता जहां एक और समाज के प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं के जैसा मानने का विचार देती है वहीं दूसरी ओर धर्म की समकालीन स्थिति यह है कि सारा विश्व अलग-अलग जाति धर्म और संप्रदाय में बंट गया है। आत्मवत्सर्वभूतेषु का सिद्धांत आध्यात्म की मूल आत्मा है। दरअसल एक रिलीजियस व्यक्ति आध्यात्मिक भी हो सकता है, लेकिन एक आध्यात्मिक व्यक्ति धर्म के लोकप्रिय स्वरुप के अनुसार धार्मिक भी हो ऐसा आवश्यक नहीं है। यहाँ यह भी समझना आवश्यक है कि भारतीय दर्शन में धर्म शब्द का मूल अर्थ उस शब्द से नहीं है जिसे दुनिया रिलीजन कहती है।असल में धर्म का मूल अर्थ व्यक्ति के नियत कर्तव्यों और उनके पालन से है।

ज्ञान एक मूल्यवान संपत्ति है और यह व्यक्ति की शक्ति, प्रभाव और उपयोगिता को बढ़ाता है। आज के कार्यबल में प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए लगातार नया ज्ञान सीखना महत्वपूर्ण है।

प्राचीन सांस्कृतिक एवं धार्मिक साहित्य में भी समझके वैज्ञानिक स्वरूप देखे जा सकते हैं। उदाहरण के लिये वैज्ञानिकों द्वारा गीता का अध्ययन कर उसमें विजडम, प्रज्ञा, ज्ञान आदि पर 10 घटक खोजे गये हैं। इनमें से जीवन का ज्ञान, भावनात्मक विनियमन (इमोशनलरेगुलेशन) या आत्म-नियंत्रण, इच्छाओं पर नियंत्रण, मध्यम-मार्ग (मॉडरेशन या टेम्पेरेंस) निर्णायकता, आत्मा और उसके विषय में ज्ञान, ईश्वर पर विश्वास, कर्म-योग, आत्म-संतोष, प्राणियों के प्रति दया, दान, योग इत्यादि ऐसे विषय हैं जो केवल दर्शन या धर्म के विषय नहीं हैं बल्कि क्लिनिकलट्रायल्स में भी उपयोगी पाये गये हैं। वर्तमान और अद्यतन शोध की स्थिति यह है कि विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा के कम से कम सात घटक पहचाने जा चुके हैं। इनमें (1) सहिष्णुता एवं वैचारिक विविधता को स्वीकार करना, (2) अनिश्चितता के रहते हुये भी निर्णय लेने की क्षमता, (3) भावनात्मक विनियमन या इमोशनलरेगुलेशन, (4) समाजोन्मुखी व्यवहारया प्रोसोशलबिहेवियर जिसमें आत्म-नियंत्रण, दया, सहायता और करुणा आदि शामिल हैं, (5) आत्म-समीक्षा, (6) उचित सलाह देने में तत्परता या सोशलएडवाइजिंग तथा (7) आध्यात्मिकता शामिल हैं। जिस व्यक्ति में यह सभी सातों क्षमतायें (प्रज्ञा के घटक) पाये जाते हैं वह उन परिस्थितियों से बड़ी आसानी से बाहर निकल जाता है जिनमें प्रज्ञा में कमी वाले व्यक्ति उलझ जाते हैं।

वस्तुत: प्रज्ञा का मूल उद्देश्य स्वयं की और समाज की जिंदगी में बेहतरी लाना है। यहां एक प्रश्न उठता है कि यह विजडम, बुद्धिमत्ता या प्रज्ञा तो दुधारी तलवार हो सकती है। कोई ऐसा व्यक्ति भी हो सकता है जिसमें तिकड़मी बुद्धिमत्ता या एविल-विजडम हो। दरअसल ऐसा नहीं होता। यहां यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि प्रज्ञा व्यक्ति को सदैव आत्म-नियंत्रित, आत्म-समीक्षक, और समाजोपयोगी ही बनाती है। प्रज्ञावान व्यक्ति अपने जीवन को सदैव बेहतर बनाता है और एक ऐसी आयु प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में सुखायु कहा जाता है। सुखायु के साथ-साथ प्रज्ञावान व्यक्ति एक ऐसी आयु भी प्राप्त करता है जिसे आयुर्वेद में हितायु कहा जाता है। सुखायु और हितायुप्रज्ञावान व्यक्ति के लिये ही संभव है। शातिर दिमाग, तिकड़मी या चलता-पुर्जा व्यक्ति प्रज्ञावान नहीं होता। तिकड़म के लिये उसके पास जानकारी बहुत हो सकती है परंतु प्रज्ञाविहीन कोरी जानकारी सुखायु और हितायु नहीं प्रदान कर सकती। अब हम ज्ञान और समझ से आगे चलकर युक्ति की बात करते हैं जो ज्ञान और समझ सेभी आगे समस्याओं के हल का रास्ता है। यह लोगों को लीक से हटकर सोचने और समस्याओं के समाधान हेतु विविध विकल्प देते हुए श्रेष्ठ विकल्प चुनने में मदद करती है। युक्ति एक सार्वभौमिकप्रबंधकीय सिद्धांत है। प्राचीन भारत के महर्षि-वैज्ञानिक आचार्य चरक, जो युक्ति-व्यपाश्रय सिद्धांत के जनक माने जाते हैं, के अनुसार अनेक कारणों की समठाता और एकीकरण से उत्पन्न भावों को जो बुद्धि देखती है, वह युक्ति है। युक्ति से वर्तमान, भूत और भविष्य, तीनों कालों को जाना जा सकता है। युक्ति के द्वारा धन-संपत्ति, धर्म और कत्तर्व्यपालन और उपभोग और आनंद प्राप्त किया जाता है (च.सू.11.25): बुद्धि:पश्यति या भावान्बहुकारणयोगजान्। युक्तिस्त्रिकाला सा ज्ञेयात्रिवर्ग: साध्यतेयया।। ध्यान दीजिये, यहाँ आचार्य चरक ने युक्ति को परिभाषित तो किया ही है, साथ ही युक्ति के लक्षण और व्यापक सार्वभौमिकता का दर्शन भी स्पष्ट किया है। युक्ति के द्वारा अर्थ, धर्म और काम की सिद्धि का सिद्धांत वस्तुत: जीवन में पुरुषार्थ साधने की रणनीति है। संक्षेप में कहें तो पूर्व में प्राप्त समठा अनुभव और जानकारी के द्वारा अज्ञात को जान लेने वाली बुद्धि ही युक्ति है।

युक्ति केवल कोरा दर्शन नहीं बल्कि एक ठोस प्रायोगिक साधन है।एक उदाहरण से युक्ति का ठोस प्रायोगिकमहत्त्व और भी स्पष्ट हो जायेगा। सामान्य-विशेष सिद्धान्त के अनुसार एक जैसे भावों (द्रव्य, गुण और कर्म) को समान प्रकार के भावों से मिलाने पर बढ़त होती है और विशेष या असमान भावों को मिलाने पर ह्रास या घटत होती है। यह विज्ञात अर्थ है। इस सिद्धान्त के अनुसार एक बात स्पष्ट होती है कि घर में गुस्सैल किशोर या किशोरी के गुस्से को ठंडा करने के लिये यदि माता-पिता गुस्से और चिड़चिड़ाहट से पेश आते हैं तो किशोरों का गुस्सा और ज्यादा भड़केगा। इसके विपरीत यदि गुस्सैल किशोर या किशोरी से माता-पिता स्नेहपूर्वक व्यवहार करें उनका गुस्सा भी शांत हो जाता है। यह युक्ति है। दैनिक जीवन में समस्या-समाधानहेतु ज्ञान, समझ और युक्ति एक साथ और उत्तरोत्तर श्रेणीबद्ध रूप दोनों प्रकार से उपयोगी हैं। ज्ञान जानकारी और तथ्य प्रदान करता है जो हमें समस्या को समझने और संभावित समाधानों पर मंथन करने में मदद कर सकता है। समझ हमें पिछले अनुभव और स्थिति के आधार पर बुद्धिमानी से निर्णय लेने में मदद करती है। युक्ति हमें आगा-पीछा देखकर एक जटिल समस्या को छोटे, आसानी से प्रबंधन-योग्यचरणों में तोड़ने में मदद करती है, जिसे समस्या को कुशलतापूर्वक हल करने के लिए लागू किया जा सकता है। इन तीनबहुआयामी संसाधनों के बिना जीवन में हर क्षण आने वाली जटिल समस्याओं का प्रभावी समाधान निकालना लगभग असंभव हो जाता है।

डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त तथा वर्तमान में राष्ट्रीय आयुर्वेद संस्थान में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

कुलपति नियुक्ति विवाद से समाज पर प्रभाव और समाधान

अशोक कुमार

8 अप्रैल, 2025 को, भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने तमिलनाडु विधानसभा द्वारा विश्वविद्यालयों से संबन्धित, पारित किए गए 10 विधेयकों को मंजूरी दी, जो राज्यपाल द्वारा रोक दिए गए थे। इन विधेयकों के पारित होने के बाद, राज्य सरकार को तमिलनाडु के विश्वविद्यालयों में कुलपति की नियुक्ति का अधिकार मिल जाएगा।यह अधिकार पूर्व में माननीय राज्यपाल को था। कुलपति की नियुक्ति को लेकर राज्य सरकार और राज्यपाल के बीच केरल, पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु, कर्नाटक:, महाराष्ट्र, पंजाब, हिमाचल में विश्वविद्यालयों में कुलपतियों की नियुक्ति को लेकर मतभेद सामने आए हैं। विवाद समाज पर कई नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इससे शिक्षा प्रणाली में अस्थिरता, गुणवत्ता पर प्रभाव, शैक्षिणक माहौल का खराब होना, शासन और प्रशासन में अवरोध, संस्थाओं की स्वायत्तता का क्षरण, राजनीतिक ध्रुवीकरण और विकास पर नकारात्मक असर पड सकता है। इसके अतिरिक्त, यह संवैधानिक मूल्यों और संघीय ढांचे पर भी नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है, जिससे जनता का विश्वास कम हो सकता है।

इस संवेदनशील और महत्वपूर्ण मामले के समाधान के लिए राज्य सरकार और राज्यपाल दोनों को संविधान और विश्वविद्यालय अधिनियमों में उल्लिखित अपनी-अपनी शक्तियों और सीमाओं का स्पष्ट रूप से पालन करना चाहिए। यदि किसी विशेष बिंदु पर अस्पष्टता है, तो दोनों पक्षों को मिलकर निष्पक्ष कानूनी विशेषज्ञों से राय लेनी चाहिए और उसका सम्मान करना चाहिए। राज्यपाल और मुख्यमंत्री (या शिक्षा मंत्री) को नियमित रूप से इस मुद्दे पर और अन्य संबंधित मामलों पर चर्चा करनी चाहिए ताकि गलतफहमी और टकराव की स्थिति से बचा जा सके। कुलपति के नामों पर विचार करते समय, दोनों पक्षों को ऐसे नामों पर सहमति बनाने का प्रयास करना चाहिए जो योग्यता, अनुभव और निष्पक्षता के मानदंडों को पूरा करते हों।

चयन प्रक्रिया में सुधार के लिए कुलपति के चयन के लिए एक स्पष्ट, पारदर्शी और योग्यता-आधारित प्रक्रिया स्थापित की जानी चाहिए। इसमें शिक्षाविदों, विशेषज्ञों और विश्वविद्यालय प्रशासन के प्रतिनिधियों को शामिल किया जा सकता है। एक निष्पक्ष और प्रतिष्ठित खोज समिति का गठन किया जाना चाहिए जो संभावित उम्मीदवारों के नामों की सिफारिश करे। इस समिति की सिफारिशों पर गंभीरता से विचार किया जाना चाहिए।

कुलपति पद के लिए योग्यता मानदंड को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए और राजनीतिक विचारों से ऊपर रखा जाना चाहिए। विश्वविद्यालयों को राजनीतिक हस्तक्षेप से मुक्त रखा जाना चाहिए ताकि वे स्वतंत्र रूप से शैक्षिणक और प्रशासनिक कार्य कर सकें।

विश्वविद्यालय अधिनियमों में कुलाधिपति (अक्सर राज्यपाल) की भूमिका और शक्तियों को और अधिक स्पष्ट किया जाना चाहिए ताकि किसी भी तरह की अस्पष्टता या अतिरेक से बचा जा सके। यदि मामला न्यायालय में जाता है, तो सभी पक्षों को सर्वोच्च न्यायालय के निर्देशों का पूरी तरह से पालन करना चाहिए। इस तरह के महत्वपूर्ण संवैधानिक मुद्दों पर निर्णय लेने के लिए आवश्यकतानुसार संवैधानिक पीठ का गठन किया जा सकता है ताकि व्यापक कानूनी दृष्टिकोण मिल सके। राज्यपाल और मुख्यमंत्री जैसे संवैधानिक पदों पर बैठे व्यक्तियों के लिए एक आचार संहिता विकसित की जा सकती है जो उनके आपसी संबंधों और कार्यप्रणाली के लिए दिशानिर्देश प्रदान करे।

नागरिक समाज की भूमिका: नागरिक समाज, शिक्षाविदों और बुद्धिजीवियों को इस मुद्दे पर रचनात्मक चर्चा को बढ़ावा देना चाहिए और राजनीतिक नेतृत्व पर संवैधानिक मूल्यों और शिक्षा के हित में काम करने का दबाव डालना चाहिए। मीडिया को इस मुद्दे पर निष्पक्ष और तथ्यात्मक रिपोर्टिंग करनी चाहिए ताकि जनता को सही जानकारी मिल सके। कुलपति नियुक्ति विवाद एक संवेदनशील मुद्दा है जिसका समाज पर दूरगामी प्रभाव पड़ सकता है।

इसका समाधान संवैधानिक प्रावधानों का सम्मान, आपसी संवाद, पारदर्शी प्रक्रिया और विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता का सम्मान करने में निहित है। सभी हितधारकों को शिक्षा के महत्व को समझना चाहिए और राजनीतिक मतभेदों से ऊपर उठकर एक ऐसा समाधान खोजने का प्रयास करना चाहिए जो उच्च शिक्षा के हित में हो और समाज पर सकारात्मक प्रभाव डाले।

–अशोक कुमार,
पूर्व कुलपति कानपुर, गोरखपुर विश्वविद्यालय, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

गर्मी को देखते हुए वन विभाग अलर्ट मोड पर, पैंथर व हिरणों के पानी की व्यवस्था की

झुंझुनूं जिले में बांसियाल, बागोर, मनसा माता तथा बीड़ चार कंर्जेवेशन रिजर्व है, जबकि शाकंभरी कंर्जेवेशन रिजर्व झुंझुनूं और सीकर में है

झुंझुनूं, (निसं)। गर्मी का मौसम शुरू हो गया है। गर्मी के मौसम में जिसकी सबसे ज्यादा जरूरत होती है वो है पीने के लिए पानी। ना केवल आमजन को, बल्कि जीव-जंतुओं को भी पानी की महत्ती आवश्यकता है। झुंझुनूं जिले में स्थित पांच कंर्जेवेशन रिजर्व जगहों में से दो जगहों पर पैंथर रहते हैं। तो एक जगह पर काले हिरण और चिंकारा रहते हैं। इनके लिए वन विभाग ने भी पानी की पर्याप्त व्यवस्था के लिए पूरा प्लान तैयार कर लिया है, ताकि कोई भी जीव पानी से ना मरें और ना ही भटके।

झुंझुनूं डीएफओ उमदाराम सियोल ने बताया कि झुंझुनूं जिले में बांसियाल, बागोर, मनसा माता तथा बीड़ चार कंर्जेवेशन रिजर्व है, जबकि शाकंभरी कंर्जेवेशन रिजर्व झुंझुनूं और सीकर में है। इनमें से बांसियाल, बागोर तथा मनसा माता कंर्जेवेशन रिजर्व में 13 पैंथर है। वहीं झुंझुनूं की बीड़ कंजर्वेशन रिजर्व में 62 काले हिरण और 24 चिंकारा मौजूद हैं। इन सभी को गर्मी के मौसम में पर्याप्त पानी मिले, इसके लिए सभी वॉटर हॉल्स पूरी तरह से व्यवस्थित करवा दिए गए हैं। वहीं इनमें नियमित पानी आपूर्ति की व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए विभागीय टीम लगाई है, जो इन वॉटर हॉल्स की मॉनिटरिंग करते हैं।

वन विभाग ने कंजर्वेशन रिजर्व में पैंथर, हिरणों और चिंकारा सहित अन्य वन्य जीवों के लिए वाटरहॉल बनाए हैं।

झुंझुनूं डीएफओ उमदाराम सियोल ने बताया पानी के लिए ना ही तो किसी वन्य जीव को भटकना पड़ेगा और ना ही प्यास से किसी की जान जाएगी। डीएफओ उमदाराम सियोल ने बताया कि बांसियाल में छह और मनसा माता कंर्जेवेशन रिजर्व में सात पैंथर छोड़े गए थे। संभावना है कि इनका कुनबा बढ़ा है। हालांकि नए आंकड़े तो वन्य जीव गणना के वक्त आएंगे, लेकिन हमारा फिलहाल टारगेट यही है कि गर्मी के कारण ना तो पैंथर को, ना ही हिरणों को और ना ही किसी अन्य वन्य जीव को भटकना पड़े। साथ ही इनके खाने को लेकर भी अभी तक कोई समस्या सामने नहीं आई है। खासकर पैंथर को पहाड़ी में ही अन्य जानवर मिल जाते है। उन्होंने बताया कि गर्मी बढ़ने के साथ ही वन विभाग ने गश्त और जल प्रबंधन के इंतजामों को और बढ़ा दिया है, ताकि वन्य जीवों को किसी प्रकार की दिक्कत न हो। इन सभी की देखभाल के लिए विभाग की टीमें

- **बांसियाल, बागोर तथा मनसा माता कंर्जेवेशन रिजर्व में 13 पैंथर हैं, झुंझुनूं की बीड़ कंजर्वेशन रिजर्व में 62 काले हिरण और 24 चिंकारा मौजूद हैं**

लगातार गश्त कर रही हैं और वाटरहॉल्स की स्थिति की निगरानी कर रही हैं। उन्होंने बताया कि बीड़ रिजर्व में धामन घास की पर्याप्त मात्रा है, जिसका हिरण और चिंकारा सेवन कर रहे हैं।

नलकूप व टैंकरों के जरिए व्यवस्था :-अप्रैल का महीना है और पारा 40 से उपर चल रहा है। इस प्रचंड गर्मी में हर कोई हलकान है। ऐसे में वन विभाग की पूर्व तैयारियां वन्य जीवों के लिए वरदान साबित हो रही है। वन विभाग द्वारा कंजर्वेशन रिजर्व में पैंथर, हिरणों और चिंकारा सहित अन्य वन्य जीवों के लिए जो जगह जगह वाटरहॉल बनाए हैं, जिनमें नलकूप और टैंकरों के जरिए नियमित पानी की आपूर्ति की जा रही है। साथ ही, छायादार आश्रय स्थल भी तैयार किए गए हैं ताकि जानवरों को तपती धूप से राहत मिल सके।

चैत्र पूर्णिमा पर पुष्कर सरोवर में हजारों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई

वैशाख माह के स्नान की शुरुआत, वैशाख पूर्णिमा के महास्नान के साथ समापन होगा

पुष्कर, (निसं)। तीर्थ नगरी पुष्कर स्थित पवित्र सरोवर में चैत्र मास की पूर्णिमा पर हजारों श्रद्धालुओं ने आस्था की डुबकी लगाई। इसके साथ ही वैशाख माह के स्नान की शुरुआत हुई, जो 12 मई वैशाख पूर्णिमा के महास्नान के साथ समापन होगा।

तीर्थ पुरोहित आचार्य पवन कुमार शर्मा ने बताया कि शनिवार को चैत्र मास की पूर्णिमा पर अलसुबह ब्रह्ममुहूर्त से ही पुष्कर सरोवर के घाटों पर स्नान का सिलसिला शुरू हुआ जो देर शाम तक जारी रहा। साथ ही वैशाख माह के स्नान की शुरुआत हो गई, जो 12 मई को वैशाख पूर्णिमा पर महास्नान के साथ संपन्न होगा। श्रद्धालुओं ने वैदिक मंत्रोच्चार के बीच पूजा-अर्चना की और पुरोहितों को दक्षिणा देकर पुण्य अर्जित किया। महिलाएं 52 घाटों पर आस्था की डुबकी लगाते हुए नजर आईं। स्नान के बाद धर्मप्रेमियों ने सरोवर की परिक्रमा की और ब्रह्मा मंदिर सहित अन्य प्रमुख देवालयों में दर्शन किए। स्नान के लिए उमड़ी भीड़ के चलते घाटों, मंदिरों और बाजारों में दिनभर चहल-पहल बनी रही। शाम को जयपुर घाट पर श्री पुष्करराज दिव्य महाआरती संघ एवं सनातन धर्म रक्षा संघ अजयमेरू की ओर से महाआरती हुई। संघ के संरक्षक अजय शर्मा ने बताया कि त्रिमंच पर तीर्थ पुरोहित चंद्रशेखर गौड़ एवं उनकी टीम के ज्योतिषाचार्य पंडित कैलाशनाथ दाधीच व पंडित रविशंकर शर्मा के आचार्यत्व में महाआरती हुई।

राशिफल रविवार 13 अप्रैल, 2025

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, कृष्ण पक्ष, प्रतिपदा तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, चित्रा नक्षत्र रात्रि 9:11 तक, हर्षण योग रात्रि 9:39 तक, बालव करण सायं 7:08 तक, चन्द्रमा प्रात: 9:39 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-मीन, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज वैशाख संक्रांति, सूर्य मेष राशि में रात्रि 3:24 पर प्रवेश करेगा। शुक्र मार्गी प्रात: 6:38 पर होगा। आज एकलिंग जी पाटोत्सव, वैशाखी, विशु, मेष संक्रांति है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:44 से 9:18 तक, लाभ-अमृत 9:18 से 12:27 तक, शुभ 2:03 से 3:37 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 6:09, सूर्यास्त 6:46

मेष
स्वास्थ्य में सुधार होगा। अस्त-व्यस्त दिनचर्या व्यवस्थित होने लगेंगे। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

धनु
आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। अटका हुआ धन प्राप्त हो सकता है। आवश्यक कार्य सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेगी। विवादित मामलों से राहत मिलेगी।

कन्या
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। शुभ कार्य से संबंधित यात्रा संभव है।

मकर
अपने अति आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आवश्यक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

मिथुन
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आपसी ईर्ष्या-वैमनस्यता के कारण परेशानी हो सकती है। वाणी पर नियंत्रण रखना ठीक रहेगा।

तुला
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। आज कार्य योजनानुसार सम्पन्न हो सकते हैं।

कुंभ
परिवार में शुभ-मांगलिक संदेश प्राप्त हो सकते हैं। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी और उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

कर्क
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

वृश्चिक
परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। पारिवारिक कार्यों के लिए भागदौड़ बनी रहेगी। समय अनर्गल कार्यों में खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा।

मीन
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा में परेशानी हो सकती है।

लालगढ़ स्टेशन होगा अब और स्मार्ट

बीकानेर, (कासं)। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत बीकानेर के लालगढ़ रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास कार्य तेजी से अंतिम चरण में पहुंच रहा है। इसी कड़ी में निर्माणाधीन फुट ओवरब्रिज पर गर्डर लांचिंग का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण हुआ।

प्लेटफॉर्म नंबर एक और दो के बीच 25 मीटर लम्बे कुल 11 गार्डरों की लांचिंग की गई जो कि स्टेशन के यात्री सुविधाओं को आधुनिकता की ओर ले जाने की दिशा में एक अहम उपलब्धि है। 12 मीटर चौड़े इस फुट ओवरब्रिज के पूर्ण निर्माण के बाद यात्रियों को प्लेटफॉर्म के बीच आने-जाने में अधिक सुविधा और सुरक्षा मिलेगी।

यह ओवरब्रिज न केवल सुगम आवागमन सुनिश्चित करेगा बल्कि दिव्यांग जनों के लिए भी पहुंच को आसान बनायेगा। अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत लालगढ़ स्टेशन पर 18.85 करोड़ रूपए की लागत से पुनर्विकास कार्य किया जा रहा है। स्टेशन भवन की डिजाइन को नया रूप दिया गया है जिसमें स्थानीय कला और सांस्कृतिक झलक को भी शामिल किया गया है। मुख्य प्रवेश द्वार को बेहद आकर्षक बनाया गया है, जो यात्रियों को प्रथम दृष्टि में ही बीकानेर की विरासत का अनुभव करायेगा। स्टेशन पर आने-जाने के लिए प्रवेश और निकास के अलग-अलग प्रावधान किए जा रहे हैं। सर्कुलेटिंग एरिया का सौन्दर्यीकरण होगा।

जनसुनवाई में पानी, बिजली व अतिक्रमण हटाने के मामले आये

बीकानेर, (कासं)। खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने शनिवार को सादुलगंज स्थित अपने आवास पर जनसुनवाई की।

जिले के विभिन्न क्षेत्रों से आये ग्रामीणों ने मंत्री गोदारा के समक्ष पानी, बिजली, सड़क, अतिक्रमण हटाने, स्कूलों और स्वास्थ्य केन्द्रों में रिक्त पदों पर कार्मिकों की नियुक्ति सहित अनेक

■ **ग्रामीणों ने मंत्री गोदारा के समक्ष स्कूलों और स्वास्थ्य केन्द्रों में रिक्त पदों पर कार्मिकों की नियुक्ति सहित अनेक समस्याएं बताई**

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री सुमित गोदारा ने बीकानेर में अपने आवास पर जनसुनवाई कर आमजन की समस्याएं सुनी।

परिवाद रखे। मंत्री गोदारा ने संबंधित अधिकारियों को दूरभाष से आवश्यक कार्यवाही के लिए निर्देशित किया। गोदारा ने कहा कि प्रदेश की संवेदनशील सरकार आमजन के कल्याण के लिए अनेक योजनाएं और कार्यक्रम चला रही है। प्रत्येक पात्र व्यक्ति इनका लाभ ले, जिससे सरकार की मंशा के अनुसार सभी को समाज की मुख्यधारा से जोड़ा जा सके।

उन्होंने कहा कि प्रदेश के ऐतिहासिक बजट ने आमजन को अनेक सौगातें दी हैं। इनका समयबद्ध क्रियान्वयन सुनिश्चित किया जा रहा है। इसके लिए प्रभारी मंत्रियों सहित अधिकारियों द्वारा नियमित समीक्षा की जा रही है।

खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मंत्री तथा लूणकरनसर विधायक सुमित गोदारा ने विधायक स्थानीय क्षेत्र विकास योजना के तहत 69.17 लाख रूपए के कार्यों की अभिशंसा की है। गोदारा ने बताया कि राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय जोगियासन में टीन शेड और शौचालय निर्माण के लिए लागत 7.50 लाख, लूणकरनसर की मंडी आवासीय कॉलोनी के सेक्टर न. 3 में झूले लगाने के कार्य के लिए 3 लाख, कालवास गांव में भ्रमण पथ व मंजिया बेंच निर्माण के लिए 5.95 लाख, लूणकरनसर में भार्गव समाज की श्मशान भूमि में टीनशेड निर्माण के लिए 4.95 लाख, लूणकरनसर के वार्ड नंबर 28 कुम्हार समाज श्मशान भूमि में टीनशेड निर्माण कार्य के लिए 4.95 लाख, लूणकरनसर के वार्ड नंबर 36 में नाई समाज सामुदायिक भवन निर्माण व झूले लगाने के कार्य के लिए 6.95 रूपए की अभिशंसा की गई है। गोदारा ने बताया कि लूणकरनसर गणगौर मैदान में मुख्य द्वार निर्माण, मरम्मत व रंग रोगन कार्य के लिए 14.90 लाख तथा लूणकरनसर के वार्ड नंबर 7 में ब्राह्मण समाज सामुदायिक भवन में टीनशेड निर्माण, सोलर संचालित लाईट लगाने व अन्य विकास कार्य-20.97 लाख रुपए की अभिशंसा की गई है।

केक काटकर हनुमान जयंती मनाई

बीकानेर, (कासं)। बेगि हरो हनुमान महाप्रभू जो कुछ संकट होय हमारो, को नहिं जानत है जग में..ऽ सकंट से उबारने वाले हनुमानजी के जयकारों से शनिवार को मंदिर गूंज उठे।

जयंती के अवसर पर हनुमान मंदिरों में विशेष अनुष्ठान हुए। सुंदरकांड पाठ, हनुमान चालीसा पाठ की चौपाईयों की दिनभर गूंज रही। मंदिरों में दर्शनार्थियों की लम्बी कतारें रही। मंदिरों में केक काटकर खुशियां मनाई गई। दोपहर, शाम व रात को विशेष आरती हुई। हनुमानजी के चूरमा, बूंदी, खीर सहित कई तरह के व्यजंनों का भोग लगाया गया। भक्ति जागरण के आयोजन हुए। रतन बिहारी पार्क के समीप बड़ा हनुमानजी मंदिर, ढोलामारू के सामने स्थित हनुमान मंदिर, जस्सोलाई क्षेत्र के हनुमान मंदिर, नत्थूसर गेट बाहर नारसिह हनुमान, जूनागढ़ स्थित चंचल हनुमान, मुक्ता प्रसाद सहित मंदिरों में विशेष अनुष्ठान हुए।

बीके स्कूल के समीप स्थित मंशापूर्ण हनुमान मंदिर में हनुमानजी की प्रतिमा का विशेष शृंगार किया गया। सुबह साढ़े सात, दोपहर 12, शाम साढ़े सात बजे आरती की गई। केक काटा गया। प्रसाद वितरण किया गया। रतनबिहारी पार्क के सामने संकटमोचन मंशापूर्ण हनुमान मंदिर में सुबह साढ़े पांच बजे पहली आरती की गई। शाम सवा सात बजे महाआरती हुई। दर्शन करने के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी।

सार-समाचार

गायों को गुड़ लापसी खिलाई

हनुमान जयंती पर शांति विद्या निकेतन स्कूल शीतला गेट के करूणा क्लब ने गौशाला में गायों को गुड़ लापसी खिलाई।

बीकानेर, (कासं)। शांति विद्या निकेतन माध्यमिक विद्यालय शीतला गेट बीकानेर द्वारा करूणा क्लब टीम और स्काउट गाइड के संयुक्त तत्वावधान में आयोज्य हनुमान जन्मोत्सव बड़े धूमधाम से गायों की सेवा कर मनाया गई। इस विशेष आयोजित कार्यक्रम में शाला समिति के कोषाध्यक्ष भगतराम मोदी एवं उनके सुपुत्र नवीन मोदी द्वारा विशेष आर्थिक सहायता देते हुए श्रीरामसर स्थित बाबा रामदेव गौशाला परिसर में करूणा क्लब टीम द्वारा गायों को 50 किलोग्राम गुड़ लापसी का वितरण किया गया। साथ ही आयोज्य पीपा जयंती के अवसर पर शाला की कक्षा 7 की छात्राओं मानवी सोलंकी, शैली सोलंकी, दीपिका, योगिता सोलंकी, प्राची टाक एवं तमन्ना द्वारा अपनी जेबखर्ची से अंधी लंगड़ी गायों को चारा, गुड़ पानी आदि देकर अपनी करूणा का परचम फहराया। कार्यक्रम संयोजन शाला के कब मास्टर रमेश कुमार मोदी ने अंधी लुली लंगड़ी गायों की सेवा को निरंतर जारी रखने का संदेश दिया। समिति के कोषाध्यक्ष भगतराम मोदी ने इस प्रकार के सेवा कार्यों को करने हेतु आवश्यक आर्थिक सहयोग देने की घोषणा की। इस अवसर पर उपस्थित गौशाला प्रभारी भंवरलाल द्वारा करूणावान कार्य करने के लिए अपनी और से शाला की करूणा क्लब टीम को धन्यवाद दिया। शाला के करूणा प्रभारी सौरभ बजाज ने करूणा क्लब टीम द्वारा ऐसे सेवा कार्य को निरंतर जारी रखने का विश्वास दिलाते हुए सभी विद्यार्थियों का आभार प्रकट किया। इस अवसर पर रोहित स्वामी, ख्वाहिश मोदी आदि सदस्य उपस्थित थे।

पक्षियों के पानी के परिंडे लगाये

नोखा शहर के चौक चौराहों पर पक्षियों के लिए पानी के पालसिये लगाए।

नोखा, (कासं)। जन अधिकार सेना के द्वारा पशु पक्षी हितार्थ कार्य आरंभ है और विभिन्न तरह के पशु पक्षी हितार्थ कार्य जनसेवकों के द्वारा जारी है। इसी के तहत पवित्र चैत्र मास में हनुमान जन्मोत्सव के पावन अवसर पर जनसेवकों के द्वारा शान्ति वन नोखा में एवं शहर के चौक चौराहों पक्षियों के पानी पीने के लिए पालसिये लगाये।

कचरा हटाने को 32 करोड़ मिले, 30 फीसदी काम बाकी

बीकानेर, (कासं)। केन्द्र सरकार का प्रोजेक्ट है कि शहरों से कचरे के पहाड़ हटाए जाएं। शहर से रोज निकलने वाले कचरे का शोधन करके बिजली, खाद बनाएं और रिसाइक्लिंग कर नए प्रोडक्ट बनाएं। योजना पर तेजी से काम चल भी रहा है।

बीकानेर में बजट की कमी से शहर के बीच कचरे का पहाड़ हटाना ही कठिन हो रहा है। ये आसपास लोगों के लिए भी समस्या है। बीकानेर का डंपिंग यार्ड शिव वैली में है। जहां करीब 7,31,960 क्यूबिक मीटर में साढ़े सात लाख टन कचरे का ढेर है। इसे हटाने के लिए 32 करोड़ का बजट मिला था। 70 प्रतिशत ढेर हटाया जा चुका है। 30 प्रतिशत हटाने का काम चल रहा है। मौजूदा बजट में सतह तक ही कचरा हटेगा। जमीन के भीतर करीब दो से तीन मीटर तक कचरा फैला है। इसे हटाने के लिए अतिरिक्त राशि और नए टेंडर की जरूरत पड़ेगी। डीएलबी तक ये बात नगर निगम ने पहुंचा दी है। केन्द्र पहले ही इस प्रोजेक्ट में आधी राशि राज्य सरकार को वहन करने के

■ **बीकानेर में बजट की कमी से शहर के बीच कचरे का पहाड़ हटाना ही कठिन हो रहा है, ये आसपास लोगों के लिए भी समस्या है। जमीन के भीतर दो से तीन मीटर तक कचरा फैला है**

■ **साढ़े सात लाख टन कचरे के ढेर को हटाने के लिए 32 करोड़ का बजट मिला था। 70 प्रतिशत कचरा ढेर हटाया जा चुका है**

लिए कह रहा था। राज्य सरकार ने नहीं किया। केन्द्र ने ही पूरा पैसा दिया। ऐसे में अतिरिक्त खर्चा केन्द्र सरकार देगी। इसकी उम्मीद कम है।

बीकानेर के शिववैली डंपिंग यार्ड में 7.5 लाख टन कचरा जमा है। कचरा हटाने के लिए 32 करोड़ रुपए के प्रस्ताव भेजे गए थे। लेकिन बाद में केन्द्र ने पूरे प्रदेश के यार्ड के लिए सामूहिक राशि जारी की थी। टेंडर हुए और काम भी शुरू हो गया था। हालांकि बीच में 6 महीने तक फर्म का भुगतान ना होने से काम रूका रहा मगर अब वापस शुरू हो गया। दो दिन पहले आए डीएलबी के प्रमुख सचिव राजेश यादव ने इसकी भी समीक्षा की थी। राशि सबसे ज्यादा जरूरत जयपुर को 88 करोड़ की मिली। सबसे कम सिर्फ छह लाख पाली को जरूरत है।

बीकानेर में शिव वैली डंपिंग यार्ड में नगर निगम की ॰12.88 एकड़ जमीन है। यहां करीब 40 बीघा पर तो कब्जा है। इस कचरे की वजह से मास्टर प्लान की 60 फीट रोड व शिव वैली की 80 फीट रोड और करीब 6 एकड़ में फैला पार्क नष्ट हो रहा है। अब निगम सफाई कराने के बाद यहां राम जन्म भूमि आंदोलन में पुलिस की गोलियों से मारे गए कोठारी बंधुओं के नाम से पार्क बनायेगी।

राज्यपाल 15 को बीकानेर आयेंगे

बीकानेर, (कासं)। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे 15 अप्रैल को प्रात: 11 बजे नाल एयरपोर्ट पहुंचेंगे।

वे यहां से प्रात: 11:10 बजे महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय के लिए प्रस्थान करेंगे तथा विश्वविद्यालय के मीराबाई ऑडिटोरियम में प्रात: 11:30 बजे से आयोजित होने वाले राजस्थान पशु विज्ञान और पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में शिरकत करेंगे। राज्यपाल दोपहर 3 बजे महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित कार्यक्रम में भागीदारी निभाएंगे। राज्यपाल बागडे दोपहर 3:45 बजे नाल एयरपोर्ट के लिए प्रस्थान करेंगे। दोपहर 3.55 बजे नाल एयरपोर्ट पहुंचेंगे तथा यहां से वायुमार्ग द्वारा जयपुर के लिए प्रस्थान करेंगे। राज्यपाल के प्रस्तावित कार्यक्रम के मद्देनजर जिला कलेक्टर नम्रता वृष्णि ने विभिन्न अधिकारियों को कार्य प्रभारी अधिकारी नियुक्त करते हुए आवश्यक दिशा निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि समय रहते सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित करेंगे। अतिरिक्त जिला कलेक्टर(प्रशासन) रामावतार कुमावत राज्यपाल की संपूर्ण यात्रा की व्यवस्था के प्रभारी अधिकारी होंगे।

ऑटो में सोते चालक की हार्ट अटैक से मौत

बीकानेर, (कासं)। बीकानेर में हैड पोस्ट ऑफिस के आगे एक ऑटो में चालक आराम कर रहा था लेकिन काफी देर तक वापस नहीं उठा। आसपास के लोगों ने संभाला तो शरीर में हलचल नहीं थी। ऐसे में अस्पताल ले गए जहां डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया। माना जा रहा है कि ऑटो में आराम करते वक्त ही साइलेंट हार्ट अटैक से मौत हो गई।

खारा गांव के मेघवालों के मोहल्ले में रहने वाले संदीप मेघवाल ने पुलिस को बताया कि उसके पिता लक्ष्मणराम मेघवाल जूनागढ़ के पीछे हैड पोस्ट ऑफिस और अर्चना कलर लैब के पास ऑटो खड़ा करते हैं। सवारियां वहीं से लेकर वापस आकर खड़े हो जाते हैं। इस दौरान टैक्सी में आराम कर रहे थे। काफी देर तक हलचल नहीं होने पर आसपास के लोगों ने उसे जगाने का प्रयास किया लेकिन वो नहीं उठा।

इस पर राहगीर ही अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां डॉक्टर्स ने मृत घोषित कर दिया। बेटे की रिपोर्ट पर पुलिस ने मर्ग दर्ज किया है। माना जा रहा है कि सोते हुए ही हार्ट अटैक आने

■ **हलचल नहीं होने पर आसपास के लोगों ने उसे जगाने का प्रयास किया लेकिन वो नहीं उठा**

से उसकी मौत हो गई। शव पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया गया।

उधर नापासर थाना क्षेत्र में एक युवक ट्रेन की चपेट में आ गया। उसकी मौके पर ही मौत हो गई। नापासर के नायकों के मोहल्ले में रहने वाले प्रहलाद राम नायक (30) ने रेलवे क्रॉसिंग के पास ट्रेन के आगे आकर जान दे दी। पुलिस ने उसके भाई तोलाराम नायक की रिपोर्ट पर मर्ग दर्ज कर ली है।

वहीं हनुमानगढ़ पुलिस ने मादक पदार्थों के खिलाफ बड़ी कार्रवाई की है। पुलिस थाना पल्लू के थानाधिकारी सुशील कुमार और उनकी टीम ने सरदारशहर-हनुमानगढ़ मेगा हाईवे पर नाकाबंदी के दौरान एक युवक से 1 किलो अफीम बरामद की गई तथा उसे गिरफ्तार किया।

ठेले वाले पर बदमाशों ने गरम तेल डाला

बीकानेर, (कासं)। जिले के श्रीडूंगरगढ़ कस्बे के मुख्य बाजार में आपसी झगड़े में एक युवक पर बड़े-पकौड़े का गर्म खोलता हुआ तेल उंडेल दिया जिससे वह गंभीर घायल हो गया। हालांकि उसकी हालत खतरे से बाहर है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर बदमाशों की धरपकड़ के लिए प्रयास शुरू कर दिए हैं।

मोमासर बास में रहने वाले राजू कुंजड़ा ने बताया कि वो कस्बे में घूम चक्कर के पास बड़े-पकौड़े बनाकर अपने परिवार का पेट पालता है। दोपहर करीब 3 बजे वो अपने ठेले पर बड़े-पकौड़े बना रहा था और बड़ा भाई साबिर भी ठेले पर काम कर रहा था। उसी वक्त चार पांच युवकों ने ठेले के आगे ही पीपे लगा दिए। विरोध करने पर

■ **जिस तेल में पकौड़े तल रहा था, वो ही गरम तेल डालने से युवक झुलसा**

मारपीट की गई।

पुलिस को दिए परिवाद में आरोप है कि राजू व साबिर के साथ मारपीट की गई। थाप मुक्कों व लाठी से मारपीट करने लगे, तब पास ही ठेला लगाने वालों ने बीच बचाव किया। इसी दौरान उस पर गर्म तेल भी डाल दिया, जिससे पेट व हाथ जल गए। आरोप लगाया गया है कि दस पंद्रह और युवकों को लाकर जान से मारने की धमकी दी गई। राजू ने इस मामले में एफआईआर में चार युवकों के नाम भी दिए हैं।

जल मंदिर का उद्घाटन

श्रीडूंगरगढ़, (कासं)। उपखंड श्रीडूंगरगढ़ के गांव उदरासर के दलीप कुमार व देदाराम पंचारिया द्वारा निर्मित जल मंदिर का उद्घाटन किया। कार्यक्रम में ग्रामवासियों, विद्यालय की व्याख्याता सुषमा सैन व स्टाफ द्वारा विधायक सारस्वत का भव्य स्वागत किया। विधायक के निजी सहायक सुधीर व्यास ने बताया कि विधायक सारस्वत ने कहा कि छात्र शक्ति को ही राष्ट्र की शक्ति कहा जाता है। विद्या एक ऐसा धन है, जिसकी कभी भी लूट नहीं हो सकती। पढ़ाई में कभी चूक न करें। क्योंकि इसी के आधार पर संसार के सामने आपके अस्तित्व का निर्माण होता है। सफलता के लिए मेहनत और लगन बहुत जरूरी है, बिना इनके सफलता का रास्ता कठिन होता है। शिक्षा एक ऐसा साधन है जिससे व्यक्ति बहुत बड़ा मुकाम हासिल कर सकता है।

12 किलो 855 ग्राम अवैध गांजा सहित गिरफ्तार

बीकानेर, (कासं)। एसपी कावेन्द्र सिंह सागर के निर्देशन में पुलिस की ओर से नशे पर लगाम व तस्करों की धरपकड़ के लिए चलाए जा रहे ऑपरेशन फ्लैश आउट के तहत लगातार कार्रवाई जारी है।

नोखा पुलिस व डीएसटी टीम ने संयुक्त रूप कार्रवाई करते हुए अवैध मादक पदार्थ गांजे के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। कार्रवाई में चूना भट्टा के पास नोखा निवासी राजाराम पुत्र शंकरलाल बिश्नोई को 12 किलो 855 ग्राम गांजा के साथ गिरफ्तार किया है। पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट में मुकदमा दर्ज कर मामले की जांच पांचू थानाधिकारी रामकेश मीणा को सौंपी गई है।

■ **नोखा पुलिस व डीएसटी टीम ने संयुक्त रूप से कार्रवाई की**

नोखा थानाधिकारी ने कार्रवाई की जानकारी देते हुए बताया कि पुलिस मुख्यालय जयपुर द्वारा अवैध मादक पदार्थ के संबंध मे चलाये गये विशेष अभियान के तहत बीकानेर रेंज आईजी ओमप्रकाश पासवान द्वारा चलाये गये ऑपरेशन फ्लैश आउट के तहत एसपी कावेन्द्र सिंह सागर के निर्देशानुसार एएसपी (ग्रामीण) कैलाश सिंह सान्दू व नोखा सीओ हिमांशु शर्मा के निकट सुपरविजन में पुलिस थाना नोखा के नेतृत्व में डीएसटी टीम बीकानेर व थाना की टीम द्वारा आसुचना पर एनडीपीएस एक्ट की कार्यवाही की गई. जिसमें राजाराम पुत्र शंकरलाल जाति विश्नोई निवासी चूना भट्टा के पास नोखा पुलिस थाना नोखा जिला बीकानेर के कब्जे के चूना भट्टा के पास स्थित मकान से 12 किलो 855 ग्राम अवैध मादक पदार्थ गांजा जब्त किया गया।

आरोपी राजाराम के विरूद्ध एनडीपीएस एक्ट की धाराओं के तहत प्रकरण दर्ज कर अनुसंधान पांचू थानाधिकारी रामकेश को सौंपा गया है। आरोपी राजाराम से अवैध मादक पदार्थ गांजा खरीदने व बेचने के सम्बन्ध में विस्तृत पूछताछ व अनुसंधान जारी है।

पंच मंदिर में जैन तीर्थंकरों की प्राचीन प्रतिमाओं का ढाई घंटे तक अभिषेक

बीकानेर, (कासं)। जैन श्वेताम्बर तपागच्छ के श्रुत भास्कर वर्तमान विजय धर्मधुरंधर सूरिश्वर व माताजी महाराज अर्पण श्रीजी के सानिध्य में शनिवार को कोचरों के चौक के पंच मंदिर में मंत्रोच्चारण के साथ ढाई घंटे तक अविरल जैन तीर्थंकरों की प्राचीन प्रतिमाओं का अभिषेक किया गया।

जैनाचार्य गच्छाधिपति विजय धर्मधुरंधर सूरिश्वर, मुनि विजय धर्मकीर्ति व मुनि विजय धर्मबोद्धि महाराज ने अपने मुखारबिंद से मंत्रोच्चारण करवाते हुए बड़ी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने पूजा के वस्त्रों में पंचामृत से अभिषेक किया। अभिषेक दूध, दही, घी, केवड़ा व गुलाब जल, सात कुओं के जल का उपयोग किया गया। पंच मंदिर में भगवान ऋषभनाथ, अजितनाथ, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान विमलनाथ व भगवान शांतिनाथ के मंदिर में श्रावक-श्राविकाओं ने एक साथ अभिषेक किया। अभिषेक में स्थानीय

धर्मधुरंधर सूरिश्वर व माताजी महाराज अर्पण श्रीजी के सानिध्य में शनिवार को कोचरों के चौक के पंच मंदिर में मंत्रोच्चारण के साथ जैन तीर्थंकरों की प्राचीन प्रतिमाओं का श्रद्धालुओं ने अभिषेक किया।

श्रावक-श्राविकाओं के साथ पंजाब, हरियाणा व दिल्ली से आये बड़ी चलो मां विशला के धाम पदयात्रा व मंदिर में पूजा तथा प्रसाद का आयोजन रखा गया है।

संघ के मंत्री विजय कोचर ने बताया कि जैनाचार्य व साध्वी वृंद सुबह सात बजे रांगड़ी चौक की पौषधशाला से गाजे बाजे से श्रावक-श्राविकाओं के करीब साढ़े पांच किलोमीटर की दूरी तय कर कोचरों की

■ **मां विशला के धाम पदयात्रा व मंदिर में पूजा तथा प्रसाद का आयोजन आज**

कुलदेवी विशला माता के मंदिर करमीसर जायेंगे। जैन कोचर परिवार की कुलदेवी के करीब साढ़े चार सौ वर्ष प्राचीन देवी विशला माता के मंदिर में पूजा व प्रसाद के लाभार्थी कोचर फ्रेंड्स क्लब है। फ्रेंड्स क्लब ने श्रावक-श्राविकाओं को करमीसर से बीकानेर छोड़ने के लिए वाहन की व्यवस्था की है।

कोचर ने बताया कि 14 अप्रैल को कोचरों के चौक में सुबह सवा नौ बजे संक्रांति महोत्सव आयोजित किया जायेगा। महोत्सव में शामिल होने के लिए देश के विभिन्न प्रदेशों से श्रावक-श्राविकाओं के बीकानेर पहुंचने का सिलसिला शुक्रवार को ही शुरू हो गया।

महिला वर्ग में स्वर्ण पदक जीता

बीकानेर, (कासं)। महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित हो रही राष्ट्रीय स्तर की साईक्लिंग रोड रेस पुरूष एवं महिला प्रतियोगिता के आज तीसरे दिन मास स्टार्ट पुरूष एवं क्राइटेरियम महिला स्पर्धा का आयोजन किया गया।

आयोजन सचिव एवं खेलकूद निदेशक डॉ. यशवन्त गहलोत ने बताया कि आज तीसरे दिन मास स्टार्ट पुरूष स्पर्धा में लवली प्रोफेशनल विश्वविद्यालय के खिलाड़ी चिराग ने स्वर्ण पदक, रजत पदक भारतीदासन विश्वविद्यालय के किशोर एन ने कांस्य पदक, शिवजी विश्वविद्यालय के चोपड़े हनुमान यशवंत ने प्राप्त किया। इसी क्रम में क्राइटेरियम महिला स्पर्धा में महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय बीकानेर की पूजा बिश्नोई ने 25 प्वाइंट के साथ स्वर्ण पदक, वीर नरबदा साउथ गुजरात विश्वविद्यालय योगेश्वरी ने 08 प्वाइंट के साथ रजत पदक एवं शिवाजी विश्वविद्यालय की मुस्कान गुप्ता ने 07 प्वाइंट के साथ कांस्य पदक प्राप्त किया।

कार्यालय प्राधिकृत अधिकारी, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

क्रमांक :- LU2012/SGN/2025&26/101317 लोक सूचना दिनांक :-11.04.2025

श्रीमती सुनीता देवी पत्नी श्री विकेश कुमार निवासी 29 पूजा कॉलोनी, गली नं. 01, श्रीगंगानगर ने इस कार्यालय में नीचे उल्लिखित भूमि का व्यावसायिक प्रयोजनार्थ के उपयोग हेतु ऐसी भूमि के अपने अभिधृति अधिकारों के निर्वापन के लिए आवेदन प्रस्तुत किया है, अर्थात् :-

क्र. सं.	ग्राम तहसील व जिले का नाम	खातेदार का नाम	खसरा सं. /भूमि का विवरण	क्षेत्रफल(हैक्टेयर)
1	चक 5 ई छोटी तहसील व जिला श्रीगंगानगर	श्रीमती सुनीता देवी पत्नी श्री विकेश कुमार	चक 5 ई छोटी मुरब्बा नं. 03 के किला नं. 14/8 में 0.0141 हैक्टे. यथाकुल 0.0141 हैक्टेयर	कुल 0.0141 हैक्टेयर

इसलिए, इसके द्वारा समस्त संबंधित व्यक्तियों को सूचित किया जाता है कि यदि किसी व्यक्तिको राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 90-क और राजस्थान अभिधृति अधिनियम, 1955 की धारा 63 के अधीन पूर्वोक्त प्रयोजनों के लिए भूमि के उपयोग हेतु अनुज्ञा प्रदान करने और अभिधृति अधिकारों के निर्वापन पर कोई आक्षेप है तो वह इस नोटिस के प्रकाशन के 7 दिन के भीतर-भीतर एसएसओ आईडी से लॉग इन कर 90-A For Development Authority (UDH) आईकॉन पर जाकर समर्थक दस्तावेज को अपलोड कर अपना आक्षेप दर्ज कर सकते है।

उपर्युक्तनियत समय के भीतर-भीतर किसी आक्षेप के अभाव में यह समझा जायेगा कि किसी को आक्षेप नहीं है और तदनुसार मामले का निपटारा किया जायेगा। यह सूचना मेरे हस्ताक्षर और मुहर के अधीन आज को जारी की गयी।

प्राधिकृत अधिकारी
नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर
दिनांक: 11.04.2025

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

Telefax No. 0154-2466652, Email :- uit_sgnr@yahoo.com Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001

क्रमांक :- नियोजन/2025/ **विज्ञप्ति** दिनांक : 11.4.2025

न्यास कार्यालय में श्री अमित सिंगल पुत्र श्री तरसेम सिंगल निवासी वार्ड नं. 16, नजदीक सत्संग भवन, रायसिंहनगर, जिला श्रीगंगानगर एवं श्री हेमन्त कुमार बठेजा पुत्र श्री रमेश कुमार बठेजा निवासी वार्ड नं. 21, 97 सी प्रेम नगर, श्रीगंगानगर द्वारा चक 3 ए छोटी मुरब्बा नं. 07 के किला नं. 13/1 में 0.019 है., किला नं. 14/1 में 0,008 है., किला नं. 17/1 व 24/1 प्रत्येक में 0.084 है., किला नं. 18/1 व 23/1 प्रत्येक में 0.207 है. कुल 0.609 हैक्टेयर एवं मुरब्बा नं. 11 के किला नं. 3/1, 8/1, 13/1 व 18/1 प्रत्येक में 0.207 है. किला नं. 4/1, 7/1, 14/1 व 17/1 प्रत्येक में 0.084 है., किला नं. 23/3 में 0. 157 है., किला नं. 24/3 में 0.064 है. कुल 1.385 है. यथाकुल 1.994 हैक्टयर भूमि आवासीय प्रयोजनार्थ की राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क की कार्यवाही न्यास आवेदन संख्या LU2012/SGN/2023-24/100642 दिनांक 21.04.2023 द्वारा आवासीय प्रयोजनार्थ आवेदित भूमि का दिनांक 26.06.2023 को आवासीय प्रयोजनार्थ 10 ए आदेश जारी है। आवेदित भूमि का ले आउट प्लान न्यास स्तर पर गठित एम्पावर्ड समिति की बैठक दिनांक 30.06.2023 के कार्यवाही विवरण क्रमांक नियोजन/2023/578 दिनांक 30.06.2023 के एजेण्डा संख्या 18 द्वारा स्वीकृत है। उक्त भूमि का प्रमाण पत्र क्रमांक नियोजन/2023/2027-2029 दिनांक 21.09.2023 एवं यूओनोट क्रमांक नियोजन /2023/2086 दिनांक 22. 09.2023 द्वारा जारी है। खातेदार/विकासकर्ता द्वारा आर्थिक स्थिति कमजोर होने एवं भूखण्डों का वैचान कम होने के कारण उपरोक्त योजना के विकास कार्य पूर्ण नहीं किये गये है। संबंधित खातेदार द्वारा योजना का नाम 'किंग्स वसुधा एन्कलेव' रखा गया है। जिस अनुसार न्यास कार्यालय द्वारा प्रमाण पत्र जारी है। उपरोक्त योजना के जारी प्रमाण पत्र में योजना का राजस्थान रियल एस्टेट (रेग्युलेशन एण्ड डवलपमेन्ट) रूल्स् 2017 के तहत पंजीयन करवाये जाने हेतु कार्यालय रजिस्ट्रार, राजस्थान रियल स्टेट रेग्यूलेटरी ऑथोरिटी, श्रीगंगानगर द्वारा एक ही नाम से अलग-अलग योजनाओं को रजिस्ट्रर्ड नहीं किया जा सकता। जिसका दुरुस्तीकरण किया जाना आवश्यक है। प्रकरण संख्या 100642 द्वारा स्वीकृत योजना का नाम परिवर्तन कर संशोधित नाम KINGS VASUDHA ENCLAVE C-BLOCK रखाते हुये एवं आन्तरिक विकास कार्य टाऊनशिप पॉलिसी 2010 के प्रावधानानुसार निर्धारित अवधि अनुसार संशोधित प्रमाण पत्र जारी किया जाना है। जारी प्रमाण पत्र, यूओनोट एवं अन्य संबन्धित समस्त पत्रावलियों में उक्त योजना का परिवर्तित नाम ही पढ़ा जावेगा एवं शेष शर्तें स्वीकृति पूर्वानुसार यथावत रहेगी। अतः उक्त स्वीकृत योजना के भूखण्डधारियों/पट्‌टाधारियों/हितबद्ध को सूचित किया जाता है कि योजना का प्रस्तावित नवीन परिवर्तित नाम KINGS VASUDHA ENCLAVE C-BLOCK किये जाने के संबंध में कोई आपत्ति हो तो समाचार पत्र में प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस की समयावधि में लिखित में आपत्ति सचिव नगर विकास न्यास श्रीगंगानगर को कार्यालय समय में प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित समयावधि के पश्चात् प्राप्त आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा। Rajkaj Ref. No. 14722545 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

राजस्थान सरकार, कार्यालय नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर (राज.)

Telefax No. 0154-2466652, Email :- uit_sgnr@yahoo.com Off. Add:- UIT Office, Model Town, Sri Ganganagar (Raj.) 335001

क्रमांक :- नियोजन/2025/ **विज्ञप्ति** दिनांक : 11.4.2025

न्यास कार्यालय में श्री अभिताभ खेरवा पुत्र श्री भरतराम निवासी 18 जी.जी. गोविन्दपुरा श्रीगंगानगर एवं श्री अशोक गुप्ता पुत्र श्री मुरली मनोहर निवासी 3 बी 14 जवाहर नगर, श्रीगंगानगर द्वारा चक 3 ए छोटी मुरब्बा नं. 07 के किला नं. 3/3 में 0.048 हैक्टे. किला नं. 4/1 व 6 प्रत्येक में 0.228 हैक्टे. किला नं. 5/1 में 0.203 हैक्टे. किला नं. 7 में 0.253 हैक्टे. किला नं. 8/1 में 0.054 हैक्टे, किला नं. 13/3 में 0. 049 हेक्टे, किला नं. 14/2 में 0.230 हैक्टे, किला नं. 15/3 में 0.207 हैक्टे. यथाकुल 1.500 हैक्टयर भूमि आवासीय प्रयोजनार्थ की राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम 1956 की धारा 90-क की कार्यवाही न्यास आवेदन संख्या LU2012/SGN/2023-24/100697 दिनांक 22.06.2023 द्वारा आवासीय प्रयोजनार्थ आवेदित भूमि के दिनांक 17.07.2023 द्वारा 90-ए आदेश जारी है। आवेदित भूमि का ले आउट प्लान न्यास स्तर पर गठित एम्पावर्ड समिति की बैठक दिनांक 14.07.2023 के कार्यवाही विवरण क्रमांक नियोजन/2023/685 दिनांक 14.07.2023 के एजेण्डा संख्या 07 द्वारा स्वीकृत है। उक्त भूमि का प्रमाण पत्र क्रमांक नियोजन/2023/2079-2081 दिनांक 22.09.2023 एवं यूओनोट क्रमांक नियोजन/2023/2102 दिनांक 22. 09.2023 द्वारा जारी है। स्वीकृत ले आउट प्लान में प्रस्तावित संशोधन को न्यास स्तर पर गठित ले आउट प्लान समिति की बैठक दिनांक 25.09.2024 के पत्र क्रमांक नियोजन/2024/1011 दिनांक 30.09.2024 के एजेण्डा संख्या 04 द्वारा स्वीकृत कर अनुमोदन किया गया है। संशोधित यूओनोट क्रमांक नियोजन/2024/1674 दिनांक 18.10.2024 द्वारा जारी है। खातेदार/विकासकर्ता द्वारा आर्थिक स्थिति कमजोर होने एवं भूखण्डों का वैचान कम होने के कारण उपरोक्त योजना के विकास कार्य पूर्ण नहीं किये गये है। संबंधित खातेदार द्वारा योजना का नाम 'किंग्स वसुधा एन्कलेव' रखा गया है। जिस अनुसार न्यास कार्यालय द्वारा प्रमाण पत्र जारी है। उपरोक्त योजना के जारी प्रमाण पत्र में योजना का राजस्थान रियल एस्टेट (रेग्यूलेशन एण्ड डवलपमेन्ट) रूल्स् 2017 के तहत पंजीयन करवाये जाने हेतु कार्यालय रजिस्ट्रार, राजस्थान रियल स्टेट रेग्यूलेटरी ऑथोरिटी, श्रीगंगानगर द्वारा एक ही नाम से अलग-अलग योजनाओं को रजिस्ट्रर्ड नहीं किया जा सकता। जिसका दुरूस्तीकरण किया जाना आवश्यक है। प्रकरण संख्या 100697 द्वारा स्वीकृत योजना का नाम परिवर्तन कर संशोधित नाम KINGS VASUDHA ENCLAVE G-BLOCK रखाते हुये एवं आन्तरिक विकास कार्य टाऊनशिप पॉलिसी 2010 के प्रावधानानुसार निर्धारित अवधि अनुसार संशोधित प्रमाण पत्र जारी किया जाना है। जारी प्रमाण पत्र, यूओनोट एवं अन्य संबन्धित समस्त पत्रावलियों में उक्त योजना का परिवर्तित नाम ही पढ़ा जावेगा एवं शेष शर्तें स्वीकृति पूर्वानुसार यथावत रहेगी। अतः उक्त स्वीकृत योजना के भूखण्डधारियों/पट्‌टाधारियों/हितबद्ध को सूचित किया जाता है कि योजना का प्रस्तावित नवीन परिवर्तित नाम KINGS VASUDHA ENCLAVE G-BLOCK किये आने के संबंध में कोई आपत्ति हो तो समाचार पत्र में प्रकाशन की तिथि से 07 दिवस की समयावधि में लिखित में आपत्ति सचिव नगर विकास न्यास श्रीगंगानगर को कार्यालय समय में प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित समयावधि के पश्चात् प्राप्त आपत्ति पर विचार नहीं किया जावेगा। Rajkaj Ref. No. 14722355 - सचिव, नगर विकास न्यास, श्रीगंगानगर

सम्मन बनाम रेस्पोडेन्ट (आर्डर 41 रूल 14 जाबता दिवानी)
(Civil Procedure Code Appendix 'G' Form No. 60)

अज अदालत राजस्व अपील प्राधिकारी, हनुमानगढ़ क्रमांक : 207 दिनांक : 01/04/2025
अपील सुनिता देवी बनाम कृष्णलाल आदि

अपील बाबत धारा 223 राज. काश्तकारी अधिनियम
अपील नम्बर - 308/2024

अपील बनाराजगी फैसला हुक्म अदालत सहायक कलक्टर एवं उपखण्डाधिकारी नोहर, तारीख 02 माह 04 सन् 2024
सुनीता देवी पुत्री हरिराम जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़। बनाम
1. कृष्णलाल पुत्र मेघराज जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 2. गंगाराम पुत्र हरिराम जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 3. कृष्ण कुमार पुत्र काशीराम जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 4. भीमसैन पुत्र मेघराज जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 5. रिछपाल पुत्र मेघराज जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 6. ओम प्रकाश पुत्र हरिराम जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 7. राहुल पुत्र मोहनलाल जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 8. हनुमान प्रसाद पुत्र काशीराम जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 9. गुड्डी पुत्री मेघाराम उर्फ मेघराज जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 10. मोहनी पुत्री मेघाराम उर्फ मेघराज जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 11. दुर्गा पुत्री मेघाराम उर्फ मेघराज जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 12. कौशल्या पुत्री मेघाराम उर्फ मेघराज जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 13. अंगूरी पुत्री मेघाराम उर्फ मेघराज जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 14. सरोज पुत्री मेघाराम उर्फ मेघराज जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 15. रूकमा पत्नी हरिराम जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 16. पुष्पा पुत्री हरिराम जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 17. कल्पना पत्नी मोहनलाल जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 18. मनीषा पुत्री मोहनलाल जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 19. शैली उर्फ शिल्पा पुत्री मोहनलाल जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 20. संतोष पुत्री काशीराम जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 21. राजस्थान राज्य जरिये तहसीलदार राजस्व नोहर तहसील नोहर।, 22. कला देवी पुत्री जेठी जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 23. विमला पुत्री जेठी जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 24. लिछमा पुत्री जेठी जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 25. गुड्डी पुत्री जेठी जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 26. पल्लो पुत्री जेठी जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 27. विमला पत्नी प्रेम कुमार जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 28. छगन पुत्र प्रेम कुमार जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 29. सुभाष पुत्र प्रेम कुमार जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 30. पवन पुत्र प्रेम कुमार जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 31. चन्दो पुत्री प्रेम कुमार जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 32. सीता पुत्री प्रेम कुमार जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 33. किरण पुत्री प्रेम कुमार जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 34. दयाला पुत्र गीता पुत्री केशर जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 35. पिरथी पुत्र गीता पुत्री केशर जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 36. गुड्डी पुत्री गीता पुत्री केशर जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 37. कमला पुत्री गीता पुत्री केशर जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 38. ओम प्रकाश पुत्र गीता पुत्री केशर जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 39. इमरती पुत्री गीता पुत्री केशर जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।, 40. सावत्री पुत्री गीता पुत्री केशर जाति ब्राह्मण निवासी पाण्डुसर तहसील नोहर जिला हनुमानगढ़।
जरिये हाजा इत्तिला दी जाती है कि अपीलान्ट ने इस मुकदमें में अपील पेश की है जो इस अदालत में दर्ज रजिस्टर में की गई है ओर वार शुक्रवार तारीख 25 माह 4 सन् 2025 की पेशी अदालत में अपील की सुनवाई मुकर्रर की गई है। अगर आपकी तरफ से खुद आयुक्त वकील ओर कोई शख्स जो कानून ने इस अपील से आपकी तरफ से पैरवी कर सकता हो हाजिर न हुआ तो अपील आपकी गैर हाजरी में सुनी व फैसला की जावेगा। बसब्त मेरे दस्तखत मोहर अदालत के आज तारीख 01 माह 4 सन् 2025 को जारी किया गया। - **राजस्व अपील प्राधिकारी हनुमानगढ़ (राज.)**

रोडवेज बस से 61 किलो डोडा-चूरा जब्त, दो महिलाओं सहित तस्कर गिरफ्तार

केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो टीम ने दो अलग-अलग स्थानों पर कार्रवाई की

कोटा, (निसं)। अवैध मादक पदार्थों व तस्करों के खिलाफ केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो टीम ने अलग-अलग जगहों पर कार्रवाई करते हुए रोडवेज बस से दो महिलाओं सहित एक व्यक्ति को पकड़कर उनके पास तलाशी के दौरान 61 किलो अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा बरामद किया। यह कार्रवाई उप-नारकोटिक्स आयुक्त नरेश बुंदेल के मार्गदर्शन में की गई है।

उप नारकोटिक्स आयुक्त नरेश बुंदेल ने बताया कि नशीली दवाओं के खिलाफ अभियान जारी रखते हुए कोटा और झालावाड़ संभाग के अफीम उत्पादक क्षेत्र में रोकथाम के लिये तैनात केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो (सीबीएन) भवानीमंडी के अधिकारियों ने अकलेरा-झालावाड़ से कोटा जा रही रोडवेज बस में गोबरिया बावड़ी बस स्टैंड कोटा से यात्रा कर रहे एक व्यक्ति को पकड़ा, जिसके पास तलाशी के दौरान उसके कब्जे से 20.800 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा से भरे दो बैग बरामद किये। उप नारकोटिक्स आयुक्त ने बताया कि कानूनी औपचारिकताएं पूर्ण करने के बाद दो बैगों से बरामद किये गये अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा को एनडीपीएस एक्ट में जब्त कर एक व्यक्ति को गिरफ्तार किया गया। मामले में आगे की जांच प्रकिया जारी है।

केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो की टीम ने दो बैग में भरा डोडा-चूरा बरामद किया।

केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो के उप नारकोटिक्स आयुक्त नरेश बुंदेल ने बताया कि केन्द्रीय नारकोटिक्स ब्यूरो (सीबीएन) जयपुर के अधिकारियों ने देवली-जयपुर राजमार्ग पर सोनवा टोल प्लाजा के पास रोडवेज की बस में कार्रवाई करते हुए दो महिलाओं के पास से तीन बैगों से अवैध मादक पदार्थ 40.300 किलोग्राम अवैध डोडा-चूरा पाउडर बरामद किया। उप नारकोटिक्स आयुक्त नरेश बुंदेल ने बताया कि मुखबिर से सूचना मिली कि पंजाब निवासी दो महिलाएं राजस्थान रोडवेज की बस में बस्सी चित्तौड़गढ़ से जयपुर के रास्ते पंजाब में तस्करी का अवैध डोडा-चूरा पाउड़र ले जा रही है।

उन्होंने बताया कि उक्त सूचना पर सीबीएन जयपुर के अधिकारियों की एक टीम गठित की गई और उक्त बस व व्यक्तियों को पकड़ने के लिये भेजा गया। उप नारकोटिक्स आयुक्त ने बताया कि रोडवेज बस को सोनवा टोल प्लाजा देवली-जयपुर हाईवे पर रोका गया और बस की तलाशी ली गई। उप नारकोटिक्स आयुक्त ने बताया कि टीम ने कार्रवाई करते हुए बस में तलाशी के दौरान तीन बैगों से 40.300 किलोग्राम अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा पाउडर बरामद किया। उन्होंने बताया कि टीम ने कानूनी कार्यवाही कर अवैध मादक पदार्थ डोडा-चूरा पाउडर को जब्त कर मादक पदार्थ तस्करी में शामिल दोनों महिलाओं को एनडीपीएस एक्ट में गिरफ्तार किया। मामले में आगे की जांच की जा रही है।

- **अकलेरा-झालावाड़ से कोटा जा रही रोडवेज बस व देवली-जयपुर राजमार्ग पर सोनवा टोल प्लाजा के पास रोडवेज की बस में कार्रवाई की**

मौसम खराबी से दिल्ली से बीकानेर आकर वापस लौटा विमान

मौसम खराब होने के कारण दिल्ली से बीकानेर पहुंचा ये विमान लैंडिंग नहीं कर पाया

बीकानेर, (निसं)। बीकानेर से दिल्ली के बीच चलने वाली विमान सेवा का उपयोग करने वाले यात्रियों को परेशान होना पड़ा। मौसम खराब होने के कारण दिल्ली से बीकानेर पहुंचा ये विमान लैंडिंग नहीं कर पाया। ये विमान बीकानेर तक पहुंचकर वापस जयपुर के लिए निकल गया, जहां एक बार लैंडिंग हुई लेकिन फिर बीकानेर के लिए उड़ान भरने के बाद इसे दिल्ली में उतारना पड़ा। परेशान यात्रियों को आखिरकार कार टेक्सी से बीकानेर भेजा गया।

जानकारी अनुसार दिल्ली से बीकानेर आने वाली फ्लाइट बीकानेर सिविल एयरपोर्ट तक पहुंच गई लेकिन मौसम खराब होने के कारण इसे नीचे नहीं उतारा गया। पायलट ने विमान को बीकानेर एयरपोर्ट पर उतारने के बजाय जयपुर की ओर मोड़ लिया। जयपुर में ये विमान लैंड हुआ। यहां मौसम ठीक होने पर फिर से बीकानेर के लिए फ्लाइट उड़ी लेकिन बीच रास्ते में फिर से मौसम बिगड़ गया। ऐसे में पायलट ने इसे दिल्ली के लिए ही मोड़ दिया। दिल्ली में फ्लाइट उतरने के बाद यात्रा को रद्द कर दिया गया। ऐसे में दिल्ली से बीकानेर और बीकानेर से दिल्ली जाने वाले यात्रियों को परेशान होना पड़ा। आपातकाल में टिकट करवाकर जाने वाले यात्रियों को तो एयरपोर्ट प्रशासन ने टेक्सी करवाकर दिल्ली भेजा। वहीं दिल्ली से भी यात्रियों को कार टेक्सी में ही बीकानेर आना पड़ा। बताया जा रहा है कि विमान में सीमित मात्रा में इंधन होता है, ऐसे में ज्यादा समय तक उसे हवा में रखना संभव नहीं था। लिहाजा बीकानेर एयरपोर्ट के ऊपर उड़ते हुए मौसम सुधरने का इंतजार करने के बजाय इसे जयपुर ले गए। यात्रियों की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए पायलट ने निर्णय लिया और बीकानेर पहुंचकर भी सभी को वापस लेकर दिल्ली पहुंच गए।

- **मौसम में गड़बड़ी के कारण जयपुर से वापस दिल्ली गया, यात्री परेशान रहे**

कार-ट्रोला की भिड़ंत में कार चालक की मौत, तीन घायल

हनुमानगढ़, (निसं)। यहां पल्लू थाना क्षेत्र में भारतमाला राष्ट्रीय राजमार्ग पर धीरदेशर की रोही के पास देर रात एक कार ने ट्रोले को पीछे से टक्कर मार दी। दुर्घटना में कार चालक मानक (40) की मौके पर ही मौत हो गई। कार में सवार राकेश (32), उनकी पत्नी शर्मिला (32) और 5 वर्षीय बेटी यशस्वी घायल हो गए। तीनों घायलों को हनुमानगढ़ ट्रोमा सेंटर में भर्ती कराया गया है।

पल्लू थानाधिकारी सुशील कुमार के अनुसार, हादसा रात करीब एक बजे हुआ। कार सवार नोखा (बीकानेर) से सीतो (पंजाब) के लिए दर्शन करने जा रहे थे। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि कार बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गई। पल्लू और पीलीबंगा पुलिस मौके पर पहुंची। मृतक के शव को पल्लू के राजकीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की मॉर्च्युरी में रखा गया है। पुलिस ने दोनों क्षतिग्रस्त वाहनों को हटाकर यातायात बहाल किया है। प्रारंभिक जांच में तेज रफ्तार को हादसे का कारण माना जा रहा है।

कोचिंग सेंटर से लैपटॉप सहित नगदी चोरी

अजमेर, (कासं)। शहर में चोरी की वारदातें थमने का नाम नहीं ले रही है। क्लॉक टावर थाना क्षेत्र के केसरगंज स्थित बाबू मोहल्ला में अज्ञात चोरों ने एक कोचिंग सेंटर को निशाना बनाते हुए सेंटर से कीमती सामान सहित नगदी पर हाथ साफ कर फरार हो गए।

अज्ञात चोर पीछे के रास्ते से सेंटर में दाखिल हुए और चोरी की वारदात को अंजाम देकर फरार हो गए। सेंटर मालिक ने पुलिस में अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी हे।

क्लॉक टावर थाना पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार बाबू मोहल्ला केसरगंज में कोचिंग सेंटर संचालक मयंक ने थाने में रिपोर्ट दी है कि उनके कोचिंग सेंटर में बीती रात अज्ञात चोर पीछे के रास्ते से घुसे और ऑफिस में रखे लैपटॉप, पानी की मोटर और दस हजार रूपए नगद चुरा कर ले गए। घटना का पता सुबह सेंटर खोलने पर चलाए जब सामान अस्त-व्यस्त मिला। पुलिस ने मयंक की रिपोर्ट के आधार पर मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

- **घटना का पता सुबह सेंटर खोलने पर चलाए जब सामान अस्त-व्यस्त मिला**

अवैध पोस्त-चूरा बरामद, दो जने गिरफ्तार

पंजाब नंबर के ट्रक से 33 किलो 820 ग्राम अवैध पोस्त-चूरा बरामद किया

सादुलपुर, (निसं)। स्थानीय पुलिस ने राजगढ़-चूरू राष्ट्रीय राजमार्ग 52 पर नाकाबंदी के दौरान एक ट्रक को जब्त कर 33 किलो 820 ग्राम अवैध पोस्त-चूरा बरामद कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी राजेश कुमार सिहाग ने बताया कि शनिवार दोपहर बाद नाकाबंदी के दौरान चूरू की ओर से आ रहे एक पंजाब नंबर के ट्रक को जांच के लिए रुकवाया गया।

चालक से ट्रक में क्या भरा हुआ है आदि पूछताछ करने पर चालक घबरा गया तथा कोई संतोषजनक जवाब नहीं दे पाया जिस पर ट्रक में सवार चालक से नाम पता पूछा तो अपना नाम विकास कुमार पुत्र कृष्ण कुमार जाट, पास बैठे हुए व्यक्ति ने अपना नाम सुशील कुमार पुत्र हनुमान सिंह बिश्नोई निवासी धांगड़ पुलिस थाना सदर फतेहाबाद जिला फतेहाबाद हरियाणा होना बताया। पुलिस ने ट्रक के केबिन की तलाशी ली तो एक प्लास्टिक कट्टे में भरा हुआ 33 किलो 820 ग्राम अवैध पोस्त-चूरा बरामद किया। पुलिस ने दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर ट्रक को जब्त कर लिया है। थानाधिकारी ने बताया कि प्रारंभिक पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि पोस्त चूरा 11 अप्रैल को रतलाम मध्य प्रदेश में स्थित तेजाराम जाट निवासी नागौर बीकानेर राजस्थानी ढाबा से लेकर आए हैं। पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट अंतर्गत मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पुलिस ने पोस्त-चूरा बरामद कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया।

दुपहिया वाहन चोरी करने वाली गैंग पकड़ी

उदयपुर, (निसं)। शहर के भुपालपुरा थाना पुलिस ने दुपहिया वाहन चोर गिरोह का खुलासा करते हुए अर्न्तजिला गैंग के छह आरोपियों को गिरफ्तार कर इनके कब्ज से चोरी किए गए 27 वाहनों को बरामद किया।

जिला पुलिस अधीक्षक योगेश गोयल के निर्देश पर वाहन चोरी की वारदातों पर अंकुश लगाने एवं अपराधियों की धरपकड़ के आदेश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक उमेश ओझा, पुलिस उप अधीक्षक छगन पुरोहित के सुपरविजन में भुपालपुरा थानाधिकारी आदर्श कुमार के नेतृत्व में एएसआई अमृतलाल मय टीम ने अनुसंधान में मिले साक्ष्यों के आधार पर देवीलाल पुत्र कालुलाल रावत निवासी नाई कॉलोनी वाना खेरोदा को बाइक चोरी मामले में डिटेन किया।

जिसने पूछताछ में गैंग के अन्य सदस्यों के नाम शिवलाल पुत्र भीमलाल निवासी मैनार खैरोदा, लक्ष्मणलाल पुत्र चुन्नीलाल निवासी खेडली का वेला मैनार खैरोदा, लक्ष्मण पुत्र चतरा भील निवासी दईमाता गोवर्धन विलास, रवि खटीक पुत्र मदनलाल निवासी खटीक मोहल्ला मंगलवाड़, ओमप्रकाश पुत्र भेरूलाल खटीक निवासी खटीक मोहल्ला हथियाना कपासन के साथ मिल कर दुपहिया वाहन चोरी की वारदातों को अंजाम देना बताया। इस पर आरोपियों को गिरफ्तार कर इनके कब्जे से चोरी किए गए 27 दुपहिया वाहनों को जब्त किया। गैंग का सरगना देवीलाल है तथा साथी रवि मंगलवाड़ा थाने का हिस्ट्रीशिटर होकर उसके खिलाफ सात प्रकरण दर्ज है। ओमप्रकाश के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के दो प्रकरण, लक्ष्मण भील के खिलाफ एक एक प्रकरण दर्ज है। देवीलाल व रवि ने नये साथियों को गैंग मेंशामिल कर तीन चार माह में वाहन चोरी की वारदातों को अंजाम देकर सस्ते में बेचना बताया। पूछताछ में आरोपियों ने भुपालपुरा थाना क्षेत्र से 10, हिरणमगरी क्षेत्र से 8, सूरजपोल क्षेत्र से 2 एवं सांवरियाजी, डबोक, वल्लभनगर, प्रतापनगर थाना क्षेत्रों से एक एक वाहन चोरी करना स्वीकार किया।

मंदिर से दानपेटी चोरी : उदयपुर शहर के नाई थाना क्षेत्र में स्थित मंदिर से चोर दानपेटी चुरा ले गए। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार नाई थाना क्षेत्र धार स्थित वैष्णोदेवी मंदिर का 11 अप्रेल रात में अज्ञात चोर ताला तोड़ कर दानपेटी चुरा ले गए। इसका पता चलने पर प्रबंधक मोहनलाल पुत्र छगनलाल गुर्जर गोरेला नाई ने पुलिस को सूचना कर प्रकरण दर्ज करवाया। मामले की जांच हेडकांस्टेबल हंसराज कर रहे हैं।

- **छह आरोपी गिरफ्तार, 27 दुपहिया वाहन बरामद किये**

निवेश के नाम पर धोखाधड़ी की

उदयपुर, (निसं)। निवेश के नाम पर पीड़ित के खाते का दुरूपयोग कर धोखाधड़ी करने वाले के खिलाफ पुलिस ने प्रकरण दर्ज किया। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार पीड़ित मेहता दिव्येश पुत्र जयेश भाई जैन निवासी हाउसिंग बोर्ड सलाना रोड़ ए डिविजन मोवरी गुजरात ने आरोपी राजेवीर सैनी व कुलदीप के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया जिसमें पीड़ित ने बताया कि आरोपियों से संपर्कहोने पर उन्होंने निवेश करने के लिए लोटस कंपनी में काम करने के लिए करंट खाते की आवश्यकता होना बताया तथा उपयोग किए जाने वाले खाते के एवज में एक प्रतिशत लाभ देने की भी बात कही।

नीम हकीम के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज

उदयपुर, (निसं)। प्रसव पश्चात पीड़िता की मौत होने पर पति ने नीम हकीम के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया।

पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसर जिले के बावलवाड़ा थाना क्षैत्र सामगवाड़ा फला सामरेट बावलवाड़ा निवासी हरिश पटेला पुत्र रामजी पटेला ने ई-मित्र के साथ क्लिनीक चलाने वाले सामरेट सागतवाड़ा बावलवाड़ा निवासी डॉ. दिनेश पटेला के खिलाफ प्रकरण दर्ज करवाया जिसमें पीड़ित ने बताया कि 10 अप्रेल को मेरी पत्नी के पेट दर्द होने से आरोपी के क्लिनिक पर ले गए। जहां इंजेक्शन लगाने के बाद मेरी पत्नी पुष्पा ने बच्ची को जन्म दिया। कुछ देर बाद उसकी मौत हो गई। इसकी सूचना मिलने पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ प्रकरण दर्ज कर लिया है। जिसकी जांच थानाधिकारी गणेपतसिंह कर रहे है। आरोपी ईमित्र व क्लिनीक चलाता था। इस दौरान आने वाले बीमार ग्रामीणों का उपचार भी किया करता था। इसको लेकर पडताल की तो आरोपी के पास किसी प्रकार की चिकित्सालय करने को लेकर लाईसेंन्स नहीं होने की जानकारी सामने आई है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

गंदे पानी की समस्या से परेशान वार्डवासियों ने प्रदर्शन किया

महिलाओं ने पूर्व पार्षद के घर पर जाकर प्रदर्शन किया और कहा कि गंदा पानी नहीं चाहिए

महिलाओं ने गंदे पानी की समस्या को लेकर प्रदर्शन किया।

झुंझुनूं, (निसं)। शहर में एक तरफ पानी सप्लाई की समस्या है। तो वहीं जहां पानी पहुंच रहा है, वहां पर भी समस्या साथ ही पहुंच रही है। समस्या को लेकर झुंझुनूं शहर के वार्ड नंबर 26 व 28 के लोगों ने पूर्व पार्षद के घर के बाहर प्रदर्शन किया।

जानकारी के अनुसार झुंझुनूं शहर के वार्ड नंबर 26 व 28 में पहले ट्यूबवैल से पानी सप्लाई किया जाता था, लेकिन कुछ समय से उनका ट्यूबवैल कनेक्शन हटाकर उन्हें कुंभाराम लिफ्ट कैनाल परियोजना के अंतर्गत नहरी पानी की सप्लाई की जाने लगी है। वार्ड के लोगों का आरोप है कि यह पानी ना केवल गंदा और बदबूदार आता है, बल्कि कई बार पानी में कीड़े भी आते हैं। इस पानी को कोई काम में नहीं ले सकता। कभी-कभार साफ करके और उबालकर पानी काम में भी ले लेते हैं तो शरीर में खुजली जैसी शिकायतें या फिर बच्चों को उलटी-दस्त जैसी शिकायतें होने लगती है। अब वे परेशान हो चुके हैं, उनके पानी के कनेक्शन ट्यूबवैल से वापिस करवाने की मांग को लेकर दो वार्डों की महिलाएं बड़ी संख्या में पूर्व पार्ष सादा के घर पहुंची और प्रदर्शन किया। साथ ही चेताया कि यदि उनका कनेक्शन फिर से ट्यूबवैल से नहीं जोड़ा जाएगा तो वे उग्र प्रदर्शन करेगी।

- **आरोप है कि यह पानी ना केवल गंदा और बदबूदार आता है, बल्कि कई बार पानी में कीड़े भी आते हैं**

दुधवा में अवैध खनन को लेकर ग्रामीणों ने विरोध प्रदर्शन किया

ग्रामीणों ने प्रशासन से अवैध खनन पर प्रभावी रोक लगाने की मांग की, कार्रवाई नहीं होने पर बड़े प्रदर्शन की चेतावनी दी

खेतड़ी, (निसं)। खेतड़ी उपखण्ड के दुधवा में ग्रामीणों ने अवैध खनन को लेकर विरोध प्रदर्शन किया। इस दौरान ग्रामीणों ने प्रशासन से प्रभावी रोक लगाने की मांग की है।

विरोध कर रहे ग्रामीणों ने बताया कि दुधवा गांव में बाहर से आकर लोगों द्वारा अवैध रूप से खनन किया जा रहा है। आबादी क्षेत्र से करीब 20 मीटर की दूरी पर ही आयरन पत्थर की लीज है, जिसमें अवैध खनन माफिया देर रात को अवैध रूप से भारी ब्लास्टिंग करते हैं। आए दिन होने वाली ब्लास्टिंग से बस्ती के अनेक मकानों में दरारें आ गई हैं। इसके अलावा अवैध भारी ब्लास्टिंग से आयरन मिनरल के पत्थर उनके घरों में आकर गिरते है, जिससे कभी भी बड़ा हादसा हो सकता है। हैवी ब्लास्टिंग से ग्रामीण भय के साए में जीने को मजबूर है। ग्रामीण बेगराज गुर्जर ने बताया कि अवैध खनन को लेकर प्रशासन को बार-बार सुचित कर चुके हैं लेकिन प्रशासन कोई प्रभावी कार्रवाई नहीं कर रहा है। उन्होंने बताया कि यदि जल्द अवैध खनन पर कार्रवाई नहीं हुई तो तो ग्रामीणों की ओर से बड़ा आंदोलन किया जाएगा।

परिवार बिखरा पुत्रवधु सुसराल छोड पिहर में रहने को मजबूर :-ग्रामीण राजबाला ने बताया कि जनवरी माह में बेटे का विवाह हुआ था। उसकी पुत्रवधु घर पर काम कर रही थी तभी माइनिंग में अवैध ब्लास्टिंग हुई और ब्लास्टिंग से कई पत्थर आकर हमारे घर पर गिरे। इस दौरान पत्थर उसकी पुत्रवधु प्रियंका और सविता के सिर पर आकर लगे, वो चोटिल हो गई। ऐसा इनके साथ कई बार हो गया जिससे उसकी दोनों पुत्रवधु अवैध ब्लास्टिंग से भयभीत हो गई और अपने पिहर जाकर रहने लग गई। इन खनन माफियों कि वजह से उनका घर बिखर गया।

राजनीतिक संरक्षण में चल रहा है अवैध खनन :- ग्रामीण मनीष घुमरिया ने विरोध प्रदर्शन करते हुए बताया कि छह माह पहले तक यह लीज बिल्कुल बंद थी, लेकिन राजनैतिक संरक्षण मिलने से अवैध खनन माफिया का हौसला बुलंद है। उन्होंने फिर से लीज को चालू कर ली और अवैध खनन करना शुरू कर दिया। ग्रामीणों ने कई बार उपखंड अधिकारी खेतड़ी को भी कई बार अवगत करवा दिया, लेकिन खनन माफिया को राजनैतिक संरक्षण प्राप्त होने प्रशासन भी कार्रवाई करने से कतराता है।

क्षेत्रीय विधायक को भी कर चुके हैं शिकायत :-ग्रामीणों बताया कि इस मामले को लेकर 8 अप्रैल को क्षेत्रीय विधायक से मिले और अपनी पीड़ा बताई, लेकिन अभी तक भी खनन माफिया भारी ब्लास्टिंग कर रहे हैं। विधायक ने आश्वासन दिया था कि खनन माफिया पर जल्द ही कार्रवाई होगी, लेकिन अभी तक कुछ नहीं हुआ। आखिर ग्रामीण जाए तो किसके पास जाए।

ग्रामीणों ने बताया कि शासन प्रशासन अवैध खनन पर कोई भी कार्रवाई नहीं करता है, तो मजबूर हो कर ग्रामीण उपखण्ड कार्यालय खेतड़ी पर बड़ा विरोध प्रदर्शन करेंगे। उन्होंने बताया कि ग्रामीण अपने परिवार, पशुओं के साथ उपखण्ड कार्यालय खेतड़ी का घेराव करेंगे और वही धरना देंगे और जब तक नहीं उठेंगे जब तक अवैध खनन बंद नहीं होगा और अवैध खनन माफिया पर कोई कानूनी कार्रवाई नहीं होती। इस विरोध प्रदर्शन में हवासिंह, जगदीश, महेन्द्र, सुरेन्द्र, अशोक, सरजित, बंशीधर, रोहताश, धीरज, प्रदीप, मुकेश, सुमन, रोहित, सुमन, सुमित्रा, राजबाला, संतोष, सारदा, पतासी, कुसुमलता, कृष्णा, इंदरा, रजनी, संजय, रामकिशन, संदीप, दलीप, विकास, अनिल, अजय, मंजीत, महावीर, मनीष, दाताराम सहित अनेक ग्रामीण जन मौजूद थे

खेतड़ी उपखण्ड के दुधवा में ग्रामीणों ने अवैध खनन को लेकर विरोध प्रदर्शन किया।

- **आरोप है कि आबादी क्षेत्र से करीब 20 मीटर की दूरी पर ही आयरन पत्थर की लीज है, जिसमें अवैध खनन माफिया देर रात को अवैध रूप से भारी ब्लास्टिंग करते हैं**
- **आए दिन ब्लास्टिंग से बस्ती के अनेक मकानों में दरारें आ गई हैं, ब्लास्टिंग से आयरन मिनरल के पत्थर उनके घरों में आकर गिरते हैं**

राजधानी जयपुर में धार्मिक आस्था पर एक माह में दूसरी बार हमला

लालकोठी सब्जी मंडी के पास शिव मंदिर में असामाजिक तत्वों ने मूर्तियां खंडित कीं

- पूरे इलाके में तनाव और आक्रोश का माहौल छाया, आरोपियों की गिरफ्तारी की पुरजोर मांग
- शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात, पुलिस ने की लोगों से शांति बनाए रखने की अपील

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। राजधानी जयपुर के बजाज नगर थाना इलाके में स्थित लाल कोठी सब्जी मंडी के पास शुक्रवार देर रात कुछ अज्ञात असामाजिक तत्वों द्वारा एक शिव मंदिर की मूर्तियों को खंडित (तोडफोड) करने की घटना सामने आई है। शनिवार सुबह श्रद्धालुओं ने खंडित मूर्तियों को देखा और तुरंत पुलिस को सूचना दी। वहीं इसके बाद पूरे इलाके में तनाव और आक्रोश का माहौल बन गया। लोगों ने इसे धार्मिक आस्था पर हमला बताते हुए प्रशासन से सख्त कार्रवाई की मांग की है। वहीं मौके पर पहुंची पुलिस के अधिकारियों से इस घटना को गलत बताते हुए आरोपियों की गिरफ्तारी की मांग की।

जयपुर के बजाज नगर थाना इलाके में स्थित लाल कोठी सब्जी मंडी के पास शुक्रवार देर रात कुछ अज्ञात असामाजिक तत्वों ने एक शिव मंदिर की मूर्तियों को खंडित कर दिया।

सहायक पुलिस आयुक्त (मालवीय नगर) आदित्य पुनिया ने बताया कि यह मंदिर सब्जी मंडी सहकार मार्ग के पास स्थित है। जहा एक अज्ञात शख्स शक्रवार देर रात मंदिर में घुसा और शिव परिवार की तीन-चार मूर्तियों को तोड़कर उन्हें क्षितग्रस्त कर दिया। नंदी की मूर्ति भी टूटने की स्थिति में मिली है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और मामले की जांच शुरू की। पुलिस की कई टीमें आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले जा रहे हैं ताकि आरोपियों की पहचान की जा सके।

सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने की कोशिश

इधर स्थानीय लोगों का कहना है कि यह सिर्फ मूर्तियों को नुकसान पहुंचाने की घटना नहीं है। बल्कि सामाजिक सौहार्द को बिगाड़ने की एक कोशिश है। प्रशासन से जल्द आरोपियों की गिरफ्तारी और सख्त कार्रवाई की मांग की जा रही है। फिलहाल पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है और इलाके में शांति व्यवस्था बनाए रखने के लिए अतिरिक्त पुलिस बल तैनात किया गया है। साथ ही स्थानीय लोगों से शांति बनाए रखने की अपील की गई है।

दुकानदारों व श्रद्धालुओं ने जताया विरोध

वहीं मंदिर में शिव परिवार की मूर्तिया खंडित करने की घटना की खबर फैलते ही स्थानीय दुकानदारों और श्रद्धालुओं ने विरोध जताया और अपनी दुकानें बंद कर पुलिस से जल्द कार्रवाई की मांग की गई।

सीसीटीवी फुटेज से कुछ लगे सुराग हाथ

एसीपी पूनिया ने बताया कि गोकुल सैनी ने बजाज नगर थाने में इस संबंध में शिकायत दी है। इसके बाद पुलिस ने मौके पर पहुंचकर घटनास्थल का निरीक्षण किया। उनके पास सीसीटीवी फुटेज उपलब्ध है और उनकी मदद से कुछ सुराग हाथ लगा है। जिन्हें ट्रेस आउट करके आरोपियों की तलाश कर रहे हैं। साथ ही मंदिर में मूर्ति की पुन: प्राण प्रतिष्ठा करने का फैसला मंदिर प्रशासन ने किया है। उनका जो भी निर्णय होगा प्रशासन उसमें सहयोग करेगा।

मंदिर संरक्षक गोपाल सैनी ने बताया कि मंदिर में तोड़फोड़ को लेकर पुलिस अपनी ओर से कार्रवाई कर रही है। उम्मीद है जल्द ही आरोपियों को पकड़ लेंगे। अभी हम नई मूर्तियां लाकर जल्दी ही उनकी प्राण प्रतिष्ठा करवाएगें।

गौरतलब है कि कुछ दिनों पहले सांगानेर इलाके में तेजाजी मंदिर में तोड़फोड़ के बाद अब बजाज नगर इलाके में एक और मंदिर में तोड़फोड़ किए जाने से स्थानीय लोगों और व्यापारियों में भारी आक्रोश है।

धूमधाम से मनाया बजरंग बली का जन्मोत्सव

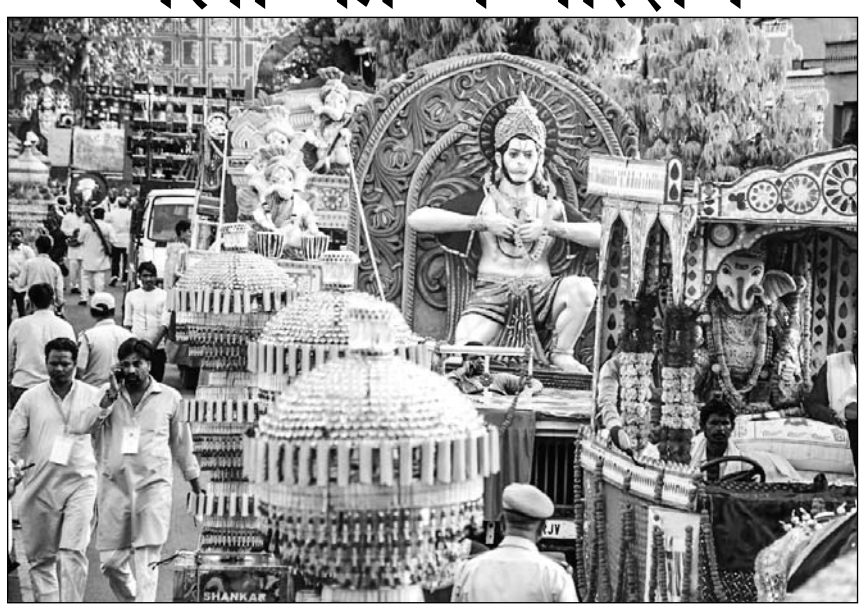

हनुमंत शोभायात्रा समिति की ओर से हनुमान जयंती पर 38वीं शोभायात्रा न्यूगेट स्थित रामलीला मैदान से गाजेबाजे और लवाजमे के साथ रवाना हुई।

शोभायात्रा में विदेशी सैलानियों ने भगवान की फोटो अपने मोबाइल में ली। वहीं राम-सीता बने पात्रों ने भी सैल्फी लेने का आनंद लिया।

जयपुर। ज्ञानियों में अग्रगण्य और अतुल बलशाली होते हुए भी स्वयं को प्रभु श्रीराम के चरणों का दास मानने वाले वीर बजरंग बली का जन्मोत्सव चैत्र पूर्णिमा शनिवार को धूमधाम से मनाया गया। छोटीकाशी स्थित हनुमान जी महाराज के सभी मंदिरों में सुबह से देर रात धार्मिक आयोजनों की धूम रही। विशेष झांकियां सजाई गई। रंगीन रोशनी और फूलों से सजे हनुमान मंदिरों में शाम को श्रद्धालु उमड़ पड़े। परिवार सहित पहुंचे भक्तों ने हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ किया। इससे पूर्व सुबह हनुमानजी का वेद मंत्रोच्चार के साथ अभिषेक किया गया। सिंदूरी चोला धारण कराकर नवीन पोशाक धारण कराई गई। ऋतु पुष्पों से मनोरम श्रृंगर कर महाआरती की। जयपुर के कुल देवता के रूप में पूजित घाट के बालाजी मंदिर में स्वामी सुदर्शनाचार्य महाराज के सान्निध्य में महाआरती की गई। सैंकड़ों की संख्या में दीप प्रज्जवलित किए गए। इससे पूर्व हनुमान जी का अभिषेक कर सिंदूरी चोला धारण कराया गया। नवीन पोशाक धारण कराकर विशेष श्रृंगार किया गया। स्वामी सुदर्शनाचार्य ने बताया कि बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने यहां हनुमान चालीसा और सुंदरकांड का पाठ किया। इस मौके पर हनुमत् यज्ञ भी हुआ। चांदपोल हनुमान, सांगानेरी गेट स्थित पूर्व मुखी-पश्चिमी मुखी हनुमान मंदिरों में सुबह से देर रात भक्तों का तांता लगा रहा। तीनों मंदिरों में हनुमान जी महाराज की झांकी आकर्षण का केन्द्र रही।

चांदी की टकसाल स्थित काले हनुमान जी मंदिर में महंत गोपालदास के सान्निध्य में हनुमत जन्मोत्सव भक्तिभाव से मनाया गया। युवाचार्य पं.योगेश शर्मा ने बताया कि संगीतमय सुंदरकांड पाठ के बाद छप्पन भोग की झांकी सजाई गई। पवनपुत्र का मनमोहक शृंगार किया गया। भजन संध्या भी हुई। बड़ी संख्या में पदयात्राएं मंदिर पहुंची।

लक्ष्मण डूंगरी स्थित खोले के हनुमान जी मंदिर में हनुमान जी का 108 औषधि द्रव्यों, विभिन्न तीर्थों के जल, फलों के रस से अभिषेक कर षोडशोपचार पूजन किया गया। कोलकाता के विशेष आर्किड, टाटा रोज और एन्थोरियम के फूलों से मनोरम श्रृंगार किया गया। करीब 200 क्विंटल फूलों से सजावट की गई। हनुमान जी महाराज को 61 किलो चांदी की पोशाक धारण कराई गई। मध्यान्ह में जन्मआरती हुई। सभी भक्तों को लड्डू का प्रसाद वितरित किया गया।

हाथोज के दक्षिण मुखी बालाजी मंदिर में महामंडलेश्वर बालमुकुंदाचार्य के सान्निध्य में विभिन्न धार्मिक आयोजन हुए। सुबह ब्रह्म मुहूर्त में पंचामृत अभिषेक के बाद फूल बंगला झांकी सजाई गई। झांकी रात बारह तक भक्तों के लिए खुली रही। सुबह से दोपहर तक संगीतमय सुंदरकांड पाठ हुए। विभिन्न गांवों से बड़ी संख्या में श्रद्धालु पदयात्रा के रूप में मंदिर पहुंचे। सभी पदयात्रियों का सम्मान किया गया। शाम को भजन संध्या में पवन पुत्र का गुणगान किया गया।

हनुमंत शोभायात्रा समिति की ओर से हनुमान जयंती पर 38 वीं शोभायात्रा न्यूगेट स्थित रामलीला मैदान से गाजेबाजे और लवाजमे के साथ रवाना हुई। संयोजक ध्रुवदास अग्रवाल और अध्यक्ष शंकरलाल अग्रवाल ने बताया कि फूलों से सुसज्जित मुख्य रथ में विराजमान हनुमान लला के दर्शनों के लिए लोगों में होड़ सी रही। शोभायात्रा में झांकियां आकर्षण का केन्द्र रही।

राजस्थान स्थापना दिवस तिथि से मनाना महत्वपूर्ण : राज्यपाल

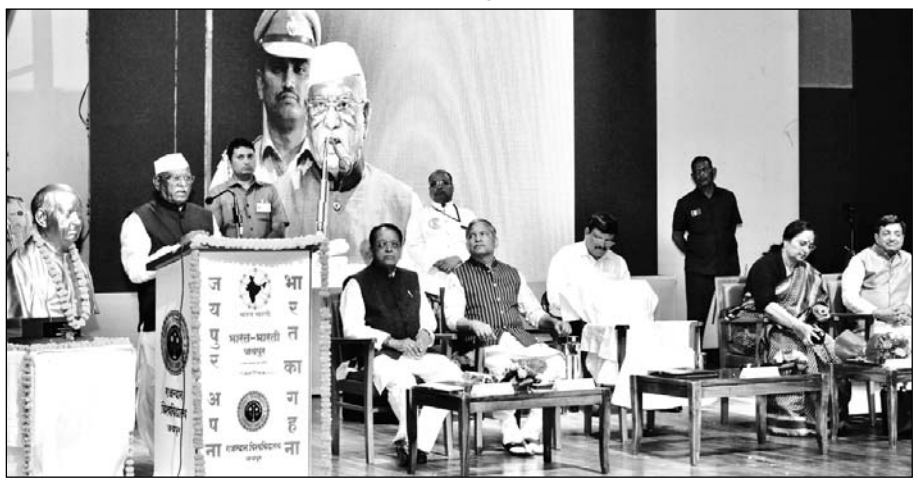

राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने शनिवार को भारत-भारती संस्था द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में राजस्थान स्थापना दिवस कार्यक्रम को संबोधित किया।

जयपुर। राज्यपाल हरिभाऊ बागडे ने शनिवार को भारत-भारती संस्था द्वारा राजस्थान विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित राजस्थान स्थापना दिवस कार्यक्रम में कहा कि राजस्थान गौरवमय इतिहास और समृद्ध सांस्कृतिक परम्पराओं का प्रदेश है। उन्होंने मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा द्वारा राजस्थान दिवस को भारतीय पंचांग से मनाने की घोषणा कर उसकी शुरूआत करने की सराहना की तथा कहा कि भारतीय संस्कृति से नई पीढ़ी को जोड़ने की दृष्टि से यह महत्वपूर्ण कदम है।

राज्यपाल ने कहा कि राजस्थान की स्थापना चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को हुई उस दिन अंग्रेजी तारीख 30 मार्च का दिन था। उन्होंने लोहपुरुष सरदार पटेल को याद करते हुए कहा कि रियासतों के एकीकरण से आज के राजस्थान की स्थापना की। उन्होंने राजस्थान के इतिहास और गौरव में संस्कृति की चर्चा करते हुए महाराणा प्रताप, महाराणा सांगा जैसे वीरों को भी याद किया।

राजस्थान रंगो की अनुपम धरा है। विविधता लिए यहां के अलग-अलग अचंल और वहां की सांस्कृतिक परम्पराओं, तीज-त्योंहार, उत्सव और पर्व इसकी धरोहर है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे

- राजस्थान बनेगा डेटा सेंटर स्थापित करने के लिए पसंदीदा राज्य
- पांच वर्षों में 20 हजार करोड़ रुपए के निवेश की संभावना

जयपुर। वर्तमान डिजिटल युग में सूचना प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है। शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, बैंकिंग और मनोरंजन जैसे क्षेत्रों में आईटी की भूमिका बढ़ती जा रही है। पारदर्शी एवं जवाबदेही सुशासन देने में भी ई-गवर्नेंस और ऑनलाइन सेवाओं का योगदान उल्लेखनीय है। डिजिटल संसार की इन सभी गतिविधियों के सुरक्षित और निर्बाध संचालन का डेटा सेंटर्स प्रमुख आधार है।

इन सेंटर्स में क्लाउड कम्प्यूटिंग, को-लोकेशन एवं कंटेंट डिलीवरी के माध्यम से विभिन्न डिजिटल प्लेटफोर्म संचालित होते हैं। व्यावसायिक डेटा को सुरक्षित और सुलभ रखने के साथ ही ये डेटा केन्द्र रिकवरी समाधान भी उपलब्ध कराते हैं। विगत कुछ वर्षों में हमारे देश के डेटा सेंटर्स की क्षमताओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। इस क्षेत्र में बढ़ रहे निवेश से भारत तेजी से बढ़ते डेटा सेंटर बाजार के रूप में स्थापित हुआ है। वर्ष 2024 में भारतीय डेटा सेंटर बाजार की अनुमानित क्षमता 2 हजार मेगावाट थी, जो वर्ष 2029 तक बढ़कर 4 हजार मेगावाट से अधिक होने की उम्मीद है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार ने डेटा सेंटर्स की इस बढ़ती उपयोगिता को देखते हुए राजस्थान में निजी क्षेत्र में डेटा सेंटर्स की स्थापना को प्रोत्साहित करने के लिए राजस्थान डेटा सेंटर पॉलिसी-2025 लागू की है। राज्य बजट 2024-25 में यह डेटा सेंटर पॉलिसी लाने की घोषणा की गई थी।

राजस्थान डेटा सेंटर पॉलिसी-2025 का लक्ष्य राज्य में एक विश्व स्तरीय डेटा सेंटर इकोसिस्टम विकसित कर राजस्थान को डेटा सेंटर क्षेत्र का प्रमुख केन्द्र बनाना है। यह नीति राज्य में स्थापित होने वाले डेटा सेंटर्स की गतिविधियों की दक्षता, सुरक्षा और विश्वसनीयता को प्रभावशाली बनाएगी। साथ ही, राज्य में डेटा प्रबंधन, प्रदर्शन और सुरक्षा के उच्च मानकों को सुनिश्चित करने के लिए दिशा-निर्देशों को निर्धारित करने में भी मदद करेगी।

इस नीति के तहत डेटा सेंटर सेक्टर को प्रोत्साहित करने के लिए कई प्रावधान किए गए हैं।

गोपालगढ़ साम्प्रदायिक दंगा प्रकरण में नियमित सुनवाई शुरू

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट की ओर से सांसदों और विधायकों से जुडे आपराधिक मामलों की सुनवाई जल्द कर उनका निस्तारण करने के निर्देश के बाद भरतपुर के गोपालगढ़ सांप्रदायिक दंगा मामले में भी नियमित सुनवाई आरंभ हो गई है। मामले की सुनवाई जिले के अतिरिक्त सत्र न्यायालय क्रम-4 में हो रही है। अदालत एक दिन छोड़कर एक दिन इस मामले की सुनवाई करेगी। एडीजे कोर्ट में मामले की आगामी सुनवाई 17 अप्रैल को रखी गई है।

इस मामले में फिलहाल अभियोजन पक्ष की ओर से बयान दर्ज कराए जा रहे हैं। जिसमें 65 गवाहों के बयान दर्ज हो चुके हैं। प्रकरण में कुल 62 आरोपी थे, जिनमें से 6 आरोपियों की मौत हो चुकी है और तीन आरोपी कोर्ट से जमानत मिलने के बाद फरार चल रहे हैं। प्रकरण में सीएम भजनलाल शर्मा, पूर्व मंत्री जाहिदा खान, जमशेद खान, प्रमोद शर्मा, जवाहर सिंह बेढम, केसरी सिंह, गिरधारी तिवारी सहित अन्य आरोपियों को सशर्त अग्रिम जमानत मिली हुई है। गौरतलब है कि 14 सितंबर 2011 को हुई भरतपुर के गोपालगढ में हुई इस सांप्रदायिक हिंसा की घटना में 10 व्यक्तियों की मौत हुई थी और 45 लोग घायल हो गए थे।

'बिहार दिवस के उपलक्ष्य में स्नेह मिलन समारोह आज'

जयपुर। भारतीय जनता पार्टी की ओर से बिहार दिवस के उपलक्ष में रविवार को राजधानी जयपुर में एक भारत श्रेष्ठ भारत के तहत प्रवासी लोगों के लिए स्नेह मिलन समारोह आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम संयोजक भाजपा प्रदेश महामंत्री श्रवण सिंह बगड़ी ने बताया कि भाजपा की ओर से सी-स्कीम स्थित महावीर स्कूल सभागार में बिहार दिवस के उपलक्ष में स्नेह मिलन समारोह मनाया जाएगा। शाम 5 बजे से आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि बिहार के पूर्व उप मुख्यमंत्री तार किशोर प्रसाद रहेंगे।

डिजास्टर मेडिसिन में भारत को वैश्विक नेतृत्व दिलाएगा पतंजलि : स्वामी रामदेव

पतंजलि विश्वविद्यालय में ''जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन व आपदा औषधि'' पर दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला में स्पेन विश्वविद्यालय के प्रो. रूबेन, इटली से विश्व बैंक के आपदा औषधि समूह के अध्यक्ष प्रो. रोबेर्टो मुगावेरो, नॉर्वे विश्वविद्यालय के प्रो. बी. सितौला तथा नेपाल आपदा प्रबंधन केंद्र के वैज्ञानिक प्रो. बी. अधिकारी ने भाग लिया।

- केदारनाथ से बिहार तक, हर त्रासदी में मानवता के साथ खड़ा रहा पतंजलि : आचार्य बालकृष्ण

हरिद्वार। पतंजलि विश्वविद्यालय में ''जलवायु परिवर्तन, आपदा प्रबंधन एवं आपदा औषधि'' विषय पर आयोजित दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय कार्यशाला का आज शुभारंभ हुआ। इस कार्यशाला में चार देशों के अंतरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिकों ने सहभागिता की। कार्यशाला में स्पेन विश्वविद्यालय के प्रो. रूबेन, इटली से विश्व बैंक के आपदा औषधि समूह के अध्यक्ष प्रो. रोबेर्टो मुगावेरो, नॉर्वे विश्वविद्यालय के प्रो. बी. सितौला तथा नेपाल आपदा प्रबंधन केंद्र के वैज्ञानिक प्रो. बी. अधिकारी ने भाग लिया।

इस अवसर पर पतंजलि विश्वविद्यालय में 'डिजास्टर मेडिसिन, मैनेजमेंट एंड क्लाइमेट चेंज' को लेकर अंतरराष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (सेंटर ऑफ़ एक्सीलेंस) की स्थापना एवं लोकार्पण भी किया गया। साथ ही, विश्वविद्यालय में पेटेंट सेल की भी स्थापना की गई।

कार्यशाला के उद्घाटन समारोह में पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलाधिपति एवं विश्वविख्यात योगऋषि स्वामी रामदेव ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि, यह केंद्र भविष्य में वैश्विक स्तर पर आपदाओं व उनसे उत्पन्न त्रासदी से निपटने में सहायक सिद्ध होगा। पतंजलि ने हमेशा हर आपदा में मानवता और समाज सेवा की दिशा में अग्रणी भूमिका निभाई है-चाहे वह सुनामी रही हो, बिहार की बाढ़, या केदारनाथ की त्रासदी। पतंजलि की शक्ति, सोच और भावना का ही परिणाम है कि हम हर आपदा में सबसे पहले सहायता पहुँचाने वालों में शामिल होते हैं। उन्होंने भारतीय व सनातन संस्कृति से आपदा प्रबंधन की शिक्षा लेने पर भी बल दिया।

इस अवसर पर पतंजलि विश्वविद्यालय के कुलपति आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि, यह अंतरराष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र आने वाले समय में वैश्विक स्तर पर आपदा प्रबंधन और जनकल्याण के लिए एक व्यवस्थित पहल करेगा। पतंजलि ने पूर्व में भी केदारनाथ त्रासदी, नेपाल भूकंप और बिहार की बाढ़ जैसी आपदाओं में अग्रणी भूमिका निभाते हुए मानवीय सेवा के कार्य किए हैं।

इस कार्यशाला के मुख्य अतिथि एवं उत्तराखंड स्टेट काउंसिल फॉर साइंस एंड टेक्नोलॉजी (यूकॉस्ट) के महानिदेशक डॉ. दुर्गेश पंत ने कहा कि आपदा प्रबंधन भारतीय संस्कृति के इकोसिस्टम में समाहित है। उन्होंने आधुनिक विज्ञान, तकनीक और सकारात्मक सोच के समन्वय से आपदाओं और उनसे उत्पन्न त्रासदी से प्रभावी ढंग से निपटने की आवश्यकता पर बल दिया।

इस अवसर पर वर्ल्ड बैंक के भारत में प्रतिनिधि डॉ. आशुतोष मोहंती ने कहा कि पतंजलि विश्वविद्यालय दक्षिण एशिया का पहला संस्थान है जहाँ डिज़ास्टर मेडिसिन के क्षेत्र में गंभीर और संगठित पहल की गई है। उन्होंने पतंजलि विश्वविद्यालय की इस पहल की प्रशंसा करते हुए यह घोषणा की कि वर्ल्ड बैंक द्वारा विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को आपदा प्रबंधन और डिज़ास्टर मेडिसिन के क्षेत्र में स्कॉलरशिप, फेलोशिप, पीएचडी अनुसंधान तथा स्टूडेंट एक्सचेंज प्रोग्राम में भागीदारी का अवसर उपलब्ध कराया जाएगा।

इस कार्यशाला के मुख्य संयोजक एवं पतंजलि विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा निदेशक प्रो. सत्येन्द्र मित्तल ने कार्यशाला के उद्देश्य पर प्रकाश डालते जलवायु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली आपदाओं और उनके निराकरण हेतु भविष्य की योजनाओं के बारे में विस्तार से बताया। प्रो. मित्तल ने बताया कि यह कार्यशाला डीआरए इंफ्राकोन, मैकाफेरी, मेगा प्लास्ट, टेक फैब तथा यूकॉस्ट के सहयोग से आयोजित की गयी।

इस अवसर पर उत्तराखंड के अपर प्रधान मुख्य वन संरक्षक समीर सिन्हा ने अपने संबोधन में कहा कि आपदा प्रबंधन में जनसमुदाय की सहभागिता अत्यंत आवश्यक है, जिससे आपदा से उत्पन्न त्रासदी को कम किया जा सके। उन्होंने सामुदायिक भागीदारी को आपदा प्रबंधन के लिए मूल आधार बताया। वहीं भारत-तिब्बत सीमा पुलिस (आईटीबीपी) से दीपक कुमार पांडे ने भी आपदा प्रबंधन पर महत्वपूर्ण प्रकाश डालते हुए कहा कि व्यवस्थित प्रशिक्षण, त्वरित प्रतिक्रिया और स्थानीय संसाधनों के समुचित उपयोग के माध्यम से किसी भी आपदा की तीव्रता को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सकता है।

इस कार्यशाला में पंतजलि विश्वविद्यालय के कुलानुशासिका प्रो. (डॉ.) देवप्रिया, प्रति-कुलपति प्रो. मयंक कुमार अग्रवाल, कुलसचिव आलोक कुमार सिंह, कुलानुशासक आर्षदेव, डीन अकादमी एवं रिसर्च डॉ. ऋत्विक बिसारिया, डॉ. अनुराग वार्ष्णेय, डॉ. वेदप्रिया, डॉ. वी.के. शर्मा, प्रो. पी.के. सिंह, डॉ. अजय चौरसिया, डॉ. राधिका नागरथ, डॉ. बी.डी. पाटनी तथा गणमान्य प्रमुख रूप से उपस्थित रहे। कार्यक्रम में मंच संचालन डॉ. निवेदिता शर्मा ने की।

राजस्थान पुलिस के 40 अधिकारी-कर्मचारियों को मिलेगा मुख्यमंत्री सराहनीय सेवा पदक

- राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस के अवसर पर मिलेगा सेवा पदक

जयपुर। राजस्थान पुलिस के अधिकारियों-कर्मचारियों को उनकी सराहनीय सेवाओं, कठोर परिश्रम एवं विशेष योगदान के लिए मुख्यमंत्री सराहनीय सेवा पदक से सम्मानित किया जाएगा। गृह विभाग की ओर से इस संबंध में राजस्थान पुलिस स्थापना दिवस के अवसर पर यह पदक दिए जाने की स्वीकृति प्रदान की गई है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सेवा पदक की स्वीकृति पर कहा कि राजस्थान पुलिस के अधिकारी-कर्मचारी कड़ी मेहनत, समर्पण एवं पूर्ण निष्ठा से प्रदेश की कानून व्यवस्था को मजबूत बनाए रखते हैं। उत्कृष्ट सेवा देने वाले ऐसे पुलिस कार्मिकों का मुख्यमंत्री सराहनीय सेवा पदक से सम्मानित होने पर मनोबल बढ़ेगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पुलिस बल को और अधिक मजबूत बनाने के लिए आवश्यकतानुरूप आधुनिक संसाधन भी उपलब्ध करवा कर रही है।

उल्लेखनीय है कि वर्ष 2025 से राजस्थान में प्रथम बार मुख्यमंत्री सराहनीय सेवा पदक दिए जाने की शुरूआत हो रही है। इस सेवा पदक से आईपीएस अधिकारी अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस, सिविल राइट्स एण्ड एन्टी ह्यूमन ट्रेफिकिंग मालिनी अग्रवाल, महानिरीक्षक पुलिस, सतर्कता प्रफुल्ल कुमार, उप महानिरीक्षक पुलिस, प्रशिक्षण प्रीति चंद्रा, पुलिस उपायुक्त, जयपुर शहर (उत्तर) राशि डोगरा डूडी सहित कुल 40 अधिकारी-कर्मचारियों को सम्मानित किया जाएगा।

सात आरपीएस अधिकारियों में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक महेंद्र कुमार भगत, सैयद मुस्तफा अली जैदी, आदर्श चौधरी, हिमांशु शर्मा, चंचल मिश्रा, पुलिस उपाधीक्षक आलोक कुमार गौतम व दशरथ सिंह शामिल है।

पुलिस निरीक्षक से कांस्टेबल स्तर के 29 पुलिस अधिकारी एवं कार्मिक चयनित हैं। इनमें कंपनी कमांडर बजरंग सिंह, शिवलाल गुर्जर, दशरथ सिंह, पुलिस निरीक्षक आनंद कुमार, हिमांशु सिंह राजावत, पुलिस उप निरीक्षक राजेश कुमार शर्मा, महेश कुमार टांक, प्लाटून कमांडर गोविंद सिंह, सहायक उप निरीक्षक उम्मेद सिंह, खड़क सिंह, हेड कांस्टेबल राजेंद्र सिंह, सुभाष चंद्र, प्रेमचंद, शिव सिंह, हनुमान सहाय, सायर सिंह, महेंद्र सिंह मीणा, श्रीनारायण, रविंद्र सिंह राजावत, भंवर सिंह, सीमा देवी, कांस्टेबल विनोद कुमार, बलवीर सिंह, मोहम्मद शब्बीर खान, महावीर प्रसाद, भंवर लाल, राजेश कुमार यादव, महिला कांस्टेबल मनीषा कुमारी एवं कांस्टेबल चालक दुर्गा लाल सेन शामिल है।

पीएचईडी मंत्री ने जल जीवन मिशन के कार्यों की प्रगति की जानकारी ली

पीएचईडी मंत्री कन्हैयालाल ने उदयपुर, राजसमंद और सलूम्बर के अधिकारियों की बैठक ली

उदयपुर, (कासं)। जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग एवं भूजल विभाग मंत्री कन्हैयालाल ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार हर व्यक्ति को शुद्ध पानी उपलब्ध कराने के लिए संकल्पबद्ध है। उदयपुर में पानी की कोई कमी नहीं है और न ही पेयजल प्रबंधन के लिए बजट का कोई इशू है। अधिकारी बेहतर से बेहतर प्रबंधन कर आमजन को पानी उपलब्ध कराएं। इसमें किसी भी प्रकार की कौताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। पीएचईडी मंत्री कन्हैयालाल शनिवार को जिला परिषद सभागार में उदयपुर, राजसमंद और सलूम्बर जिलों में पेयजल योजनाओं तथा समर प्लान की समीक्षा बैठक को संबोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि आगामी दिनों में गर्मी तेज होने के साथ ही सतही जलस्त्रोतों में पानी की कमी होगी। वहीं भूजल लेवल भी डाउन होगा। इन सभी परिस्थितियों को देखते हुए समर प्लान बनाकर कंटीजेंसी में बजट भी उपलब्ध करा दिया है। अधिकारी सिस्टम को दुरस्त रखते पेयजल

पीएचईडी मंत्री कन्हैयालाल चौधरी ने अधिकारियों की बैठक ली।

आपूर्ति सुनिश्चित करें। उन्होंने हैंडपंप और नलकूप के स्वीकृत कार्य अविलम्ब पूरे कराने के लिए पाबंद किया। मंत्री ने विभागीय योजनाओं, मुख्यमंत्री बजट घोषणाओं आदि की भी जानकारी लेते हुए निर्देश दिए।

बैठक के दौरान शहर विधायक ताराचंद जैन, ग्रामीण विधायक फूलसिंह मीणा, वल्लभनगर विधायक उदयलाल डांगी, राजसमंद विधायक दीप्ति किरण माहेश्वरी, नाथद्वारा विधायक विश्वराजसिंह, मावली विधायक पुष्कर डांगी, सलूम्बर विधायक शांतादेवी, उप जिला प्रमुख पुष्कर तेली, संभागीय आयुक्त प्रज्ञा केवलरमानी, जिला कलेक्टर नमित मेहता, राजसमंद कलेक्टर बालमुकुंद असावा, समाजसेवी गजपालसिंह सहित पीएचईडी के उदयपुर, राजसंमद व सलूम्बर के अधिकारी आदि उपस्थित रहे।

मंत्री कन्हैयालाल ने उदयपुर, राजसमंद और सलूम्बर जिलों के अधिकारियों से जल जीवन मिशन के कार्यों की प्रगति जानी। उन्होंने धीमी प्रगति पर नाराजगी जताते हुए जल्द काम पूर्ण कराने के निर्देश दिए। चर्चा के दौरान अवैध कनेक्शन का जिक्र आने पर मंत्री ने ऐसे सभी कनेक्शन कटवाने तथा संबंधितों के खिलाफ ठोस कार्यवाही करने को कहा। उन्होंने जल जीवन मिशन में जिन ठेकेदारों की ओर से अपेक्षित काम नहीं किए जा रहे उनके खिलाफ भी सख्त कार्यवाही के निर्देश दिए।

- पेयजल आपूर्ति और समर प्लान की समीक्षा कर निर्देश दिये, विधायकों सहित जनप्रतिनिधियों से फीडबैक लिया

उन्होंने मिशन के तहत पूर्ण हुए कामों को ग्राम स्तरीय समितियां बनाकर हस्तांतरित किए जाने को लेकर जल्द दिशा-निर्देश जारी किए जाने की बात कही। बैठक में उदयपुर शहर, ग्रामीण, नाथद्वारा, राजसमंद, वल्लभनगर, मावली व सलूम्बर विधायकों ने अपने-अपने क्षेत्र की पेयजल समस्याओं, जल जीवन मिशन के कामों की धरातलीय हकीकत, पेयजल परियोजनाओं की स्थिति आदि की जानकारी दी। मंत्री ने एक-एक क्षेत्र के संबंध में संबंधित अधिकारियों से जवाब-तलब किया। न्यून प्रगति पर नाराजगी जताते हुए पूर्ण गंभीरता से काम करने की हिदायत दी।

20 लाख रुपये का डोडा पोस्त जब्त, तस्कर फरार

थार गाड़ी से 235.220 किलोग्राम अवैध मादक प्रदार्थ डोडा-पोस्त जब्त किया

पुलिस ने अवैध डोडा-पोस्त सहित परिवहन में प्रयुक्त थार जीप को जब्त किया।

ब्यावर, (निसं)। अवैध मादक पदार्थ डोडा-पोस्त तस्करों के विरूद्ध पुलिस ने कार्रवाई कर 235.220 किलोग्राम अवैध मादक प्रदार्थ डोडा-पोस्त जब्त किया। अवैध मादक पदार्थ डोडा-पोस्त की अनुमानित बाजार कीमत करीब 20 लाख रूपये बताई है। वहीं तस्कर पुलिस नाकाबंदी को तोड़ कर भागे तो पुलिस ने जंगल व पहाड़ी क्षेत्र में पीछा कर अवैध मादक पदार्थ की बड़ी खेप पकडी। वहीं डोडा-पोस्त परिवहन में प्रयुक्त वाहन थार जीप को जब्त किया।

उप महानिरीक्षक पुलिस अजमेर रेंज ओमप्रकाश आईपीएस के आदेशानुसार व जिला पुलिस अधीक्षक के निर्देशानुसार अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक एंव वृताधिकारी जैतारण के निकटतम सुपरविजन में थानाधिकारी

- तस्कर पुलिस नाकाबंदी तोड़ कर भागे तो पुलिस ने जंगल व पहाड़ी क्षेत्र में पीछा कर अवैध मादक पदार्थ की खेप पकड़ी

पुलिस थाना बर मय टीम द्वारा अवैध मादक पदार्थ डोडा-पोस्त तस्करों के खिलाफ कार्यवाही करते हुए महिन्द्रा थार जीप से 235.220 किलोग्राम डोडा-पोस्त जब्त कर परिवाहन में प्रयुक्त वाहन को जब्त किया। 11 अप्रैल को थानाधिकारी पुलिस थाना बर मय टीम द्वारा मादक पदार्थ तस्कर के विरूद्ध चल रहे विशेष अभियान के तहत कार्यवाही नेशनल हाईवे पर नाकाबंदी शुरू की गई। नाकाबंदी के दौरान एक महिन्द्रा थार जीप ब्यावर की तरफ से आई जो संदिग्ध लगने पर पुलिस टीम द्वारा रोकना चाहा तो वाहन चालक द्वारा वाहन को तेज गति से भगा कर नाकाबन्दी को तोड़ कर गाड़ी को भगा ली जिस पर पुलिस टीम द्वारा गाड़ी का पीछा किया तो तस्करों द्वारा गाड़ी को पहाड़ी क्षेत्र में कच्चे रास्तों में भगाकर कर जंगल में छोड़ कर झाड़ियों में फरार हो गये। पुलिस टीम द्वारा काफी तलाश करने पर भी नहीं मिले। पुलिस टीम द्वारा वहां की तलाशी ली गई तो उक्त वाहन में 14 प्लास्टिक के कट्टे मिले जिनको खोलकर देखा तो डोडा-चूरा भरा हुआ मिला जिनका वजन 235.220 किलोग्राम हुआ। जिनको जब्त किया जाकर परिवहन में प्रयुक्त वहान महिन्द्रा थार को जब्त किया। मौके से फरार तस्करों की तलाश जारी है।

ससुरालजनों पर घर से निकालने का आरोप

महाजन, (निसं)। कस्बे में एक विवाहिता ने अपने पति, सास व ससुर पर मारपीट कर घर से निकालने का व स्त्री धन छीनने का आरोप लगाते हुए मामला दर्ज करवाया। महाजन थाना अधिकारी कश्यप सिंह ने बताया कि महाजन निवासी चांद बानो पत्नी अख्तर अली पुत्री कालू खान निवासी महाजन पीहर पालीवाला सूरतगढ़ ने अपने पति अख्तर अली, सास नजमा व ससुर अब्दुला पर मारपीट करने का आरोप लगाया। पीड़िता ने बताया कि उसकी शादी 15 वर्ष पूर्व अख्तर अली से हुई थी। शादी के बाद से ही उसके साथ मारपीट की जाने लगी थी। कुछ दिन पूर्व पीड़िता के साथ मारपीट कर घर से निकाल दिया।

क्रशर बस्ती के 20 हजार लोग अब चम्बल का पानी पी सकेंगे : राजावत

कोटा, (निसं)। पूर्व संसदीय सचिव भवानीसिंह राजावत ने बताया कि आजादी के बाद क्रेशर बस्ती के 20 हजार गरीब लोग पानी, बिजली और सड़कों के अभाव मे टैंकरों का पानी पीते थे, फिर हैण्डपम्पों के सहारे अपनी प्यास बुझाते थे। इन लोगों की अब जलदाय विभाग ने सुध ली और आने वाले समय में इन गरीब लोगों के लिए जलदाय विभाग अनन्तपुरा में पुराने थाने के पीछे बड़ी टंकी बनाकर तालाब बस्ती, क्रशर बस्ती, बरड़ बस्ती में घर-घर में नल लगवाकर चम्बल का शुद्ध और मीठा पानी उपलब्ध करवाएगा।

राजावत ने यह घोषणा करते हुए कहा कि हालांकि अभी तो क्रशर बस्ती में टैंकर मुहैया करवा दिए गए हैं लेकिन

- 'जलदाय विभाग अनन्तपुरा में पुराने थाने के पीछे बड़ी टंकी बनाकर चम्बल का शुद्ध और मीठा पानी उपलब्ध करवाएगा'

चम्बल में अथाह पानी है। शीघ्र ही लोगों के बीच पर्याप्त पानी उपलब्ध हो जाएगा। अब क्रशर बस्ती के लोगों को जलदाय विभाग पर्याप्त पानी उपलब्ध करवा देगा और लोगों को पानी के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। सभी गरीब बस्तियों में पानी की टंकियों का अभाव है, जिससे आने वाले समय में पर्याप्त टंकियां बनवाकर जल आपूर्ति की जा सकेगी और मल्टीस्टोरियों में अभी तक चम्बल का पानी उपलब्ध नहीं हो सका था, क्योंकि राजस्थान में कई जगह पानी का अभाव है, लेकिन कोटा में चम्बल के अथाह पानी का वरदान हैं, इसीलिए जलदाय विभाग अब मल्टीस्टोरियों में भी पानी की स्वीकृति देगा। क्रशर बस्ती सहित कोटा शहर की कई बस्तियों में पानी का अभाव हैं लेकिन अब हर व्यक्ति को शुद्ध पानी मिले इसके लिए जलदाय विभाग प्रयास कर रहा है और इन कच्ची बस्तियों में केडीए के द्वारा सामुदायिक भवन, स्कूल भवन, सी.सी. रोड और नालियों का निर्माण एवं पर्याप्त विद्युत आपूर्ति की व्यवस्था कर बस्तियों को सुसज्जित किया जाएगा।

किशोरी ने आत्महत्या की

उदयपुर, (निसं)। सुखेर थाना क्षैत्र में किशोरी ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। भुवाणा जोड़ाजी बावजी निवासी चन्दा(17)पुत्री हिरालाल गमेती ने अपने मकान में फांसी लगा ली। इसकी सूचना मिलने पर एएसआई खुमाणसिंह ने मृतका का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। आत्महत्या करने के कारणों का पता नहीं चल पाया है।

शाहपुरा जिला बचाओ आंदोलन को लेकर 102वें दिन भी धरना जारी

शाहपुरा, (निसं)। जिला बचाओ आंदोलन के तत्वाधान में चल रहे क्रमिक अनशन धरने पर 102 वें दिन रविवार को क्षेत्रीय विधायक डॉ. लालाराम बैरवा धरना स्थल पर पहुंचे और शाहपुरा जिले की मांग कर रहे संघर्ष समिति पदाधिकारियों व सदस्यों को संबोधित करते हुए शाहपुरा जिले की बहाली की मांग का समर्थन किया।

- क्षेत्रीय विधायक डॉ. लालाराम बैरवा धरना स्थल पर पहुंचे

क्रमिक अनशन धरने पर क्षेत्रीय विधायक डॉ. लालाराम बैरवा पहुंचे ।

वहीं सरकार व संघर्ष समिति के मध्य सेतु बनकर आमजन की भावनाओं के अनुरूप शाहपुरा को वापस जिला बनाने का प्रयास मिलकर करने की बात कही। सरकार जब भी जिले बनाएगी चाहे पांच जिले ही बने उनमें शाहपुरा भी जिला बनेगा।

इस मौके पर विधायक डॉ. लालाराम बैरवा के साथ भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष पंकज सुगंधी, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष कन्हैयालाल धाकड़ भी पहुंचे। जिला बचाओ संघर्ष समिति अध्यक्ष दुर्गा लाल राजोरा, संयोजक रामप्रसाद जाट, महासचिव कमलेश मुंडेतिया, संघर्ष समिति प्रमुख सदस्य उदयलाल बैरवा, राजेंद्र बोहरा, सूर्य प्रकाश ओझा ने भी अपने विचार रखे। जिला बचाओ संघर्ष समिति अध्यक्ष दुर्गालाल राजोरा ने कहा कि शाहपुरा विधायक डॉ. लालाराम बैरवा आज धरने पर आए हैं और शाहपुरा जिले की बहाली की मांग का समर्थन किया हैं, शाहपुरा विधायक सरकार तक हमारी मांग पहुंचाएं। संयोजक रामप्रसाद जाट ने कहा कि अब हम साथ मिलकर शाहपुरा जिले की बहाली की मांग करेंगे। संघर्ष समिति महासचिव कमलेश मुंडेतिया ने बताया कि शाहपुरा जिले की बहाली की मांग को लेकर चल रहा आंदोलन क्रमिक अनशन धरना अनवरत जारी रहेगा।

इस मौके पर अभिभाषक संस्था उपाध्यक्ष गजेंद्र प्रताप सिंह राणावत, अधिवक्ता अंकित शर्मा, चंद्र प्रकाश राजोरा, दीपक मीणा, ताज संघर्ष समिति के सदस्य हाजी उस्मान मोहम्मद छिपा, सत्यनारायण पाठक, धनराज जीनगर, छोटू रंगरेज, दुर्गालाल जोशी, रमेश मालू, महादेव रेगर, सुगन लाल बोहरा, नजीर मोहम्मद, विनीत बुनकर, शहाबुद्दीन पठान, शंभू चौधरी, सुरेश घूसर व राजेन्द्र खटीक सहित कई सदस्य मौजूद रहे।

ब्राह्मण सदैव सामाजिक सरोकारों एवं जन कल्याण में अग्रणी : ओम बिरला

कोटा, (निसं)। सनाढ्य ब्राह्मण सभा समिति महावीर नगर के तत्वावधान में सनाढ्य भवन में सांसद कोष से निर्मित हॉल एवं भामाशाह के द्वारा नवनिर्मित कमरों का लोकार्पण मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष ओम कृष्ण बिरला एवं विधायक संदीप शर्मा के सानिध्य में आयोजित हुआ। मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष ओम कृष्ण बिरला ने कहा कि ब्राह्मण सदैव सामाजिक सरोकारों एवं जन कल्याण की भावना में अग्रणी रहते आए हैं और शिक्षा एवं संस्कारों के साथ पूरे विश्व के समुदाय को ज्ञान की ओर अग्रसर करते हैं।

- सांसद कोष से निर्मित हॉल एवं भामाशाहों के कमरों का लोकार्पण किया

उन्होंने कहा कि ब्राह्मण समाज द्वारा किए गए सामाजिक सरोकार प्रशंसनीय एवं अतुलनीय रहते हैं। ऐसे में भवन के विस्तार एवं विकास में हम सभी सहयोग करें।

कोटा दक्षिण के विधायक संदीप शर्मा ने कहा कि समाज बंधु शिक्षा और दीक्षा के क्षेत्र में उत्तरोत्तर विकास के लिए संस्कारवान परिवारों के निर्माण में सदैव प्रयत्नशील रहें। सनाढ्य ब्राह्मण सभा समिति महावीर नगर के अध्यक्ष ओमप्रकाश टकांरिया ने समिति के 1993 से लेकर के अब तक के इतिहास के बारे में जानकारी देते हुए इसके उत्तरोत्तर विकास के बारे में बताया। सामाजिक सरोकारों के लिए किए गए विभिन्न कार्यक्रमों का ब्योरा प्रस्तुत किया। भजन संध्या का कार्यक्रम अभिषेक शर्मा एवं पार्टी द्वारा प्रस्तुत किया गया एवं श्री हनुमान जी की शानदार जीवंत झांकी का आयोजन भी कार्यक्रम के दौरान किया गया।

होटल-रेस्टोरेंट की जांच, बिना आईडी ठहरने पर 8 गिरफ्तार

अनूपगढ़, (निसं)। पुलिस ने राज्यव्यापी विशेष सतर्कता अभियान के तहत देर रात तक शहर में सघन गश्त और चेकिंग अभियान चलाया। पुलिस टीम ने बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन और धार्मिक स्थलों सहित शहर के होटल, रेस्टोरेंट और कैफे की जांच की। एसएचओ ईश्वर प्रसाद जांगिड़ के नेतृत्व में टीम ने रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड पर संदिग्ध व्यक्तियों की जांच की। यात्रियों से उनकी सुरक्षा को लेकर फीडबैक लिया गया। मंदिरों में भी विशेष गश्त की गई। पुलिस ने होटल, रेस्टोरेंट और कैफे संचालकों को महत्वपूर्ण दिशा-निर्देश दिए। बाहरी व्यक्तियों को आधार कार्ड या अन्य पहचान पत्र के आधार पर ही ठहराने की हिदायत दी

1.60 करोड़ का सोना हड़पने वाले की गिरफ्तारी नहीं

कार्रवाई की मांग को लेकर एसपी से मिले व्यापारी

बीकानेर, (निसं)। यहां के सर्राफा व्यवसायियों का करोड़ों रुपए का माल हड़पकर फरार हुए कोलकाता के कारीगर और उसके सहयोगियों की गिरफ्तारी नहीं हो पाई है। इस संबंध में व्यवसायी एसपी से मिले हैं।

ब्रह्मपुरी चौक निवासी सर्राफा व्यवसायी जयप्रकाश सोनी की ओर से 27 जनवरी को नयाशहर पुलिस थाने में मुकदमा दर्ज करवाया गया था। रिपोर्ट में बताया गया कि दाऊजी रोड के पास रौनक ट्रेडर्स नाम से फर्म है। कोलकाता निवासी कारीगर विक्रम झुनझुनवाला सोने के आभूषण बनाने का काम करता था। 16 अक्टूबर, 2024 को उसे 2025.310 ग्राम सोना दिया जो वह हड़प गया। सोने की कीमत करीब 1.60 करोड़ रुपए थी। कोलकाता गए तो विक्रम, उसकी पत्नी रूपा, विक्की का पिता विजय और पुत्र अक्षत मिले जिन्होंने जल्दी ही आभूषण बनाकर देने का आश्वासन दिया, लेकिन बाद में टालते रहे और माल हड़प लिया। पुलिस कोलकाता पहुंची और वहां की कोर्ट ने ट्रांजिट रिमांड में 15 दिन का समय लेकर बीकानेर कोर्ट में पेश होने के निर्देश दिए। इस दौरान विक्रम ने जोधपुर हाईकोर्ट में एफआईआर खारिज करवाने का प्रयास किया। कोर्ट ने इसे नहीं माना और अनुसंधान अधिकारी के समक्ष पेश होने के लिए कहा और ऐसा नहीं होने पर उसकी गिरफ्तारी और माल बरामद करने के लिए कहा। इसके बावजूद अभियुक्त फरार है और उसकी गिरफ्तारी नहीं हो पाई है। सर्राफा व्यवसायियों के प्रतिनिधिमंडल ने एसपी से मिलकर विक्रम और उसके सहयोगियों को गिरफ्तार करने की मांग की है।

बंद घर में हुई चोरी का खुलासा, दो गिरफ्तार

अनूपगढ़, (निसं)। पुलिस ने एक बंद घर से हुई चोरी का खुलासा करते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। वार्ड नंबर 33 में 22 मार्च को हुई इस चोरी में सोने के गहने और बुलेट बाइक चोरी हुई थी।

एसएचओ ईश्वर प्रसाद जांगिड़ के अनुसार मकान मालकिन मोनिका 18 से 24 मार्च तक श्रीगंगानगर गई हुई थी। चोरों ने इस दौरान घर के ताले तोड़कर वारदात को अंजाम दिया। चोरी का पता 24 मार्च को तब चला जब नए

- 120 सीसीटीवी फुटेज से पकड़े गए दो आरोपी, नया ताला लगाकर भागे

किराएदार घर पहुंचे और मुख्य दरवाजे का ताला नहीं खुल सका। अंदर जाने पर तीन कमरों के ताले टूटे मिले और सामान बिखरा हुआ था। पुलिस ने शहर के 120 सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालकर आरोपियों की पहचान की। आरोपी कुलविंदर सिंह उर्फ प्रीत (रिद्धि सिद्धि कॉलोनी) और सुनील स्वामी (वार्ड 28) को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई। दोनों ने चोरी करना स्वीकार कर लिया। पुलिस जांच में एक रोचक तथ्य सामने आया कि चोरों ने शक से बचने के लिए बुलेट बाइक को पैदल धक्का देकर ले गए और मुख्य गेट पर नया ताला लगा दिया। दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश किया गया है और पुलिस रिमांड पर लिया गया है।

तेज अंधड़ से पूर्व मुख्यमंत्री सुखाड़िया की मूर्ति टूटी, प्रशासन ने सुध ली

उदयपुर, (कासं)। बीती रात उदयपुर सहित प्रदेश में कई जगह आए अंधड़ ने काफी नुकसान पहुंचाया। अचानक आये अंधड़ से सुखाड़िया सर्कल के पास पार्क में स्थापित पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया की मूर्ति पर पेड़ गिरने से सुखाड़िया की प्रतिमा टूटकर जमीन पर आ गिरी। मौसम विभाग के अनुसार उदयपुर में अधिकतम 61 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से हवाएं चली और करीब एक घंटे अंधड़ का असर रहा। इस दौरान रात 2 बजकर 35 मिनट पर हवा की रफ्तार की सबसे अधिक 61 किमी प्रति घंटा रही। वहीं उदयपुर शहर में छह एमएम बारिश हुई।

बीती रात अंधड़ के दौरान सुखाड़िया सर्कल पार्क में एक विशालकाय पेड़ गिरा, यह पेड़ पार्क में स्थापित पूर्व मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाडिया की मूर्ति पर गिरा, जिससे मूर्ति टूट कर जमीन पर गिर गयी और बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गयी। 18 जुलाई 1989 को भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति आर वेंकटरमण ने इस मूर्ति का अनवारण किया था। दोपहर दो बजे प्रशासन की ओर से इसे हटाने की कवायद नहीं की तो कई कांग्रेस पदाधिकारी मौके पर पहुंचे और उन्होंने इसका विरोध जताया। कांग्रेस शहर

उदयपुर में पूर्व मुख्यमंत्री रहे मोहनलाल सुखाड़िया की प्रतिमा देर रात आए तूफान से पेड़ गिरने से टूट गई, जिसे क्रेन की सहायता से मरम्मत के लिए ले जाया गया।

- सुखाड़िया के पुत्र व कांग्रेस पदाधिकारियों के विरोध के बाद कार्यवाही शुरू हुई
- निगम अगर पार्क की पहले ही सुध ले लेता तो आज यह दुर्दशा नहीं होती : अरूण सुखाड़िया
- उदयपुर में देर रात 61 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से हवाएं चली

जिलाध्यक्ष फतहसिंह राठौड़ ने बताया कि उन्होंने आयुक्त को इस संबंध में जानकारी देनी चाही लेकिन उन्होंने फोन नहीं उठाया। दोपहर दो बजे बाद निगम की ओर से दस्ता मौके पर पहुंचा और उन्होंने खण्डित प्रतिमा को हटाने की कवायद शुरू की। इस दौरान निगम द्वारा कचरे की गाड़ी व बिना ढके ले जाया जाने लगा तो कांग्रेस पदाधिकारियों ने इसका विरोध किया। फतह सिंह राठौड़ ने बताया कि 17 साल तक मुख्यमंत्री रहे आधुनिक राजस्थान के निर्माता मोहनलाल सुखाड़िया सभी के आदर्श रहे हैं, उनकी बदौलत ही आज हमारे शहर में कई बड़ी-बड़ी चीजें हमें मिली है। ऐसे में प्रशासन की ऐसी उदासीनता समझ से परे है। उन्होंने जिम्मेदारों पर कार्रवाई की मांग भी की।

मोहनलाल सुखाड़िया के पुत्र अरूण सुखाड़िया भी मौके पर पहुंचे और हालात को देखते हुए चिंता जतायी। उन्होंने कहा कि समय रहते पेड़ की छंगाई कर ली जाती तो आज यह हालात नहीं बनते। उन्होंने बताया कि उन्होंने पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया, शहर विधायक ताराचंद जैन और निगम के अधिकारियों को भी सूचना दी है, उसके बावजूद दोपहर तक कोई प्रतिमा की सुध लेने नहीं आया। यह आधुनिक राजस्थान के निर्माता का अपमान है। अंधड़ के कारण शहर में कई जगह पेड़ भी गिरे हैं। इससे कुछ वाहनों को भी नुकसान हुआ है। नगर निगम ने पेड़ हटाने के लिए तीन टीमें बनाई है जो अंधड़ से टूटे पेड़ हटाकर रास्ता बहाल करने में लगी हुई है। शहर में कई क्षेत्रों में होर्डिंग भी तेज हवाएं के साथ उड़ गए।

मिशेल मार्श की बेटी की तबियत खराब है, जिस कारण वह उनका ध्यान रख रहे हैं और आज नहीं खेल रहे हैं। संभवत: मार्श की बेटी अभी भारत में ही हैं।
- ऋषभ पंत

लखनऊ कप्तान, मिशेल मार्श के मैच नहीं खेलने के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी

शुभमन गिल

गुजरात टाइटंस के कप्तान शुभमन गिल ने शनिवार को आईपीएल 2025 में लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ बेहतरीन अर्धशतकीय पारी खेली। उन्होंने लखनऊ के इकाना क्रिकेट स्टेडियम में 38 गेंदों में 60 रन बनाए। इस दौरान उनके बल्ले से 6 चौके और एक सिक्स भी निकला। उन्होंने 31 गेंदों में पचास रन पूरे कर लिए थे। ये स्टार बल्लेबाज गिल के आईपीएल करियर का 22वां फिफ्टी है। उन्होंने 31 गेंदों में पचास रन पूरे कर लिए थे। ये स्टार बल्लेबाज गिल के आईपीएल करियर का 22वां अर्धशतक है। उन्होंने डबल धमाल मचाया है।

क्या आप जानते हैं ?... छेत्री को 2007, 2011, 2013, 2014, 2017, 2018-19 और 2021-22 में रिकॉर्ड सात बार एआईएफएफ प्लेयर ऑफ द ईयर भी चुना गया है।

गहन चिंतन की जरूरत, गलती सुधारनी होगी : धोनी

चेन्नई, 12 अप्रैल। चेन्नई सुपर किंग्स के कप्तान महेंद्र सिंह धोनी ने शुक्रवार को यहां इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) के एकतरफा मैच में कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) से मिली हार के बाद कहा कि टीम को गहन चिंतन की जरूरत है और खिलाड़ियों को गलती देखकर सुधारनी होगी। मैच के बाद धोनी ने कहा, " बस आज ही नहीं इस सत्र में कई बार चीजें हमारे पक्ष में नहीं गई हैं। हमें देखना होगा कि हम कहां गलती कर रहे हैं और उन्हें सुधारना होगा। हमें गहन चिंतन की ज़रूरत है। " उन्होंने कहा, "स्थिति चुनौतीपूर्ण थी लेकिन हमें उससे निपटना चाहिए था। स्कोरबोर्ड पर पर्याप्त रन नहीं थे। गेंद रुक कर आ रही थी और वैसे स्पिन आक्रमण के सामने यह मुश्किल होता है। आप विकेट गंवा देते हैं तो मैच में वापस आना मुश्किल होता है। " धोनी ने कहा, " हमारे पास बेहतरीन सलामी बल्लेबाज हैं। पर जरूरी है कि स्कोरबोर्ड को देखकर हम अपने ऊपर दबाव नहीं लें। " सीएसके की यह लगातार पांचवीं हार थी। चेपॉक में अब तक के अपने न्यूनतम स्कोर पर सिमटने के बाद पहली बार उसे अपने घरेलू मैदान पर लगातार तीसरी हार मिली।

साई सुदर्शन ने ऑरेंज कैप पर किया कब्जा, पूरन सहित कई दिग्गजों को पछाड़ा

लखनऊ, 12 अप्रैल। इंडियन प्रीमियर लीग 2025 का क्रेज जारी है। 18वें सीजन में अब तक 25 मैच खेले जा चुके हैं। वहीं 26वां मुकाबला लखनऊ के इकाना स्टेडियम में लखनऊ सुपर जायंट्स और गुजरात टाइटंस के बीच खेला जा रहा है। इस दौरान पहले बल्लेबाजी करते हुए गुजरात टाइटंस ने निर्धारित 20 ओवरों में 6 विकेट के नुकसान पर 180 रन बनाए। इस दौरान जीटी के लिए शुभमन गिल और साई सुदर्शन ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। जहां सुदर्शन ने 37 गेंदों में 56 रन की पारी खेली तो कप्तान शुभमन गिल ने 38 गेंदों में 60 रन बनाए। इसके साथ ही साई सुदर्शन ने अपनी पारी के दम पर ऑरेंज कैप पर कब्जा जमा लिया है। युवा सलामी बल्लेबाज साई सुदर्शन ने लखनऊ सुपर जायंट्स के खिलाफ ही शनिवार के मुकाबले में बेहतरीन बल्लेबाजी करते हुए अब तक 300 का स्कोर पार कर लिया और पूरन से आगे निकल गए। इससे पहले टॉप पर लखनऊ के पूरन थे। लेकिन पूरन ज्यादा देर तक नंबर वन पर नहीं रह पाए। पूरन 288 रन के साथ दूसरे नंबर पर आ गए और तीसरे नंबर 265 रनों के साथ लखनऊ के ही मिशेल मार्श हैं। इस सूची में चौथे नंबर पर केकेआर के कप्तान अजिंक्य रहाणे और पांचवें नंबर पर गुजरात टाइटंस के जोस बटलर हैं।

जांघ में चोट के कारण फिलिप्स आईपीएल 2025 से हुए बाहर

हैदराबाद, 12 अप्रैल। गुजरात टाइटन्स (जीटी) के बल्लेबाज ग्लेन फिलिप्स छह अप्रैल को सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) के खिलाफ मैच के दौरान जांघ में गंभीर चोट लगने के कारण इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के शेष मैचों से बाहर हो गए हैं। आईपीएल बयान के अनुसार फिलिप्स उपचार के लिए न्यूजीलैंड लौट गए हैं। जीटी जो वर्तमान में पांच मैचों में से चार जीत के साथ अंक तालिका में शीर्ष पर है, ने अभी तक फिलिप्स के स्थान पर किसी अन्य खिलाड़ी के नाम की घोषणा नहीं की है। फिलिप्स को सनराइजर्स हैदराबाद पारी के पांचवें ओवर के बाद एक स्थानापन्न क्षेत्ररक्षक के रूप में थ्रो करने के प्रयास में उन्हें चोट लगी और गेंद छोड़ने के तुरंत बाद उन्हें अपनी जांघ पकड़ते हुए देखा गया। कुछ क्षण बाद वे टीम के सहायक कर्मचारियों की सहायता से लंगड़ाते हुए मैदान से बाहर चले गए थे।

अर्जुन फ्री स्टाइल शतरंज ग्रैंड स्लैम में नेपोमनियाचची से हारे

नई दिल्ली, 12 अप्रैल। दुनिया के चौथे नंबर के खिलाड़ी अर्जुन एरिगैसी को यहां चल रहे फ्रीस्टाइल शतरंज ग्रैंड स्लैम में पांचवें से नौवें स्थान के टाईब्रेक के शुरुआती गेम में इयान नेपोमनियाचची ने हरा दिया। जर्मनी के युवा ग्रैंडमास्टर विन्सेंट कीमर ने पहले दौर के टाईब्रेकर में नेपोमनियाचची को हराकर सराहनीय प्रदर्शन किया। इस साल की शुरुआत में जर्मनी में आयोजित पहले ग्रैंड स्लैम के विजेता कीमर ने अमेरिकी स्टार हिकारू नाकामुरा को काले मोहरों से ड्रॉ पर रोककर प्रभावित करना जारी रखा। भारत की उम्मीदें क्वार्टर फाइनल में खत्म हो गईं थीं। लेकिन अर्जुन ने नेपोमनियाचची के खिलाफ कुछ अच्छी चाल चलीं। लेकिन रूस का खिलाड़ी काफी संयमित होकर खेला। मैग्नस कार्लसन को अमेरिकी फैबियानो कारुआना ने ड्रॉ पर रोका जबकि नाकामुरा ने कीमर के साथ अंक बांटे।

राजस्थान अंडर-14 प्रशिक्षण शिविर आगामी 13 से 16 तक

जयपुर, 12 अप्रैल। आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीपबिहाणी के अनुसार राजस्थान क्रिकेट संघ द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय अंडर 14 चैलेंजर ट्रॉफी में शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाडियों का चयन आरसीए जूनियर चयन कमेटी ने आगामी 13 से 16 अप्रैल 2025 को जयपुर में आयोजित होने वाले अंडर 14 प्रशिक्षण शिविर आयोजित करेगा।

राजस्थान रॉयल और आरसीबी के बीच मैच आज : जयपुर में गूंजेगा 'हल्ला बोल'

आईपीएल 2025 के 18वें सीजन का 28वां मुकाबला जयपुर के सवाई मानसिंह स्टेडियम में रविवार 13 अप्रैल को दोपहर 3.30 बजे से शुरू होगा। इस स्टेडियम में ये इस सीजन का पहला मैच है, जिसमें मेजबान राजस्थान रॉयल्स का सामना रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु से होगा। राजस्थान रॉयल्स की अगुवाई जहां संजू सैमसन करेंगे तो वहीं, आरसीबी की कमान रजत पाटीदार के हाथ में होगी। आईपीएल में राजस्थान रॉयल्स और रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के हेड टू हेड रिकॉर्ड की बात करें अब तक दोनों का सामना कुल 31 बार हुआ है। इसमें से राजस्थान रॉयल्स ने 14 मैचों में जीत दर्ज की है तो वहीं रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु ने 15 मुकाबले अपने नाम किए हैं। जबकि दो मैच बेनतीजा रहे हैं। इस तरह आरसीबी सिर्फ एक मैच ही ज्यादा जीती है। इसका मतलब है कि दोनों के बीच इस बार भी कांटे की टक्कर देखने को मिल सकती है।

टूर्नामेंट में अपनी पकड़ मजबूत करने में जुटे : संजू

जयपुर में इंडियन प्रीमियर लीग के पहले मैच का काउंट डाउन शुरू हो गया है। संडे को राजस्थान रॉयल्स अपने होम ग्राउंड पर पहला मैच रॉयल चैलेंजर बेंगलुरु के खिलाफ खेलेगी। इससे पहले राजस्थान रॉयल्स के कैप्टन संजू सैमसन और रॉयल चैलेंजर बेंगलुरु के कैप्टन रजत पाटीदार ने टीम और आईपीएल से जुड़े अनुभव और भविष्य की तैयारियों को साझा किया। वैभव सूर्यवंशी को प्लेइंग इलेवन में कब शामिल किया जाएगा। इस सवाल पर जवाब देते हुए संजू सैमसन ने कहा कि राजस्थान रॉयल्स के सभी खिलाड़ियों को प्लेइंग इलेवन में खिलाने के लिए ही टीम में सिलेक्ट किया गया है। जब भी टीम कॉम्बिनेशन के हिसाब से उन्हें प्लेइंग 11 में शामिल करने का मौका होगा, वह जरूर खेलेंगे। फिलहाल सभी खिलाड़ी

जमकर प्रैक्टिस कर रहे हैं। फिलहाल टीम का कॉम्बिनेशन इस तरह बैठा हुआ है कि जो लोग खेल रहे हैं, वही खेल रहे हैं। लेकिन धीरे-धीरे थोड़ा चेंज आएगा। संजू ने कहा कि जयपुर हमारा होम ग्राउंड है। हमें यहां ग्राउंड से लेकर विकेट तक की जानकारी है। यहां की हमारी हिस्ट्री भी काफी पॉजिटिव रही है। टूर्नामेंट के शुरुआत में हमारी टीम जरूर मैच हारी है। लेकिन हम फिर से इस टूर्नामेंट में अपनी पकड़ को मजबूत करने की कोशिश में जुटे हैं। जिसके लिए यह मैच जीतना बेहद जरूरी है। रियान पराग को टीम की कैप्टेन्सी देने के सवाल पर संजू सैमसन ने कहा कि उनमें कैप्टेन्सी की क्षमता थी। इसलिए मैंने उन्हें टीम की कमान सौंपी थी। मुझे लगता है। उन्होंने बहुत अच्छे से अपनी जिम्मेदारी को निभाया टीम में जितने भी युवा खिलाड़ी थे। उन्होंने सभी के साथ अच्छे से व्यवहार किया, अच्छे से टीम मीटिंग की और ग्राउंड में भी काफी अच्छे फैसले लिए थे। संजू सैमसन ने कहा कि हमने पिछले मैच में चार फास्ट बॉलर प्लेइंग 11 में खिलाए थे। जिसकी वजह से मैच खत्म होने में कुछ ज्यादा वक्त लग गया था। क्योंकि उन लोगों ने कुछ एक्स्ट्रा भी डाले थे। लगभग एक ओवर ही एक्स्ट्रा डालना पड़ गया था। इस मैच में कोशिश करेंगे कि जितना जल्दी से जल्दी ओवर डाल सके और मैच खत्म कर सकें।

विराट की सलाह कारगर साबित होती है : रजत पाटीदार

रॉयल चैलेंजर बेंगलुरु के कैप्टन रजत पाटीदार ने कहा कि विराट कोहली ने इंडियन टीम के साथ ही रॉयल चैलेंजर बेंगलुरु की टीम को भी लीड किया है। मैदान में उनकी एडवाइस काफी कारगर साबित होती है। मैच के दौरान न सिर्फ मुझे उनसे सीखने को मिलता है। बल्कि, उनके एक्सपीरियंस और आइडिया से टीम को भी काफी हेल्प मिलती है। रजत ने विराट कोहली द्वारा कैप्टन को ओवरटेक करने के सवाल पर कहा कि ऐसा मुझे नहीं लगता है। टीम में जो भी फैसले होते हैं। वह एक दूसरे से बात करने के बाद ही होते हैं। ओवरटेक करने के सवाल पर कहा कि ऐसा मुझे नहीं लगता है। टीम में जो भी फैसले होते हैं। वह एक दूसरे से बात करने के बाद ही होते हैं।

रजत ने कहा कि जब भी मैं फील्डिंग कर रहा होता हूं। तब मुझे कैप्टेन्सी की जिम्मेदारी निभानी होती है। लेकिन जैसे ही मैं बैटिंग करने जाता हूं। तो कप्तान के प्रेशर को भूल जाता हूं। मैं सिर्फ बतौर बैट्समैन ही मैदान में अपनी टीम को जिताने की कोशिश करता हूं। क्योंकि मेरी स्ट्रेंथ बैटिंग ही है। इसलिए मैं उस वक्त सबसे ज्यादा फोकस उसी पर करता हूं। रजत ने कहा कि इंडियन प्रीमियर लीग के दौरान काफी नए रूल शामिल किए गए हैं। जो टूर्नामेंट को काफी एक्साइटिंग बना रहे हैं। इसे फैंस को भी काफी मजा आ रहा है। ज्यादा रन बनने लगे हैं। इम्पैक्ट प्लेयर के तौर पर आप टीम में एक बड़ा बदलाव कर सकते हैं। जो काफी अच्छा रूल है।

सनराइजर्स हैदराबाद ने पंजाब किंग्स को 8 विकेट से हराया

हैदराबाद, 12 अप्रैल। अभिषेक शर्मा (141)की रिकार्ड शतकीय और ट्रेविस हेड (66) की तूफानी पारियों दम पर सनराइजर्स हैदराबाद ने शनिवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 27वें मुकाबले में नौ गेंदे शेष रहते पंजाब किंग्स को आठ विकेट से हरा दिया। अभिषेक ने 40 गेंदों में आईपीएल में अपना पहला तूफानी शतक पूरा किया।

246 रनों के विशाल लक्ष्य का पीछा करने उतरी सनराइजर्स हैदराबाद के लिए अभिषेक शर्मा और ट्रेविस हेड की सलामी जोड़ी ने तूफानी बल्लेबाजी का प्रदर्शन करते हुए पहले विकेट लिए रिकार्ड 171 रनों की साझेदारी की। 13वें ओवर में यजुवेंद्र चहल ने ट्रेविस हेड को मैक्सवेल के हाथों कैच आउट कराकर पंजाब को पहली सफलता दिलाई।

17वें ओवर में अर्शदीप सिंह ने अभिषेक शर्मा को आउटकर पंजाब को दूसरी बड़ी सफलता दिलाई। हालांकि तब

तक अभिषेक अपना काम कर चुके थे। अभिषेक शर्मा ने 55 गेंदों में 14 चौके और 10 छक्के लगाते हुए (141) रनों की महत्वपूर्ण पारी खेली। सनराइजर्स हैदराबाद ने 18.3 ओवर में दो विकेट पर 247 रन बनाकर मुकाबला आठ विकेट से जीत लिया। हाइनरिक क्लासन (नाबाद 21) और इशान किशन ने (नाबाद नौ) रन बनाये। पंजाब किंग्स के लिए अर्शदीप सिंह और यजुवेंद्र चहल ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

इससे पहले आज यहां पंजाब किंग्स के कप्तान श्रेयस अय्यर ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया। पंजाब की प्रियांश आर्य और प्रभसिमरन सिंह की सलामी जोड़ी ने आतिशी बल्लेबाजी करते हुए पहले विकेट के लिए 66 रन जोड़े। चौथे ओवर में हर्षल पटेल ने प्रियांश आर्य को आउटकर इस साझेदारी को तोड़ा। प्रियांश आर्य ने 13 गेंदों मे दो चौके और चार छक्के लगाते हुए (36) रन बनाये। इसके बाद सातवें ओवर में इशान मलिंगा ने प्रभसिमरन सिंह को आउटकर हैदराबाद को दूसरी सफलता दिलाई।

प्रभसिमरन सिंह ने 23 गेंदों में सात चौके और एक छक्का लगाते हुए (42) रन बनाये। नेहाल वढेरा (27) को भी मलिंगा ने आउट किया। शशांक सिंह (दो) और ग्लेन मैक्सवेल (तीन) हर्षल का शिकार बने। कप्तान श्रेयस अय्यर ने 36 गेंदों में छह चौके और छह छक्के लगाते हुए (82) रनों की तूफानी पारी खेली। उन्हें 18वें ओवर में हर्षल ने आउट किया। पंजाब किंग्स ने निर्धारित 20 ओवरों में छह विकेट पर 245 रनों का विशाल स्कोर खड़ा किया। मार्कस स्टॉयनिस ने 11 गेंदों में चार छक्के और एक चौका लगाते हुए (नाबाद 34) रन बनाये। मार्कं यानसन (पांच) रन बनाकर नाबाद रहे। सनराइजर्स हैदराबाद की ओर से हर्षल पटेल ने चार विकेट लिये।

अंडर-19 नंद सिंह मेमोरियल क्रिकेट लीग 20 से

जयपुर, 12 अप्रैल। चंबल स्पोर्ट्स क्लब द्वारा आयोजित 17वी राज्य स्तरीय नंद सिंह मेमोरियल क्रिकेट लीग का आयोजन 20-04-2025 से संस्कार ग्राउंड पर किया जा रहा है। प्रतियोगिता में गत वर्ष की विजेता जयपुरिया क्रिकेट एकेडमी, उपविजेता नारायण क्रिकेट एकेडमी , संस्कार एकेडमी, राजीव गांधी क्रिकेट एकेडमी, जयपुरिया विद्यालय, जयपुर कोल्टस , आर्यन स्पोर्ट्स , राजस्थान यूथ, बगड़ क्रिकेट एकेडमी, सुराणा क्रिकेट एकेडमी,भदौरिया क्रिकेट , एकेडमी लक्ष्य क्रिकेट एकेडमी एवं सिग्नेचर क्रिकेट एकेडमी सहित 10 टीम भाग ले रही है । प्रतियोगिता के सभी मैच 50-50 ओवर के खेले जाएंगे। तथा प्रत्येक टीम को 4 मैच खेलने को मिलेंगे। विजेता टीम को रुपए 21000 नगद राशि व रनिंग ट्रॉफी तथा उपविजेता को 11000 नगद राशि पुरस्कार दिया जाएगा। प्रतियोगिता फीस जमा करने की अंतिम तिथि 17-04-2025 है।

रीयल जयपुर फुटबाल क्लब ने राजस्थान राइजिंग फुटबाल क्लब को 3-0 से हराया

जयपुर, 12 अप्रैल। ब्रदर्स यूनाइटेड फुटबॉल क्लब ग्राउंड गाड़ोता और रॉयल फुटबॉल क्लब ग्राउंड में मैच खेले गए राजस्थान फुटबॉल संघ के सचिव श्री दिलीप सिंह शेखावत ने बताया कि आज के दिन 3 मैच खेले गए जिसमें सभी टीमों ने उत्कर्ष प्रदर्शन किया। सभी 110 मैचों को होम अवे के सिद्धांत से खेले जाएंगे। अभी तक 16 मैच खेले जा चुके है। आज रॉयल फुटबाल क्लब के मैदान में दो मैच खेले गए और एक मैच ब्रदर्स यूनाइटेड फुटबॉल क्लब में खेला गया

प्रथम मैच : रॉयल फुटबॉल क्लब और जिंक फुटबाल अकादमी उदयपुर के बीच खेला गए रोमांच भरे मैच में दोनों ही टीमों ने आक्रामक खेल खेला पहला हॉफ में दोनों टीमें 1-1 से बराबरी पर रही दूसरे हॉफ में रॉयल टीम ने 2-1 से बढ़त बनाई मैच के आखिरी मिनट में जिंक ने गोल करके मैच को 2-2 से बराबरी पर ला दिया ।

मैच राजस्थान राइजिंग फुटबाल क्लब और रीयल जयपुर फुटबाल क्लब के बीच खेला गया रीयल जयपुर क्लब ने मैच 3-0 से जीता।

आज ब्रदर्स यूनाइटेड फुटबॉल क्लब ग्राउंड गाड़ोता के मैदान में खेले गए मैच

तीसरा मैच : में ब्रदर्स यूनाइटेड फुटबॉल क्लब और ए एस ल फुटबाल क्लब के बीच खेले गए मैच में ब्रदर्स यूनाइटेड ने मैच में 3-0 से जीता। आगामी फुटबाल लीग के मैच 14 अप्रैल को खेले जाएंगे।

मनीष होंगे आईपीएल 2025 के जयपुर वेन्यू मीडिया मैनेजर

जयपुर, 12 अप्रैल। जयपुर में देश विदेश के सबसे लोकप्रिय व प्रतिष्ठित आईपीएल लीग के जयपुर में बीसीसीआई, राजस्थान सरकार, क्रीड़ा परिषद् व राजस्थान रॉयल्स की संयुक्त मेजबानी में आयोजित होने वाले राजस्थान रॉयल्स के होम ग्राउंड मैचों के लिए राजस्थान राज्य क्रीड़ा परिषद ने मनीष शर्मा को वेन्यू मीडिया मैनेजर नियुक्त किया है। आईपीएल 2025 के जयपुर में आयोजित होने वाले मैचों के समस्त मीडिया कार्यों व व्यवस्थाओं को वेन्यू मीडिया मैनेजर मनीष शर्मा क्रीड़ा परिषद के जनसम्पर्क अधिकारी तेजराज सिंह व कलीम खान , सहायक प्रशासनिक अधिकारी, क्रीड़ा परिषद के सहयोग से सम्पादित करेंगे।

गुजरात टाइटंस को छह विकेट से हराकर लखनऊ सुपर जायंट्स ने लगातार तीसरी जीत दर्ज की

लखनऊ, 12 अप्रैल, निकोलस पूरन (61) और एडन मारक्रम (58) की शानदार पारियों की बदौलत लखनऊ सुपर जायंट्स ने शनिवार को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2025 के 26वें मुकाबले में गुजरात टाइटंस को तीन गेंदे शेष रहते विकेट छह से हरा दिया। लखनऊ सुपर जायंट्स की छह मैचों में यह लगातार तीसरी जीत है। 181 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए एडन मारक्रम और कप्तान ऋषभ पंत की सलामी जोड़ी ने अच्छी शुरुआत करते हुए पहले विकेट के लिए 65 रन जोड़े।

सातवें ओवर में प्रसिद्ध कृष्णा ने ऋषभ पंत (21) को आउट कर इस साझेदारी को तोड़ा। इसके बाद बल्लेबाजी करने आयी निकोलस पूरन ने मोर्चा संभाला। मारक्रम और पूरन की जोड़ी ने दूसरे विकेट लिये 58 रन जोड़े। 12वें ओवर में प्रसिद्ध कृष्णा ने मारक्रम को आउट कर इस साझेदारी का अंत किया। मारक्रम ने 31 गेंदों में नौ चौके और एक छक्का लगाते हुए (58) रन बनाये। 16वें ओवर राशिद खान ने निकोलस पूरन को आउट किया।

पूरन ने 34 गेंदों में एक चौका और सात छक्कों की तूफानी पारी खेलते हुए (61) रन बनाये। चौथे विकेट के रूप में डेविड मिलर (सात) को वॉशिंगटन सुदंर ने बोल्ड आउट किया।

लखनऊ सुपर जायंट्स ने 19.3 ओवर में चार विकेट पर 186 रन बनाकर मुकाबला छह विकेट से जीत लिया। आयुष बडोनी 20 गेंदों में 28 रन बनाकर नाबाद रहे। अब्दुल समद (दो) रन बनाकर नाबाद रहे। गुजराज टाइटंस के लिए प्रसिद्ध कृष्णा ने दो विकेट लिये। राशिद खान और वॉशिंगटन सुंदर ने एक-एक बल्लेबाज को आउट किया।

जयपुर की ओजस्विनी सारस्वत ने छठा राष्ट्रीय खिताब जीता

जयपुर, 12 अप्रैल। जयपुर की युवा गोल्फ प्रतिभा, ओजस्विनी सारस्वत ने नए सीजन की शानदार शुरुआत करते हुए अहमदाबाद के केन्सविले गोल्फ कोर्स में अपना छठा राष्ट्रीय खिताब हासिल किया है। उन्होंने पहले दिन से ही अपनी बढ़त बनाए रखी और अपने असाधारण कौशल और दृढ़ संकल्प का प्रदर्शन करते हुए आरामदायक अंतर से जीत हासिल की। गौरतलब है कि ओजस्विनी जयपुर के रामबाग गोल्फ क्लब की सदस्य हैं, जहां वह नियमित रूप से अपने कौशल को निखारने के लिए अभ्यास करती हैं।

दीपक की घातक गेंदबाजी से स्टार क्रिकेट एकेडमी की एकतरफा जीत

जयपुर, 12 अप्रैल। यूनियन क्रिकेट क्लब द्वारा आयोजित 27 वीं नवीन-नफीस स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता में आज डा. सोनी क्रिकेट स्टेडियम पर खेले गये पूल डी के मैच में दीपक खरतला 20 रन पर 6 विकेट की घातक गेंदबाजी तथा वरूण गुप्ता 59 रन की अर्धशतकीय पारी की बदौलत स्टार क्रिकेट एकेडमी ने कियान क्रिकेट एकेडमी को 129 रन से हराकर 2 अंक अर्जित किये। टॉस जीतकर स्टार एकेडमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुये वरूण गुप्ता 59 रन, ऋत्विक चावला 38 रन, विजय 32 रन, ऋतिक सारण 36 रन, अमन सिंह 16 रन नाबाद की बदौलत निर्धारित 20 ओवर में 5 विकेट खोकर 210 रन बनाये। गेंदबाजी में कियान एकेडमी की ओर से अक्षय पुरोहित 53 रन पर 2 विकेट, ऋषभ फौजदार 24 रन पर 2 विकेट, लवित गुप्ता 15 रन पर 1 विकेट लेकर सफल गेंदबाज रहे। जवाबी पारी में दीपक खरतला 20 रन पर 6 विकेट तथा अर्थव सिंह 21 रन पर 3 विकेट की घातक गेंदबाजी के समक्ष वीरेन्द्र चौधरी 21 रन, ऋषभ फौजदार 17 रन, मानव रोघा 15 रन व निशांत नईवाल 12 रन को छोड़कर कियान एकेडमी का कोई भी बल्लेबाज नही टिक सका और पूरी टीम 15.2 ओवर में 81 रनो पर सिमट गयी। इस मैच का मैन ऑफ दा मैच दीपक खरतला 20 रन पर 6 विकेट स्टार क्रिकेट एकेडमी रहे।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने हनुमानजी की पूजा-अर्चना की

जयपुर, 12 अप्रेल। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने शनिवार को हनुमान जयन्ती के अवसर पर गोविन्दपुरी, स्वेज फार्म स्थित श्री सिद्धेश्वर हनुमान मंदिर में सिद्धेश्वर हनुमानजी के दर्शन कर विधिवत् पूजा-अर्चना की तथा

- हनुमान जयंती के अवसर पर उन्होंने स्वेज फार्म स्थित श्री सिद्धेश्वर हनुमान मंदिर में प्रदेश की सुख-समृद्धि के लिए कामना की।

प्रदेश की सुख समृद्धि एवं आमजन के कल्याण की कामना की। उन्होंने मंदिर परिसर में श्री राधा-कृष्ण विग्रह के दर्शन भी किए। इस अवसर पर विधायक पुष्पेन्द्र सिंह, मंदिर महन्त अवधेशाचार्य महाराज सहित बड़ी संख्या में भक्तगण उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने हनुमान जयंती के अवसर पर गोविन्दपुरी, स्वेज फार्म में सिद्धेश्वर हनुमान मंदिर में पूजा अर्चना की। इस दौरान उन्होंने मंदिर परिसर में श्री राधा-कृष्ण विग्रह के दर्शन भी किए।

देर शाम बारिश ने जयपुर को गर्मी से थोड़ी राहत दी

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर, 12 अप्रैल। पश्चिमी विक्षोभ के चलते राजस्थान के मौसम में बदलाव आया है। शुक्रवार रात के बाद शनिवार शाम को भी मेघ गर्जन के साथ हल्की बारिश हुई। इस बारिश ने गर्मी से हाल-बेहाल हो रहे लोगों को थोड़ी राहत दी है। मौसम विभाग ने भी जयपुर, भरतपुर, अजमेर और कोटा संभाग में कुछ जगहों पर तेज मेघगर्जन और आंधी के साथ बारिश होने तथा जोधपुर व बीकानेर संभाग में भी छुटपुट स्थानों हल्की बारिश की संभावना जताई थी।

गौरतलब है कि इस बार अप्रैल माह की शुरूआत के साथ ही प्रदेश में भीषण गर्मी का कहर बढ़ गया है, तापमान प्रतिदिन 40-41 डिग्री से ज्यादा दर्ज हो रहा है। पिछले करीब एक सप्ताह में प्रदेश के तापमान में अचानक आये बदलाव के कारण लोगों में चिंताजनक माहौल बना हुआ था। इसी बीच पिछले

- मौसम विभाग ने जयपुर, भरतपुर, अजमेर व कोटा संभाग में आँधी व बारिश की संभावना जताई है।

2-3 दिनों से तेज अंधड़ के साथ मौसम में बदलाव और बारिश के आसार बन रहे थे। शुक्रवार रात को और कुछ जगहों पर शनिवार को हल्की बूंदाबांदी हुई।

मौसम विभाग ने 13 अप्रैल से ज्यादातर हिस्सों में मौसम मुख्यत: शुष्क रहने और तापमान में 2-3 डिग्री बढ़ोतरी होने की संभावना जताई है। इसके साथ ही 14-15 अप्रैल से दक्षिण-पश्चिमी राजस्थान में फिर से अधिकतम तापमान 45 डिग्री दर्ज होने के साथ ही, हीटवेव की चेतावनी भी दी है।

तहव्वुर के प्रत्यर्पण के श्रेय की होड़ पर कांग्रेस हमलावर

नयी दिल्ली, 12 अप्रैल। कांग्रेस ने कहा है कि तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण का श्रेय लेने की होड़ में शामिल लोगों को यह भी बताना चाहिए कि दाऊद इब्राहिम तथा अन्य आतंकवादियों का प्रत्यर्पण नहीं हो पाने का जिम्मेदार कौन है।

पार्टी ने कहा कि भले ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और उनकी सरकार को

- कांग्रेस प्रवक्ता ने पूछा, तहव्वुर के प्रत्यर्पण का श्रेय लेने वाले क्या दाऊद, हैडली कोलमैन और विजय माल्या के प्रत्यर्पण में मिली असफलता का भी श्रेय लेंगे।

तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण का श्रेय दिया जा रहा है और श्रेय लेने की होड़ मची है, लेकिन सच यह है कि यह लंबी प्रक्रिया का हिस्सा है और यू.पी.ए. सरकार ने ना केवल इसकी शुरुआत की थी बल्कि इसमें तेजी भी ला दी थी। अब मोदी को इसका श्रेय देने वालों को यह भी बताना चाहिए कि दाऊद इब्राहिम, डेविड हैडली, विजय माल्या आदि का प्रत्यर्पण नहीं हो पाने की जिम्मेदारी किसे दी जानी चाहिए।

कांग्रेस संचार विभाग के प्रमुख पवन खेड़ा ने शनिवार को यहां एक बयान में कहा, आज एक होड़ मची है कि किसी भी तरीक़े से तहव्वुर राणा के प्रत्यर्पण का श्रेय नरेन्द्र मोदी और सिर्फ़ नरेन्द्र मोदी को मिले। जबकि, सच यह है कि यह प्रत्यर्पण हमारी एजेंसियों के 15 वर्षों की मेहनत का परिणाम है।

टैरिफ पर ट्रंप ने एक और यू टर्न लिया

ट्रंप ने मोबाइल फोन, कम्प्यूटर और चिप्स को ''रैसिप्रोकल टैरिफ'' से छूट दी है

वॉशिंगटन, 12 अप्रैल। अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप ने टैरिफ को लेकर शुक्रवार को बड़ा फैसला लेते हुए एक और यू टर्न लिया।

ट्रंप ने स्मार्टफोन, कंप्यूटर, चिप्स आदि इलेक्ट्रॉनिक्स को रेसिप्रोकल टैरिफ से छूट दी है। इससे पहले वे टैरिफ नीति के क्रियान्वयन को 90 दिन आगे सरका चुके हैं। इस फैसले से अमेरिकी लोगों को राहत मिलेगी क्योंकि इन चीजों की कीमतें अब नहीं बढ़ेंगी। इसके अलावा इस फैसले से ऐपल और सैमसंग इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनी जैसी बड़ी इलेक्ट्रॉनिक्स कंपनियों को फायदा हो सकता है।

अमेरिका के कस्टम्स और बॉर्डर प्रोटेक्शन ने शुक्रवार देर रात कुछ चीजों को टैरिफ से छूट देने को लेकर एक नोटिस जारी किया। इसके मुताबिक, मोबाइल फोन, कंप्यूटर जैसे इलेक्ट्रॉनिक सामान को टैरिफ से छूट

- इसके साथ ही सैमिकंडक्टर बनाने के काम आने वाली मशीनों को भी छूट दी है। इससे ताइवान सैमिकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी जैसी बड़ी कम्पनियों को लाभ होगा।

दी गई है। इसका मतलब यह है कि ट्रंप की ओर से चीन पर लगाए गए 125 फीसदी के टैरिफ और बाकी देशों पर लगाए गए 10 फीसदी के टैरिफ से अब कुछ इलेक्ट्रॉनिक सामान बाहर हो जाएंगे।

छूट जिन चीजों पर लागू होगी, उनमें स्मार्टफोन, लैपटॉप, हार्ड ड्राइव, कंप्यूटर प्रोसेसर और मेमोरी चिप्स शामिल हैं। ये सारी चीजें आमतौर पर अमेरिका में नहीं बनतीं। अगर इन्हें अमेरिका में बनाना शुरू भी किया जाए, तो उसमें कई साल लग सकते हैं। इसके अलावा ट्रंप के नए टैरिफ से उन मशीनों को भी छूट दी गई है जो सेमीकंडक्टर बनाने के काम में आती हैं। इस फैसले से ताइवान सेमीकंडक्टर मैन्युफैक्चरिंग कंपनी जैसी कंपनियों को फायदा होगा, जो अमेरिका में बड़ा निवेश कर रही हैं। इससे चिप बनाने वाली दूसरी कंपनियों को भी राहत मिलेगी।

रेसिप्रोकल टैरिफ पर ट्रंप प्रशासन का यह पहला यू-टर्न नहीं है। इससे पहले ट्रंप ने 9 अप्रैल को एक बड़ा ऐलान करते हुए 90 दिनों के लिए भारत समेत दुनिया के ज्यादातर देशों पर लगाए गए टैरिफ को रोकने की घोषणा की थी। इन 90 दिनों के दौरान उन देशों पर 10 फीसदी ही रेसिप्रोकल टैरिफ लगेगा।

दिल्ली में युवा कांग्रेस ने महंगाई के खिलाफ प्रदर्शन किया

नयी दिल्ली, 12 अप्रैल। युवा कांग्रेस ने पेट्रोल, डीजल और रसोई गैस की कीमतों में बढ़ोतरी के खिलाफ शनिवार को यहां विरोध प्रदर्शन कर सरकार से सवाल किया कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में कीमतें गिर रही हैं तो देश की जनता को क्यों लूटा जा रहा है।

युवा कांग्रेस के अध्यक्ष उदय भानु चिब ने प्रदर्शनकारियों को संबोधित करते हुए कहा कि आंकड़े बताते हैं कि देश में 100 करोड़ लोग आर्थिक तंगी से गुजर रहे हैं और हालात बद से बदतर

- युवक कांग्रेस का प्रदर्शन पैट्रोल, डीज़ल व रसोई गैस के दाम बढ़ाने के खिलाफ था।

होने वाले हैं। जनता रो-रो कर जिए या महंगाई में दबकर मर जाए, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी को इन सब से फर्क नहीं पड़ता। वे सिर्फ यही चाहते हैं कि उनके दोस्तों की तिजोरी लबालब भरी रहे।

उन्होंने कहा, मई 2014 के मुक़ाबले अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल की क़ीमत में 41 प्रतिशत की गिरावट आई है, पर लुटेरी मोदी सरकार ने पेट्रोल-डीज़ल के दाम कम करने के बजाय, 2-2 रुपये बढ़ा दिये हैं।

लखनऊ में सरकारी जमीन पर अम्बेडकर की मूर्ति लगाने से हुआ विवाद

मूर्ति हटाने की अपील पर पुलिस पर पथराव किया लोगों ने

लखनऊ, 12 अप्रैल। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में बाबा साहब डॉ. भीमराव अंबेडकर की मूर्ति को सरकारी जमीन पर रखने को लेकर विवाद हो गया।

बख्शी का तालाब इलाके के महिंगवा थाना क्षेत्र में अंबेडकर की मूर्ति को लेकर बड़ी संख्या में ग्रामीण पुलिस से भिड़ गए।

इस दौरान ग्रामीणों ने पुलिस पर पथराव कर दिया। इसमें कई पुलिसकर्मी घायल हुए हैं। मौके पर मची अफरातफरी के दौरान कुछ महिलाएं भी बेसुध हो गईं। मौके पर तनाव की स्थिति के मद्देनजर भारी संख्या में पुलिसकर्मियों की तैनाती की गई है।

जानकारी के अनुसार, लखनऊ के खंतरी गांव में बिना अनुमति के ग्राम समाज की जमीन पर देर रात

- लखनऊ के खंतरी गांव में ग्राम समाज की जमीन पर देर रात अम्बेडकर की मूर्ति रख दी गई, जिस पर पुलिस ने समझाया और मूर्ति हटाने को कहा तो लोग भड़क गए पुलिस पर पथराव कर दिया।

अंबेडकर की मूर्ति रख दी गई। इसके बाद पुलिस ने लोगों की समझाइश की और उन्हें बताया कि बिना अनुमति के मूर्ति नहीं लगाई जा सकती है। हालांकि, पुलिस द्वारा मूर्ति हटाने की बात कहने से लोग नाराज हो गए और उन्होंने विरोध प्रदर्शन किया।

यह विरोध प्रदर्शन उग्र हो गया और कुछ लोगों ने पुलिस पर पथराव कर दिया।

इसमें कुछ पुलिसकर्मियों के सिर पर पत्थर लगे हैं, जिसके कारण वे घायल हो गए।

घायल पुलिसकर्मियों को अस्पताल ले जाया गया है। उग्र भीड़ को काबू में करने के लिए पुलिस ने आंसू गैस के गोले छोड़े। इस दौरान कुछ महिलाएं बेसुध हो गईं।

पथराव और पुलिस द्वारा आंसू गैस के गोले दागे जाने के दौरान मौके पर अफरातफरी का माहौल हो गया। मूर्ति को लेकर शिकायत करने वालों का दावा है कि जहां मूर्ति रखी गई है, वो जगह पहले बाजार और शादियों के आयोजन स्थल के रूप में उपयोग होती थी।

सुखबीर सिंह बादल शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष बने

अमृतसर, 12 अप्रैल। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय तेजा सिंह समुंद्री हॉल में शनिवार को आयोजित पार्टी की प्रतिनिधि बैठक के दौरान सुखबीर सिंह बादल को सर्वसम्मति से शिरोमणि अकाली दल (शिअद) का अध्यक्ष चुना गया। वह चौथी बार इस पद के लिए चुने गए हैं।

पार्टी अध्यक्ष के चुनाव के लिए सुखबीर बादल का नाम कार्यकारी अध्यक्ष बलविंदर सिंह भूंदर ने प्रस्तावित किया और महेशिंदर सिंह ग्रेवाल और परमजीत सिंह सरना ने समर्थन किया। प्रतिनिधियों ने सत श्री अकाल के साथ हाथ उठाकर अपनी सहमति दी।

पहली बार सुप्रीम...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

राज्यपाल को उन विधेयकों पर उचित कार्यवाही न करने की अनुमति देता हो, जो उनके पास उनकी सम्मति के लिये भेजे गये हों, तथा राज्यपाल ने सम्मति देने में विलम्ब किया हो तथा राज्य के कानून-निर्माण-तंत्र का रास्ता अवरुद्ध हो गया हो।''

यह कहते हुये कि राज्यपाल को मंत्रिपरिषद द्वारा दी गई सहायता एवं सलाह को मानना चाहिये, सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि राज्यपाल को यह छूट नहीं है कि वे उनके पास दोबारा भेजे गये विधेयक को राष्ट्रपति के विचारार्थ भेजने के लिये अपने पास आरिक्षत रूप में रखे रहें। ज्ञातव्य है कि राज्यपाल द्वारा लौटा दिये गये बिल को, विधानसभा में दोबारा राज्यपाल के पास भेज सकती है।

बैंच ने रजिस्ट्रार को निर्देश दिये कि इस निर्णय की एक-एक प्रति सभी उच्च न्यायालयों को तथा सभी राज्यों के राज्यपालों के प्रधान सचिवों को भेजी जाये।

सर्वोच्च न्यायालय ने यह भी कहा, ''राज्य मंत्रिपरिषद की सलाह के विपरीत सहमति को रोकनी की स्थिति में, राज्यपाल को, तीन महीने की अधिकतम अवधि के अन्दर ही, जरूरी संदेश के साथ संबंधित विधेयक लौटाना होगा।''

विधेयक को पारित/स्वीकृत रूप में तमिलनाडु के राज्यपाल के समक्ष पुन: प्रस्तुत करने के लिये, शीर्ष अदालत ने अनुच्छेद 142 के तहत, अपने विशिष्ट एवं पूर्ण अधिकार को काम में लिया था।

आगरा में करणी सेना ने किया शक्ति प्रदर्शन

करणी सेना ने राणा सांगा की जयंती पर विरोध प्रदर्शन किया और सपा सांसद रामजीलाल सुमन की जमकर आलोचना की

आगरा, 12 अप्रैल। उत्तर प्रदेश के आगरा में शनिवार को राणा सांगा की जयंती के मौके पर करणी सेना और अन्य राजपूत संगठनों ने भारी प्रदर्शन किया। गढ़ी रामी में आयोजित 'रक्त स्वाभिमान सम्मेलन' में एक लाख से अधिक लोग जुटे। प्रदर्शनकारियों के हाथों में तलवारें, लाठी और डंडे थे। यह प्रदर्शन समाजवादी पार्टी के सांसद रामजीलाल सुमन के राणा सांगा पर दिए गए विवादित बयान के विरोध में था।

हज़ारों की संख्या में राजपूत समाज के लोग आगरा की सड़कों पर उतरे, जो उत्तर प्रदेश, हरियाणा, राजस्थान और गुजरात से आए थे। पचास बीघा के पंडाल में हुए सम्मेलन में राणा सांगा की जयंती मनाई गई पर उनका मुख्य निशाना सपा सांसद रामजीलाल सुमन थे। पुलिस को पहले से इस विशाल भीड़

- प्रदर्शन में उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा और गुजरात के राजपूत मौजूद थे।

की जानकारी थी, इसलिए सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे। इस मौके पर करीब 4000 पुलिसकर्मी तैनात किए गए, जबकि 3000 जवान बैकअप में रखे गए। प्रदर्शन स्थल पर ड्रोन से निगरानी की जा रही थी, और 500 जगहों पर बैरिकेडिंग की गई थी। सपा सांसद रामजीलाल सुमन के घर को छावनी में बदल दिया गया, जहां 1000 पुलिसकर्मी तैनात थे और एक किलोमीटर का इलाका पूरी तरह सील कर दिया गया। जगह-जगह पुलिस का फ्लैग मार्च भी जारी रहा।

प्रदर्शन के दौरान माहौल तब तनावपूर्ण हो गया, जब पुलिसकर्मी सभा स्थल पर पहुंचे। इसे देखकर करणी सेना के कार्यकर्ता भड़क गए और उन्होंने पुलिस को घेर लिया। कुछ कार्यकर्ताओं ने तलवारें और डंडे लहराए, जिसके बाद हालात बिगड़ने की आशंका बढ़ गई। स्थिति को संभालने के लिए पुलिस को आयोजन स्थल से पीछे हटना पड़ा।

यह पूरा विवाद 21 मार्च को शुरू हुआ, जब रामजीलाल सुमन ने राज्यसभा में राणा सांगा के बारे में आपत्तिजनक टिप्पणी की थी।

सांसद रामजीलाल सुमन ने इस प्रदर्शन के बीच बयान दिया, 'मुझे किसी तरह का डर नहीं है। प्रशासन ने मेरी सुरक्षा की गारंटी ली है।' उन्होंने माफी मांगने से साफ इनकार कर दिया और कहा कि वह अपने बयान पर कायम हैं।

देव प्रयाग में वाहन नदी में गिरा, 5 की मौत

टिहरी गढ़ वाल/देहरादून, 12 अप्रैलाउत्तराखंड के टिहरी गढ़ वाल जनपद के देवप्रयाग क्षेत्र में शनिवार सुबह बिना नंबर का एक नया वाहन थार, अलकनंदा नदी में जा गिरा जिसमें एक ही परिवार के पांच लोगों की मौत हो गयी जबकि एक अन्य घायल है।

हादसे की सूचना पर पहुंची पुलिस और एसडीआरएफ ने वाहन सवार एक महिला को रेस्क्यू कर निकाल लिया जबकि काफी मेहनत उपरांत अन्य पांच के शव निकाले जा सके। मृतकों में एक दंपत्ति और दो किशोर एक ही परिवार के हैं, जो फरीदाबाद (हरियाणा) निवासी हैं। जबकि एक अन्य मृतक उनका रिश्तेदार है, और रुड़की (उत्तराखंड) का निवासी है।

पुलिस अधीक्षक (एसपी), टिहरी, आयुष अग्रवाल ने बताया कि आज पुलिच चौकी भल्लेगांव को स्थानीय व्यक्ति द्वारा बादशाह ढ ाबे से पीछे देवप्रयाग की तरफ नदी में एक वाहन गिरने की सूचना मिली। इस पर बिना समय गंवाए थानाध्यक्ष महिपाल सिंह रावत सहयोगी एसडीआरएफ व राहत बचाव उपकरण के साथ दुर्घटना स्थल पहुंचे।

'शराब की कालाबाजारी, 40 हजार करोड़ का कारोबार हुआ'

राजद नेता तेजस्वी प्रसाद ने यह भी कहा कि राज्य में शराबबंदी पूरी तरह से विफल हो गई है

पटना, 12 अप्रैल। बिहार विधानसभा में प्रतिपक्ष और राष्ट्रीय जनता पार्टी (राजद) के वरिष्ठ नेता तेजस्वी प्रसाद यादव ने आरोप लगाया है कि प्रदेश में शराब की काला बाजारी और अवैध कारोबार से 40 हजार करोड़ से अधिक का कारोबार किया जा रहा है।

बिहार प्रदेश राजद के राज्य कार्यालय के शनिवार को आयोजित संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते यादव ने कहा कि बिहार में शराबबंदी के संबंध में सर्वोच्च न्यायालय के कड़ी टिप्पणी से यह स्पष्ट होता है कि बिहार में किस तरह से शराबबंदी को विफल करने में पुलिस पदाधिकारी और सरकार में बैठे हुए लोग लगे हुए हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने

- तेजस्वी ने कहा, बड़े पुलिस अफसर सरकार में बैठे लोग शराब की तस्करी में लिप्त हैं।

कहा है कि पुलिस के वजह से ही शराब की तस्करी हो रही है और पुलिस का एक मात्र काम रह गया है भ्रष्टाचार, उगाही और कानून का दुरूपयोग करने वालो को संरक्षण देना।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि बिहार में शराब के ब्लैक मार्केटिंग और अवैध कारोबार से 40 हजार करोड़ से अधिक का कारोबार किया जा रहा है। बिहार में अब तक नौ लाख 36 हजार 949 मुकदमे दर्ज किये गये हैं और करीब 14 लाख 20 हजार 700 सौ से अधिक लोगों की गिरफ्तारियां हुई हैं, इनमें 99 प्रतिशत से भी अधिक गरीब, दलित, पिछड़े और अति पिछड़े वर्ग के लोग हैं। जबकि एक प्रतिशत गैर दलित, गैर पिछड़ा के लोग शामिल हैं। उन पर बिहार सरकार का सशक्त और प्रभावशाली कानून भी नहीं चलता है, जबकि पिछड़ा, अतिपिछड़ा, दलित, आदिवासी समाज के 99 प्रतिशत लोगों को तंग किया जा रहा है। बिहार में शराबबंदी के बाद 03 करोड़ 86 लाख 96 हजार 570 लीटर शराब बरामद की गई है। इसमें से दो करोड़ 10 लाख 64 हजार 5सौ 84 लीटर विदेशी शराब बरामद हुई है, जबकि 01 करोड़ लीटर से अधिक देशी शराब बरामद की गई है।

अदालती आदेश...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

का अवकाश स्वीकृति प्रार्थना पत्र पेश करने को कहा था, लेकिन अपीलार्थी ने उस पर कार्रवाई नहीं की। वहीं अपीलार्थी की सेवा पुस्तिका में इस अवधि की सेवा का सत्यापन नहीं है। ऐसे में उसे वेतन नहीं दिया गया। दोनों पक्षों को सुनने के बाद अधिकरण ने 6 जनवरी, 2023 को विभाग को आदेश जारी कर तीन माह में इस अवधि का बकाया वेतन का भुगतान करने को कहा था। इसके बावजूद भी विभाग की ओर से आदेश की पालना नहीं की गई। इस पर याचिकाकर्ता की ओर से अधिकरण में अवमानना याचिका दायर की गई, जिसे अधिकरण ने आगामी कार्रवाई के लिए हाईकोर्ट भेजा था।

वोट बैंक पर आधारित राजनीति अब भारी...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विपक्ष के नेता ने एक जनहित याचिका दायर की थी।

मालदा और मुर्शिदाबाद के मुस्लिम बहुल इलाकों में एक बार फिर वक्फ संशोधन विधेयक के विरोध में भीड़ हिंसक हो उठी। स्थिति इतनी बिगड़ गई कि प्रदर्शनकारियों ने राज्य पुलिस पर हमला किया और सरकारी संपत्तियों को नुकसान पहुँचाया।

पिछले हफ्ते भी कई पुलिस वाहनों को आग लगा दी गई और पुलिसकर्मियों पर हथियारबंद भीड़ ने हमला किया, जिसमें कुछ पुलिसकर्मी और प्रदर्शनकारी घायल हुए। बार-बार शांति बनाए रखने की अपीलें अनसुनी कर दी गईं।

यह स्थिति पिछले कुछ समय से सुलग रही थी और वक्फ विधेयक के विरोध में पिछले सप्ताह भी इसी तरह की घटनाएं हो चुकी थीं। तथापि, राज्य पुलिस ने, राजनीतिक आदेशों पर, इन घटनाओं को लेकर बेहद नरमी बरती।

नतीजा यह हुआ कि कानून तोड़ने वालों और हिंसा फैलाने वालों का हौसला बढ़ गया और वे और भी आक्रामक हो गए। वक्फ विधेयक को लेकर देश के अन्य हिस्सों में भी विरोध हुए हैं, लेकिन कहीं भी हालात इस कदर नहीं बिगड़े।

राज्य की पुलिस इन क्षेत्रों में फैली व्यापक हिंसा के लिए अब यह थ्योरी दे रही है कि अलग-अलग स्रोतों से भड़काने का काम हुआ है, जिनमें सोशल मीडिया की पोस्ट भी शामिल हैं। हालात इतने बेकाबू हो गए कि पुलिस को गोली चलानी पड़ी, जिसमें कुछ लोग घायल हुए हैं।

तथापि, अब राज्य पुलिस यह दावा कर रही है कि सभी लोग, इन सीमा क्षेत्रों में कानून व्यवस्था की निगरानी कर रहे बीएसएफ की गोलीबारी में घायल हुए हैं। बीएसएफ ने स्पष्ट रूप से इन आरोपों से इन्कार किया है और खुद को निर्दोष बताया है।

तथापि, और भी कई अफवाहें फैल रही हैं। इन सीमावर्ती क्षेत्रों में भारत और बाँग्लादेश के बीच बहुत आसानी से आवाजाही होती है। केन्द्रीय बलों और यहाँ तक कि केन्द्रीय गृह मंत्रालय द्वारा बार-बार की गई अपीलों के बावजूद, राज्य सरकार ने भारत-बाँग्लादेश सीमा पर 450 किलोमीटर तक बाड़ लगाने के लिए ज़मीन देने से इन्कार कर दिया है।

दोनों देशों के बीच बाकी की लंबी सीमा पर बाड़ लगाने का काम पूरा हो चुका है। इन जगहों पर जब केन्द्रीय एजेंसियों ने बाड़ लगाने की तैयारी शुरु की थी, वहीं, तृणमूल कांग्रेस और उसके नेताओं ने विरोध करके ऐसी स्थिति पैदा की कि बाड़ का काम पूरी तरह से रोकना पड़ा।

हुमायूँ कबीर जैसे तृणमूल नेता लगातार बाड़ लगाने के खिलाफ रहे हैं और उन्होंने स्थानीय लोगों को हिंसक प्रदर्शन के लिए भड़काया, जिसे राज्य प्रशासन ने नज़रअंदाज़ किया।

यहाँ तक कि हुमायूँ कबीर ने हिंदू अल्पसंख्यकों पर हथियारों से हमले की धमकी भी दी थी। गत वर्ष भारत सेवाश्रम संघ के एक स्थानीय आश्रम से निकली शोभायात्रा पर कबीर और उसके साथियों ने हमला करके उसे रोक दिया था।

दुर्भाग्यवश, अल्पसंख्यकों के वोट बैंक को हासिल करने के लिए ममता बनर्जी ने इन हमलों और हिंसा को नज़रअंदाज़ किया। इस बार भी, उपद्रवियों की आगजनी और तोड़फोड़ पर उन्होंने चुप्पी साधे रखी।

तथापि, पुलिस बलों और उनकी संपत्तियों पर हो रहे हमलों के कारण अब पुलिस प्रशासन को इस पर बयान देने के लिए मजबूर होना पड़ा है।

लगातार रियायतें देकर तथा कानून तोड़ने वालों की अनदेखी करके मुस्लिम वोटों को हासिल करने की ममता बनर्जी की रणनीति के कारण कानून तोड़ने वाले निडर हो गए हैं और उनका यह सोच हो गया है कि उन्हें कोई दंड नहीं दे सकता।

ई.डी. ने सोनिया ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

में 5000 करोड़ रु. कीमत की एजेएल की सम्पत्तियाँ अधिगृहित कर ली थीं। ईडी ने आज एक बयान में कहा कि वह तीन स्थानों पर नोटिस पहले ही चस्पा कर चुकी है। ये तीन स्थान हैं- दिल्ली में हैरल्ड हाउस, मुम्बई के बान्द्रा इलाके में स्थित कार्यालय परिसर तथा लखनऊ के बिशेश्वर नाथ रोड पर स्थित एजेएल भवन।

इन नोटिसों में दिल्ली और लखनऊ के परिसरों को खाली करने के लिये कहा गया है।

मुम्बई की बिल्डिंग के सम्बंध में, ईडी ने किराया ट्रान्सफर करने का विकल्प भी प्रस्तावित किया है।

यह कार्यवाही ''प्रिवैंशन ऑफ मनी लॉन्डरिंग एक्ट'' (पीएनएलए) की धारा 8 के नियम 5 (1) के तहत की गई है। यह नियम ईडी द्वारा अटैच्ड की गई सम्पत्तियों का कब्जा लेने की प्रक्रिया से सम्बंधित है।

'भाजपा व अन्नाद्रमुक...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

यह गठबंधन क्यों बना है। इसका क्या वैचारिक आधार है।

द्रमुक नेता अन्नाद्रमुक से सवाल कर रहे हैं कि अन्नाद्रमुक नीट, त्रिभाषा फॉर्मूला के जरिए हिंदी थोपने और वक्फ कानून पर भाजपा के खिलाफ है तो क्या वे बताएंगे कि उनके कथित न्यूनतम साझा कार्यक्रम में इनमें से कोई मुद्दा है।''

स्टालिन ने कहा कि अन्नाद्रमुक नेता पलानीस्वामी ने तमिलनाडु के आत्मसम्मान व अधिकारों को दिल्ली के समक्ष गिरवी रख दिया है। स्टालिन भ्रष्टाचार के मुद्दे पर अन्नाद्रमुक की सनक तथा द्रमुक को भ्रष्ट करार देने के मुद्दे पर भी कटाक्ष किया।

उन्होंने अमित शाह का नाम लेकर कहा, हास्यास्पद बात है कि वे भ्रष्टाचार की बात कर रहे हैं और द्रमुक के साथ मंच साझा कर रहे हैं। स्टालिन ने कहा कि जयललिता को दो बार भ्रष्टाचार के मुद्दे पर सत्ता गंवानी पड़ी थी। आय से अधिक संपत्ति के मसले पर उन्हें चार साल की जेल हुई थी, क्या अन्नाद्रमुक के साथ गठबंधन के लिए ''भ्रष्टाचार'' जैसे शब्द का इस्तेमाल किया जा सकता है।

लेकिन अन्नाद्रमुक के प्रवक्ता कोवाई सत्यम ने कहा कि गठबंधन बनने से द्रमुक को हार का डर सता रहा है। उन्होंने कहा, ''यह एक महान गठबंधन की शुरुआत है, जो 2026 में विधानसभा चुनाव के बाद अन्नाद्रमुक नेता ई. पलानीस्वामी के नेतृत्व में सरकार बनाएगा। हार की संभावना देखकर व गठबंधन का आधार पूछ रहे है। हमारे विचार अलग है, इसीलिए हम दो अलग-अलग दल हैं। पर, हमारा एक कॉमन मिनीमम प्रोग्राम है। दो मुद्दे है, जिन पर फोकस किया गया है, पहला है, लोकतंत्र के नाम पर वंशवाद। द्रमुक के शासन में यही हो रहा है। तमिल जनता के कल्याण के लिए द्रमुक को सत्ता से हटाना होगा।''

मार्डन मीडिया, बीकानेर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. 35214/79, जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय:-राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665, जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन: 226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908